सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 100, नई दिल्ली, गुरुवार 19 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 साइबर पुलिस स्टेशन ने यूएसडीटी निवेश धोखाधड़ी गिरोह का भंडाफोड़ किया
06 रील्स की मायावी दुनिया का धोखा
08 कोचिंग का क्रेडिट, स्कूल की गुमनामी: शिक्षकों के साथ यह अन्याय कब तक?

दिल्ली परिवहन निगम के अधिकारियों ने लगाया दिल्ली परिवहन निगम को करोड़ों रुपयों का चूना फिर भी दिल्ली सरकार और प्रशासन चुप, आखिर क्यों ?

संजय बाटला

जी हां, दिल्ली परिवहन विभाग जो पहले से ही मोटे घाटे में चल रहा है के आला अधिकारी खास तौर से जनरल मैनेजर एंड एम डी बिना सही निर्णय लिए राजस्व को लगवा रहे है बड़ा चूना।

आप जानते ही होंगे दिल्ली में जब कांग्रेस की सरकार थीं तभी डीटीसी के लिए बसे खरीदी थी जिन्हें 15 साल या तो पूरे हो गए या जल्द ही होने वाले है। यानी बसों की लाइफ या तो खत्म हो गई या खत्म होने वाली है और इन सभी बसों को स्क्रैप करवाने के लिए टैंडर प्रक्रिया से भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वाहन स्क्रैप डीलरो को स्क्रैप के लिए दिया जा रहा हैं।

अभी तक स्क्रैप में दी गई बसों के पूरे रिकार्ड की जांच करने से पता चला की जनरल मैनेजर डीटीसी और एमडी डीटीसी वाहन स्क्रैप करवाने के लिए जो निर्णय ले रहे हैं उससे डीटीसी को राजस्व में करोड़ों रुपए का नुकसान हो चुका है और विश्वस्त सूत्रों की माने तो आने वाला निर्णय तो एक ही बार में कम से कम 1 करोड़ 35 लाख के आस पास का चूना लगाएगा।

अब प्रश्न यह उठता है की आखिर यह बात जो आम जनता को दिख रही हैं यह दिल्ली के प्रशासक उपराज्यपाल दिल्ली, दिल्ली की मुख्यमंत्री, मंत्री परिवहन और चेयरमैन डीटीसी के अलावा लॉ विभाग दिल्ली और फाइनेंस विभाग दिल्ली को क्यों नहीं दिखाई दे रहा। यहां पर यह कहना उचित है की देखते और जानते हुए भी सब है चुप।

दिल्ली परिवहन विभाग ने जब भी टैंडर प्रक्रिया में 50 या 50 से कम बसों को स्क्रैप करने का टेंडर जारी किया है तो प्रति बस स्क्रैप मूल्य में डीटीसी को 30000 रुपए से ज्यादा की कीमत अधिक बसों की नीलाम से अधिक प्राप्त हुई है। जब भी टैंडर 200 या 200 से अधिक बसों के स्क्रैप का किया गया है तो प्रति बस की स्क्रैप मूल्य कम बसों के टेंडर में बहुत कम प्राप्त हुई पर उसके बावजूद बसों को स्क्रैप कर दिया गया।

कारण:-

अधिक बसों का टैंडर एक साथ करने पर भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वाहन स्क्रैप डीलरो में से कुछ गिने चुने स्क्रैप डीलर ही बोली लगाते हैं और कम कीमत पर बसे खरीद लेते है। जब की कम बसों के स्क्रैप टैंडर किया जाता हैं तो अनगिनत पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर बोली लगाते है और डीटीसी को इससे प्रति बस में 30000 रुपए से अधिक की कीमत राजस्व में प्रति वाहन स्क्रैप करने से अधिक प्राप्त होती है । जब बस की स्क्रैप कीमत अधिक आ सकती हैं तो जनरल मैनेजर डीटीसी और एमडी डीटीसी जान बुझ कर क्यों अधिक बसों का टैंडर निकाल कर सस्ते में बस को स्क्रैप कर घाटे में डूब रहे डीटीसी निगम को और घाटे में डाल रहे हैं।

अभी ताजा मामले में भी ऐसा ही हुआ है की दिल्ली परिवहन निगम के अधिकारियों द्वारा 318 बस को स्क्रैप करने के लिए टैंडर प्रक्रिया करी जिसमें अंतिम और उच्च बोली मात्र 367924 लगी जब की 50 बसों की स्क्रैप में निकले 4 टैंडरो में दिल्ली परिवहन निगम को प्रति बस स्क्रैप मूल्य 410000 प्राप्त हुआ था और 25 बसों के स्क्रैप टैंडर में प्रति बस स्क्रैप मूल्य 452000 प्राप्त हुआ था। *अब आप इस से समझ ही सकते हैं की बसों को स्क्रैप करने में अधिकारी कितना बड़ा झोल करके सरकार की आंखों में धूल झोंक रहे है पर क्यों मामला पूर्ण जांच का बनता है।

सवाल तो बड़ा है पर जवाब भी सिर्फ बड़े ही ले सकते है जो सब कुछ जानते हुए भी चुप हैं, आख़िर क्यों बड़ा सवाल।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी द्वारा महत्वपूर्ण घोषणा, जाने

संजय बाटला

नई दिल्ली। एक ऐतिहासिक पहल के तहत, 15 अगस्त 2025 से 3,000 की कीमत वाला FASTag आधारित वार्षिक पास शुरू किया जा है। यह पास सक्रिय होने की तिथि से एक वर्ष तक या 200 यात्राओं तक, जो भी पहले हो, वैध रहेगा।

यह पास केवल गैर-व्यावसायिक निजी वाहनों (कार, जीप, वैन आदि) के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया है और यह देशभर के राष्ट्रीय राजमार्गों पर निर्बाध यात्रा को संभव बनाएगा।

वार्षिक पास के सक्रियण/नवीनीकरण के लिए जल्द ही राजमार्ग यात्रा ऐप और एनएचएआई / एमओआरटीएच (NHAI / MORTH) की वेबसाइट्स पर एक अलग लिंक उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे प्रक्रिया सरल और सुगम होगी।

यह नीति 60 किलोमीटर के दायरे में स्थित टोल प्लाज़ाओं को लेकर लंबे समय से चली आ रहें कन्सर्न्स को अधोरेखित करेगी और एक ही सुलभ लेनदेन के माध्यम से टोल भुगतान को सहज बनाएगी।

इस नीति के लागू होने से प्रतीक्षा समय घटाना, भीड़ कम करना और टोल प्लाज़ाओं पर विवाद को समाप्त करना, वार्षिक पास नीति लाखों निजी वाहन चालकों के लिए तेज़, सुगम और बेहतर यात्रा अनुभव प्रदान करने में सहायक होगी।

दिल्ली परिवहन विभाग की स्क्रैप शाखा के अधिकारियों के कारण भारत सरकार, दिल्ली सरकार और जनता को लगवाया जा रहा रहा बड़ा चूना, फिर भी दिल्ली सरकार और प्रशासन चुप, आखिर क्यों ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने साथ जोड़कर जनता के वाहनों को नियमों ओर अपने द्वारा जारी एसओपी को ताक पर रख कर उठवा कर स्क्रैप करने के लिए सौंपने पर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं पर इन अधिकारियों को या तो किसी का डर नहीं है या इनके सिर पर किसी प्रभावशाली व्यक्ति का हाथ है। इनके खिलाफ भरपुर सबूत उपलब्ध होने के बाद भी कोई आला अधिकारी, मुख्य सचिव दिल्ली, दिल्ली सरकार या उपराज्यपाल ना तो कोई कार्यवाही कर रहा है और ना ही निष्पक्ष जांच के आदेश जारी कर रहा है।

जो शिकायतें अब तक उठ रही थी उससे जनता को चूना लग रहा था पर अब जो बाते सामने आ रही है उससे सीधे तौर पर भारत सरकार और दिल्ली सरकार के राजस्व को मोटा चूना लग रहा है। **क्या एक सरकारी अधिकारी की गलती से भारत सरकार और दिल्ली सरकार के राजस्व को चूना लगने को कानून की दृष्टी में माफ किया जा सकता है** बड़ा सवाल उठता है। चूना तो लग रहा है और वह भी सिर्फ़ दिल्ली परिवहन विभाग की स्क्रैप शाखा के अधिकारियों के कारण। पर सब कुछ देखते हुए भी आला अधिकारी क्यों हैं चुप यह एक बड़ा सवाल है।

आज आपको बताते है की कैसे परिवहन विभाग के स्क्रैप शाखा का अधिकारी अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो के साथ मिलकर भारत सरकार और दिल्ली सरकार के राजस्व को चूना लगा रहे हैं :-

सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी गैजेट नोटिफिकेशन का अंतर्गत किसी भी प्रवर्तन शाखा द्वारा जब्त वाहन जिसे स्क्रैप के लिए सुपुर्द किया जाता हैं उस वाहन के लिए जारी होने वाला सर्टिफिकेट आफ डिपोजिट (सीओडी) के प्रति भारत एवं राज्य सरकारों द्वारा घोषित नए वाहन की खरीद पर टैक्स में छूट नही दी जाएगी पर दिल्ली परिवहन विभाग के द्वारा जारी पत्र के अनुसार दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली नगर निगम ने उन्हीं वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने विभागीय शाखाओं में जोडकर जनता के वाहन अपनी ताक़त का प्रयोग कर उठवाकर स्क्रैप के लिए सुपुर्द करते रहे।

स्क्रैप के लिए वाहन स्क्रैप डीलरो को दिए गए वाहनों की परिवहन विभाग द्वारा जारी एसओपी के तहत वाहन का स्क्रैप मुल्य हर हालत में वाहन प्राप्त होने से 15 दिन के अन्दर वाहन मालिकों या विभाग में जमा कराना आवश्यक था पर परिवहन विभाग की स्क्रैप शाखा के अधिकारियों के कारण एक दो वाहन स्क्रैप डीलरो को छोड़कर किसी ने भी वाहन का स्क्रैप मुल्य ना तो वाहन मालिकों को और ना ही विभागों का दिए फ़िर भी उन्हीं को वाहन सुपुर्द करते रहे और उन वाहनो के सर्टिफिकेट आफ डिपोजिट (सीओडी) जो गैजेट नोटिफिकेशन के अनुसार छुट प्राप्त नही कर सकते के प्रति छूट प्राप्त करने वाले सर्टिफिकेट आफ डिपोजिट (सीओडी) जारी कर भारत एवं राज्य सरकार को करोड़ों रुपए का चूना लगवा दिया और आगे भी लगवा रहे हैं।

जनता के साथ भारत सरकार और दिल्ली सरकार को चूना लगवाने और आगे भी लगातार लगवाने वाले अधिकारियों को ऐसा करने का कोई डर ना था ना है और ऐसा ही रहा तो ना ही होगा क्योंकि आज की तारीख़ में परिवहन विभाग में डीटीओ आटो, डीटीओ हेडक्वार्टर और अब अधिकारी स्क्रैप शाखा के खिलाफ पुख्ता सबूत उपलब्ध होने की बाद भी कार्यवाही नहीं होना सबूत है की आला अधिकारी या कोई उचित स्तरीय व्यक्ति का हाथ इनके सिर पर है जो इन्हें ना सिर्फ विभाग से अपितु दिल्ली प्रशासन, दिल्ली सरकार, विजिलेंस शाखा, एंटीकरप्शन और पुलिस से साफ़ बचा कर रख रहा है।

इससे यह बात तो साफ़ है की सबूतों की उपलब्धता होने पर भी अगर कार्यवाही नहीं होती है तो आने वाले समय में ओर भी अधिकारी इसी तरह जनता, भारत सरकार और दिल्ली सरकार को चूना लगाते नजर आयेंगे ही आयेंगे क्योंकि कमाई भी और खतरा भी नहीं।

एनआईसी द्वारा परिवहन विभाग के डेटा की अनियंत्रित बिक्री के संबंध में तत्काल शिकायत - निष्क्रियता प्रणालीगत मिलीभगत का संकेत देती है

परिवहन विशेष न्यूज

मैं परिवहन से संबंधित संवेदनशील डेटा की बड़े पैमाने पर और अवैध बिक्री के बारे में औपचारिक रूप से गंभीर शिकायत दर्ज कराने के लिए लिख रहा हूँ, जिसे कथित तौर पर राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) द्वारा बनाए रखा और प्रबंधित किया जाता है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत डेटा के प्राथमिक संरक्षक के रूप में एनआईसी की भूमिका के बावजूद, यह जानकारी - जिसमें वाहन पंजीकरण और चालक लाइसेंस डेटा शामिल है - सार्वजनिक प्लेटफार्मों पर मामूली रकम के लिए खुलेआम बेची जा रही है।

इस मेल के साथ कई टेलीग्राम चैनलों के स्क्रीनशॉट भी हैं, जिनमें साफ तौर पर इस तरह के अवैध डेटा लेनदेन होते हुए दिखाई दे रहे हैं। ये चैनल आसानी से सुलभ हैं और व्यक्तियों और सिंडिकेट द्वारा बिना किसी निगरानी के व्यक्तिगत डेटा खरीदने और बेचने के लिए सक्रिय रूप से उपयोग किए जा रहे हैं।

इस तरह के डेटा उल्लंघन न केवल लाखों नागरिकों की निजता से समझौता करते हैं, बल्कि सार्वजनिक सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा पैदा करते हैं। इस डेटा का अपराधियों द्वारा धोखाधड़ी, पीछा करने, प्रतिरूपण और अन्य गैरकानूनी गतिविधियों के लिए शोषण किए जाने की खबरें बढ़ रही हैं।

इस मुद्दे को उजागर करने वाली कई शिकायतें और ईमेल पहले ही आपके विभाग सहित संबंधित विभागों को भेजे जा चुके हैं, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई है। भारी सबूतों के बावजूद लगातार निष्क्रियता संस्थागत मिलीभगत का स्पष्ट संकेत देती है, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों से लेकर सिस्टम के भीतर डेटा हैंडलर तक शामिल हैं।

यह स्थिति संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत निजता के अधिकार, जो एक मौलिक अधिकार है, का प्रत्यक्ष उल्लंघन है तथा सार्वजनिक संस्थाओं में नागरिकों के विश्वास को कमजोर करती है।

इसलिए, मैं तत्काल प्रभाव से निम्नलिखित मांग करता हूं:

1. परिवहन विभाग के डेटा की अवैध बिक्री और लीक की गहन, स्वतंत्र जांच।
2. जिम्मेदार व्यक्तियों की जवाबदेही और अभियोजन, चाहे उनका पद या संबद्धता कुछ भी हो।
3. इस डेटा को बेचने वाले टेलीग्राम चैनलों और अन्य प्लेटफार्मों पर तत्काल कार्रवाई की जाए।
4. नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा और भविष्य में उल्लंघन को रोकने के लिए उठाए जा रहे कदमों का सार्वजनिक प्रकटीकरण।

इस मामले में निष्क्रियता से केवल जनता का विश्वास खत्म होगा और नागरिकों को और अधिक नुकसान होगा। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि इस शिकायत को उतनी ही तत्परता से निपटाएं जितनी कि इसकी आवश्यकता है।

दिल्ली में पंजीकृत एवम् पंजीकरण करवाने वाले व्यवसायिक वाहन मालिकों के लिए अति विशेष सूचना

परिवहन विभाग द्वारा जारी किया गया सार्वजनिक नोटिस

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार कंप्यूटर शाखाः परिवहन विभाग
5/9, अंडर हिल रोड, दिल्ली-110054
फ1(486)/टीपीटी/सीबी/2025/075803379/2डदाप
दिनांकः16/06/2025
सार्वजनिक नोटिस

सभी संबंधित पक्षों को वाहन स्थान ट्रैकिंग प्रणाली (वीएलटीएस) एप्लिकेशन को अस्थायी रूप से बंद करने के लिए सूचित किया जाता है, क्योंकि एनआईसी के अनुसार राष्ट्रीय डेटा केंद्र (एनडीसी) से राष्ट्रीय सरकारी क्लाउड (एनजीसी) तक सिस्टम माइग्रेशन गतिविधि के बाद आवश्यक सिस्टम अपग्रेडेशन के कारण यह बंद करना आवश्यक है।

तदनुसार, इस आवश्यक उन्नयन को समायोजित करने के लिए, परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी ने तीन (03) दिनों के लिए समापन अवधि की इच्छा की है जो 19, 20 और 21 जून, 2025 है और इन तीन (03) दिनों के दौरान निम्नलिखित सेवाएं प्रभावित होंगी जो वीएलटीएस आवेदन के साथ पात्र हैं:

1. वाहन निरीक्षण इकाई (VIU) बुराड़ी और झुलजुल में वाहन फिटनेस जांच।
2. नए वाहन पंजीकरण प्रक्रियाएं जिनके लिए सभी पीएसवीएस (सार्वजनिक सेवा वाहन) के लिए लागू वीएलटीडी जांच की आवश्यकता होती है।
3. परमिट का नवीनीकरण

यह सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है।
(कृष्ण कांत चंद्रा) सीनियर सिस्टम एनालिस्ट

जिन वाहनों का फिटनेस प्रमाण पत्र समाप्त हो गया है या अगले 15 दिनों में समाप्त होने वाला है, उनके मालिक निम्नलिखित विवरण के साथ सुविधा केंद्र पर आवेदन कर सकते हैं:

1. वाहन पंजीकरण संख्या-
2. चेसिस नंबर (अंतिम छह डिमिट्स)

जारी सार्वजनिक नोटिस की कापी आपके लिए प्रस्तुत

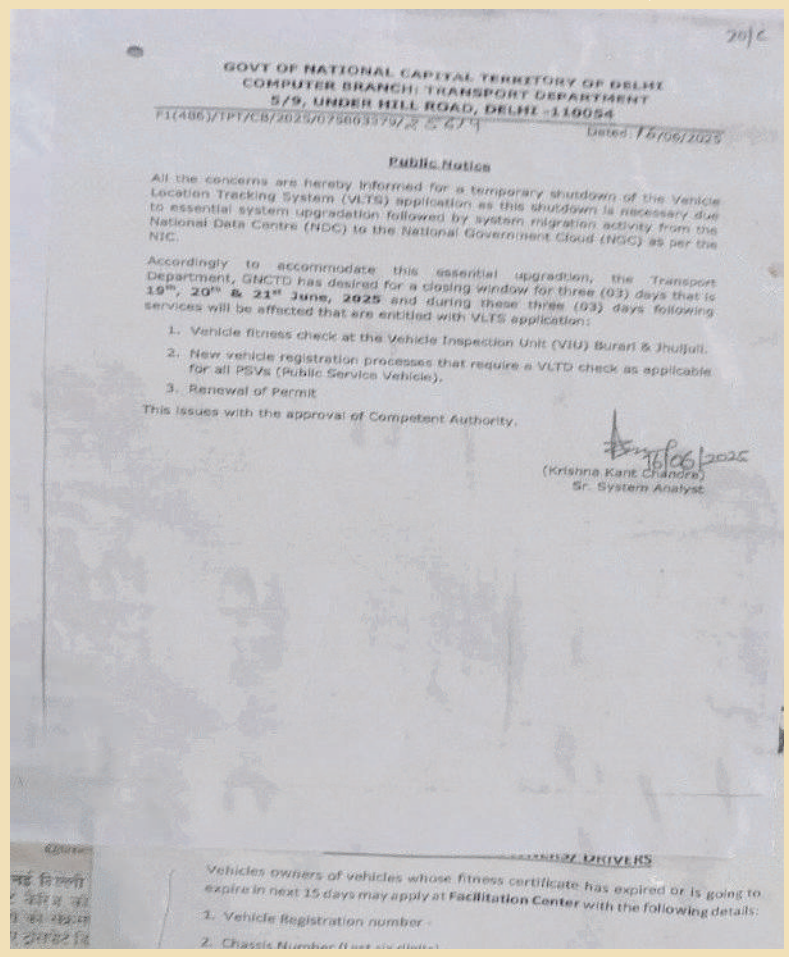

GOVT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
COMPUTER BRANCH: TRANSPORT DEPARTMENT
5/9, UNDER HILL ROAD, DELHI -110054
F1(486)/TPT/CB/2025/075803379/2 [illegible]
Dated: 16/06/2025

Public Notice

All the concerns are hereby informed for a temporary shutdown of the Vehicle Location Tracking System (VLTS) application as this shutdown is necessary due to essential system upgradation followed by system migration activity from the National Data Centre (NDC) to the National Government Cloud (NGC) as per the NIC.

Accordingly to accommodate this essential upgradtion, the Transport Department, GNCTD has desired for a closing window for three (03) days that is 19th, 20th & 21st June, 2025 and during these three (03) days following services will be affected that are entitled with VLTS application:

1. Vehicle fitness check at the Vehicle Inspection Unit (VIU) Burari & Jhuljuli.
2. New vehicle registration processes that require a VLTD check as applicable for all PSVs (Public Service Vehicle).
3. Renewal of Permit

This issues with the approval of Competent Authority.

16/06/2025
(Krishna Kant Chandra)
Sr. System Analyst

[illegible] DRIVERS

Vehicles owners of vehicles whose fitness certificate has expired or is going to expire in next 15 days may apply at **Facilitation Center** with the following details:

1. Vehicle Registration number
2. Chassis Number (last six digits)

जामुन के फायदे

जामुन को कभी भी दूध के साथ न लें,जबकि भोजन के बाद नमक लगा कर लेना अत्यंत गुणकारी है। रासायनिक गुण-जामुन का फल- शीतल, मधुर, रुचिकारक कसैला, रूक्ष, पौष्टिक कफ पित्त व अफारा नाशक तथा शरीर में रक्त की वृद्धि करता है। गुठली-फल तो फल जामुन की गुठली की गिरी में जम्बोलिन ग्लूकोसाइड पाया जाता है।जिसका प्रमुख लक्षण यह है कि यह तत्व स्टार्च को शर्करा में परिवर्तित होने से रोकता है।अतः मधुमेह या शुगर के रोगियों के लिए इसकी गुठलियोँ का चूर्ण अच्छा फायदा करता है।इसके अतिरिक्त क्लोरोफिल, एल्ब्यूमिन, गेलिक एसिड, रेजिन व चर्बी आदि अनेक बहुमूल्य पदार्थ पाए जाते हैं।इसमे लौह तत्व भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।यह लौह तत्व इतना सोम्य व गुणकारक होता है किइस से किसी प्रकार का नुकसान नही हो सकता अपितु यह लौह शरीर में लोहे की कमी को पूरा करने के साथ शरीर यकृत (जिगर) और प्लीहा (तिल्ली) आदि शरीर के महत्वपूर्ण अंगों पर लाभकारी परिणाम डालता है अतः शरीर में रक्त की प्रचुर मात्रा में बृद्धि होती है। बृक्ष की छाल- स्वाद में मधुर, कसैली, पाचक, रुक्ष, शरीर के मलों (दोषों) को उनके निकलने वाले मार्गों से ही निकालने वाली है यह रुचिकर पित्त दाह में तत्काल शान्तिकारक औषध है।सिरका- जामुन का सिरका पेट सम्बंधी रोगों के लिए लाभकारक है।

रोग और जामुन-

---

1 मधुमेहः- (अ) जामुन की गुठली का चूर्ण 5ग्रा.दिन में दो बार शहद से या जल के साथ लेते रहने से मूत्र में शक्कर की मात्रा कम हो जाती है।

(ब) जामुन की गुठली को सुखाकर उसका पाउडर बनाकर रख लें। नियमित रूप से आधा चम्मच की मात्रा में सुबह शाम पानी के साथ इसका सेवन करें। जामुन की छाल को सुखाकर उसे जलाएँ और राख बनाकर छान लें। फिर इसे बोतल में भरकर रख लें। इसके सेवन से सुबह शाम 60-65 मिली ग्राम की मात्रा में खाली पेट पानी के साथ इसके सेवन करने से डायबिटीज नियंत्रित रहता है।परहेज- चावल आलू शक्कर व मीठे पदार्थों का सेवन बन्द कर दें।जौ चने की रोटी, गाय का फीका दूध, मक्खन फल शाक,फूलशाक आदि का सेवन करें।

2 मोतीझरा :- जामुन के कोमल पत्ते, गुलदाउदी के फूल, काली मिर्च समान भाग लेकर जल के साथ पीस लें। मोतीझरा के रोगी को पिलाएं तुरन्त शान्ति मिलेगी। रोग भी दूर होगा।

3 रक्त प्रदरः- महिलाओं की व्याधि रक्तप्रदर में जामुन की गिरी का चूर्ण शक्कर में मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से रक्त प्रदर में लाभ मिलता है।

4 बार बार पेशाव जाना(बहुमूत्र):- जामुन की गिरी का बारीक चूर्ण इसी चूर्ण के बराबर काले तिल साफ करके मिला लें। 10-10 ग्रा.सुबह शाम दूध से लें बहुमूत्र दूर हो जाता है।

5 आवाज बैठनाः- यदि आपकी आवाज बैठ गई है या मोटी या भारीपन लिए हुए है और आप इससे छुटकारा पाना चाहते हैंतो आपको शहर में जामुन की गुठली का पाउडर मिलाकर लेना चाहिए। इससे आवाज का भारीपन दूर होता है साथ ही आवाज भी साफ हो जाएगी।

6 जामुन और आम की गुठलियों का 2-2 ग्राम पाउडर छाछ केसाथ दिन में तीन बार लेने से पेट दर्द दूर होता है।

7 फोड़े फुंसीः- जामुन की गुठली को पानी के साथ घिसकर चेहरे पर लेप करने से मुंहासे और फुंसियां दूर होती हैं और चेहरे का सौंदर्य निखरता है।

8 आग से जले के घाव मेंः- आग से जलने पर घाव बन गया हो तो जामुन की छाल की राख नारियल तेल के साथ मिलाकर घाव लगाने से लाभ होता है।

9 मंजनः-जामुन की छाल को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर कपडे से छान लें। इसका प्रयोग मंजन के रूप में करें। इससे दांत मजबूत होते हैं,

साथ ही पायरिया और दांत दर्द से भी छुटकारा मिलता है।

10 उल्टियों मेंः- जामुन की छाल को छाया में सुखाकर उसकी भस्म शहद में मिला कर चाटने से उल्टियों में लाभहोता है।

तिथि के अनुसार करें माँ भगवती जी का पूजन तुरंत मिलता है पूजा करने का अच्छा फल आओ जानें

आचार्य BP ज्योतिष आध्यात्मिक गुरूजी के अनुसार शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि में घृत से माँ भगवती जी की - पूजा करनी चाहिये और ब्राह्मणों को घी का दान करना चाहिये; ऐसा करने वाला सदा निरोगी रहता है ॥ ६ ॥

द्वितीया तिथि को शर्करा से माँ जगदम्बा जी का पूजन करना चाहिये और ब्राह्मण को शर्करा का ही दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला मनुष्य दीर्घ जीवी होता है ॥ ७ ॥

तृतीया तिथि को माँ भगवती के पूजन कर्म में उन्हें दुग्ध अर्पण करना चाहिये और श्रेष्ठ ब्राह्मण को दुग्ध का दान करना चाहिये; ऐसा करने से मनुष्य सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त हो जाता है ॥ ८ ॥

चतुर्थी तिथि के दिन पूआ अर्पण करके देवी जी का पूजन करना चाहिये और ब्राह्मण को पूआ ही दान करना चाहिये; ऐसा करनेसे मनुष्य विघ्न बाधाओं से आक्रान्त नहीं होता ॥ ९ ॥

पंचमी तिथि को भगवती जी का पूजन करके उन्हें केला अर्पण करे और ब्राह्मण को केले का ही दान करे; ऐसा करने से मनुष्य बुद्धिमान्‌होता है ॥ १० ॥

षष्ठी तिथि को भगवती जी के पूजन कर्म में मधु को प्रधान बताया गया है। ब्राह्मण को मधु ही देना चाहिये; ऐसा करने से मनुष्य दिव्य कान्ति वाला हो जाता है ॥ ११ ॥

सप्तमी तिथि को भगवती जी को गुड़ का नैवेद्य अर्पण करके ब्राह्मण को गुड़ का दान करने से मनुष्य सभी प्रकार के शोकों से मुक्त हो जाता है ॥ १२ ॥

अष्टमी तिथि को भगवती जी को नारियल का नैवेद्य अर्पित करना चाहिये और ब्राह्मण को भी नारियल का दान करना चाहिये; ऐसा करने वाला मनुष्य सभी सन्तापों से रहित हो जाता है ॥ १ ॥

नवमी तिथि के दिन भगवती जी को लावा अर्पण करनेके बाद ब्राह्मण को भी लावा का दान करने से मनुष्य इस लोक में तथा परलोक में परम सुखी रहता है ॥ १४ ॥

दशमी तिथि को भगवती को काले तिल अर्पित करने और ब्राह्मण को उसी तिल का दान करने से मनुष्य को यमलोक का भय नहीं रह जाता ॥ १५ ॥

एकादशी तिथि को भगवती जी को दधि अर्पित करता है और ब्राह्मण को भी दधि प्रदान करता है, वह देवीका परम प्रिय हो जाता है ॥ १६ ॥

द्वादशी तिथि के दिन भगवतीजी को चिउड़े का भोग लगाकर ब्राह्मण को भी चिउड़े का दान करता है, वह भगवतीका प्रिय पात्र बन जाता है ॥ १७ ॥

त्रयोदशी तिथि को भगवती जी को चना अर्पित करता है और ब्राह्मण को चने का दान करता है, वह प्रजाओं तथा सन्तानों से सदा सम्पन्न रहता है ॥ १८ ॥

चतुर्दशी तिथि के दिन भगवती जी को सत्तू अर्पण करता है और ब्राह्मण को भी सत्तू प्रदान करता है, वह भगवान्‌शंकर का प्रिय हो जाता है ॥ १९ ॥

अमावस्या और पूर्णिमा तिथि को भगवती जी को अपर्ण खीर का भोग लगाता है और श्रेष्ठ ब्राह्मण को खीर प्रदान करता है, वह अपने सभी पितरोंका उद्धार कर देता है ॥ २० ॥

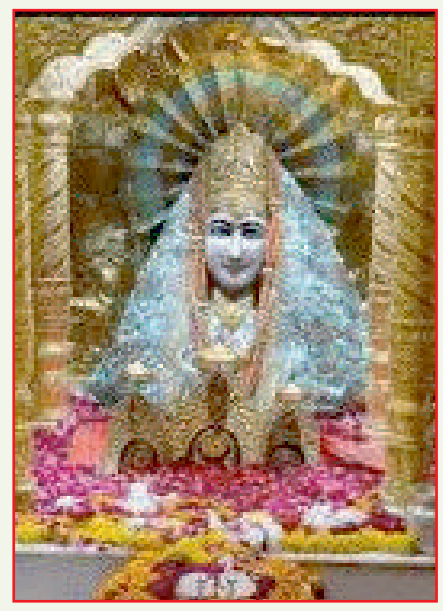

पति या आपका बच्चा घर का कोई सदस्य बहुत शराब पीता हैं तो क्या शराब छोड़ने के योग हैं तो कब तक और क्या उपाय से शराब छूट जाएगी? शराब पीना स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा नही होता तो ज्यादा शराब पीने से घर भी बर्बादी की स्थिति में रहकर दुख, परेशानियां, दुर्भाग्य ऐसे घर मे आने लगते है या फिर घर मे कही न कही गृहक्लेश आदि दिक्कत होती है तो आज इसी बारे में बात करते है अगर आप या आपके परिवार में कोई बहुत शराब पीता है जिस कारण उसका खुद का जीवन और आपकी आपके घर परिवार की सुख शांति भंग होती जा रही है तो क्या शराब ऐसे व्यक्ति की छूट पाएगी हमेशा के लिए या नही या कभी ऐसा व्यक्ति खराब पीना छोड़ सकता है तो कब और क्या कोई करने से शराब छूट जाएगी और ऐसा व्यक्ति अपने शराब छोड़कर जीवन मे आगे बढेगा तो कैसे और क्या करे कि शराब छोड़ दे व्यक्ति आदि समझते है??

कुंडली का दूसरा भाव खाने पीने का है तो लग्न लग्नेश खुद है हम, शनि राहु तो दुषित चन्द्र शुक्र यह खराब के कारक ग्रह है चन्द्र शुक्र जलीय ग्रह है इसीलिए।अब जब दूसरे भाव स्वामी और दूसरे भाव पर कही न कही शराब के कारक ग्रहो शनि राहु का प्रभाव पड़ रहा हो या यह ग्रह बैठे हो दूसरे भाव मे या दूसरे भाव स्वामी से शनि राहु का सम्बंध हो साथ ही लग्न लग्नेश भी शनि राहु के दृष्टि आदि के प्रभाव या सम्बन्ध में है चन्द्रमा या शुक्र भी शनि राहु से पीड़ति या कुंडली मे दूषित है तब ऐसा व्यक्ति शराब बहुत पीता है, शराब के लिये दीवाना रहेगा, दिन रात शराब ऐसे व्यक्ति के मुंह मे रहती है। अब ऐसे समय मे दूसरे भाव स्वामी आ दूसरे भाव मे बैठे ग्रहो की या दूसरे भाव/दूसरे भाव स्वामी से सम्बन्ध किये ग्रहो की महादशा अन्तर्दशाये शराब बहुत ज्यादा मुह लगी रहेगी।अब शराब यहाँ छूट पाएगी या नही समझते है जिससे व्यक्ति अपने ऊपर और अपने परिवार के ऊपर ध्यान दे और घरभाल संभाले आदि??

अब उपरोक्त शराब योगो में दूसरे भाव पर ,दूसरे भाव स्वामी पर शुभ स्थिति में कुंडली मे बैठे गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है और लग्न या लग्नेश भी शुभ ग्रह गुरु के नियंत्रण में है तब और कही न कही कुंडली मे शनि और राहु शुभ स्थिति में है तब यहाँ जातक शराब छोड़ देगा, उपाय करने या उपाय करने से ऐसे व्यक्ति के लिए।बाकी जन्मकुंडली दूसरे भाव स्वामी और जन्मकुंडली लग्न स्वामी नवमांश कुंडली मे गुरु बुध शुभ शुक्र से सम्बन्ध बनाकर या प्रभाव में है तब भी शराब ऐसा जातक छोड़ देगा उपाय करने से ऐसे जातक के लिए।बाकी ज्यादा से ज्यादा दूसरे भाव व लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होगी तब भी शराब छूटेगी लेकिन उपाय से।अब कुछ उदाहरणो से समझते है अगर कोई व्यक्ति बहुत शराब पीता है तो क्या शराब छूट पाएगी या नही और छूटेगी तो कैसे??

मेष_लग्न1:-मेष लग्न में दूसरे भाव स्वामी शुक्र से शनि राहु या राहु का सम्बन्ध है और शनि दूसरे भाव मे बैठा या दूसरे भाव को देख रहा है साथ ही लग्नेश मंगल भी राहु केतु की दृष्टि या प्रभाव में कुंडली मे है चन्द्र भी कमजोर है तब शराब बहुत पीएंगे ऐसे जातक, ज्यादातर दिन रात का समय शराब में निकलता है ऐसी स्थिति में अब लग्नेश मंगल का सम्बन्ध गुरु से है और दूसरे भाव पर गुरु की दृष्टि है या दूसरे भाव स्वामी शुक्र का सम्बन्ध गुरु से हैं तब शराब,शराब छुड़ाने के उपाय करने से शराब छूट जाएगी धीरे धीरे अगर गुरु इस तरह सहयोग नही कर रहा है तब शराब नही छूटेगी, पर उपाय किये जा सकते है उपाय से शराब पीने में कमी आएगी।। मिथुन_लग्न2:-मिथुन लग्न में दूसरे भाव स्वामी चन्द्रमा व दूसरा भाव दोनो ही राहु केतु से और लगन लग्नेश बुध भी कही न कही मंगल या राहु केतु से सम्बन्ध में है तब शराब पीने की आदत ऐसे व्यक्ति खत्म न होकर शराब पीने की लत बढ़ती जाएगी, पर अगर दूसरे भाव और दूसरे भाव स्वामी चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि होगी तब शराब छूट जाएगी बाकी लग्न स्वामी बुध बहुत बलवान होगा तब शराब छूटने में ज्यादा सहयोग मिलेगा।। अनुसार_सिंह_लग्न3:-सिंह लग्न में दूसरे भाव स्वामी बुध और दूसरा भाव चन्द्रमा सहित शनि राहु केतु के साथ सम्बन्ध में है और लग्न या लग्नेश सूर्य भी कही न कही राहु केतु या शनि से सम्बंध या शनि राहु केतु की दृष्टि में है तब शराब पीने की बहुत ज्यादा लत जातक को लगी रहेगी, शराब पीने की वजह से जीवन दुखद बनता जाएगा ऐसी स्थिति में अब दूसरे भाव, दूसरे भाव स्वामी बुध का सम्बंध गुरु से भी है या गुरु की दृष्टि दूसरे भाव और दूसरे भाव स्वामी बुध से है ,साथ ही लग्न पर भी शुभ ग्रह गुरु या शुक्र की दृष्टि है तब शराब ऐसा जातक छोड़ देगा छोटे मोटे उपाय कर लेने से। अगर शराब पीने के या बहुत ज्यादा शराब पीने के योग कुंडली मे योग बने हुए है जिस कारण आपके घर परिवार में कोई व्यक्ति बहुत पीता है लेकिन दूसरे भाव/दूसरे भाव स्वामी और लग्न पर गुरु या अन्य शुभ ग्रहों की दृष्टि नही है तब कभी शराब नही छूट पाएगी बाकी शराब छूटने या छुड़ाने के योग है तब निश्चित ही शराब छूटेगी और सही रास्ते पर जीवन आगे बढ़ेगा।

गुप्त नवरात्रि में माँ भगवती जी की पूजा आराधना अनुष्ठान कैसे करें आओ जानें

26 जून 2025 से गुप्त नवरात्रि का पर्व प्रारंभ होने बाला है, नवरात्र अर्थात्मां भगवती के नौ रूपों, नौ शक्तियों की पूजा के वो दिन जब मां हर मनोकामना पूरी करती है। यूं तो हर साल चैत्र और शारदीय नवरात्र होते हैं जिनमें लोग पूरी श्रद्धा के साथ घट स्थापना करते हैं लेकिन 2 और नवरात्र भी होते हैं... गुप्त नवरात्र इनके बारे में बहुत ही कम लोग जानते हैं। हिंदू पंचांग के अनुसार गुप्त नवरात्र वर्ष में 2 बार आते हैं एक माघ महीने में और दूसरा आषाढ़ महीने में..!

गुप्त नवरात्रि में दस महाविद्याओं की होती है पूजा

गुप्त नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की बजाय दस महाविद्याओं की पूजा की जाती है। ये दस महाविद्याएं हैं - माँ काली माता, माँ तारा देवी, माँ त्रिपुर सुंदरी, माँ भुवनेश्वरी, माँ छिन्नमस्ता, माँ त्रिपुर भैरवी, मां धूमावती, माँ बगलामुखी देवी, माँ मातंगी और माँ कमला देवी

वर्ष में 2 बार आने वाली गुप्त नवरात्रि बेहद खास होती है। इस नवरात्र की पूजा विधि चैत्र और शारदीय नवरात्रि से बिल्कुल अलग होती है और यही कारण है कि गुप्त नवरात्रि अन्य नवरात्र से बिल्कुल अलग और खास होते हैं। कहते हैं इन नवरात्रों में मां भगवती की देर रात गुप्त रूप से पूजा की जाती है और इसलिए इन्हें गुप्त नवरात्र कहा जाता है।

शैव साधनाओं का पर्वः- गुप्त नवरात्रि के दौरान साधक तांत्रिक क्रियाएं, शैव साधनाएं, श्मशान साधनाएं, महाकाल साधनाएं, आदि करते हैं और सफलता प्राप्त कर लेने पर विभिन्न शक्तियों और दुर्लभ सिद्धियों के स्वामी बन जाते हैं। गुप्त नवरात्रि के दौरान विनाश और संहार के देव, महाकाल और महाकाली की आराधना होती है..!!

जब स्वयं में उलझे हैं और दूसरों को सुलझाने जायेंगें तो हम और ज्यादा उलझ जायेंगें। जो स्वयं सुलझा हुआ हो तो उसमें स्पष्ट आत्मविश्वास होता है।

आत्मस्थिति में सभी सकारात्मक संभावनाएं विद्यमान रहती हैं। इसलिए दूसरों से उलझने से पहले रुकिये, स्वयं से जुड़िये, पूरी तरह से स्व में विश्राम पूर्ण हो जायें। प्रेम इससे अलग नहीं है। स्वस्थता और प्रेम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। लेकिन जब तक अस्वस्थ मन-बुद्धि काम पर लगे हैं इसका पता नहीं चलता। प्रेम हृदयस्वरुप है तथा वह तभी प्रकट होता है जब मन-बुद्धि के 'मैं' का हस्तक्षेप बंद हो। इसके लिए धैर्य चाहिए, समझ चाहिए, ठहराव चाहिये ताकि स्व से, मूल से जुड़ा जा सके। ध्यान रहें कि यदि हम मानसिक 'मैं' की जगह, हार्दिक स्वयं की तरह जी सके तो इस अनुसंधान का सुंदर परिणाम होता है। इसलिए पहले समाधान अपने में होता है। तब दूसरों को खुश करना, खुश रखना, जैसी आवश्यकता होती है। दूसरों में लिप्त होने में आशंका है, संघर्ष है। स्पष्ट आत्मविश्वास से युक्त सर्वव्यापी प्रेम ऐसी सभी आशंकाओं/संघर्षों से पूर्णतः मुक्त होता है।

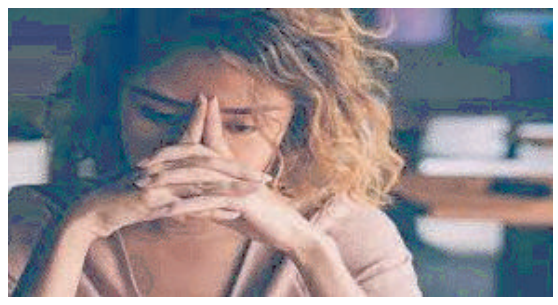

विश्व सिकल सेल दिवस आज

हर साल 19 जून को दुनियाभर में विश्व सिकल सेल दिवस मनाया जाता है। यह एक अंतरराष्ट्रीय जागरूकता दिवस है जो वैश्विक जनता को सिकल सेल रोग के बारे में जागरूक करता है। इस दिन जागरूकता अभियान से जुड़े सारे संगठन एक साथ आते हैं और सिकल रोग के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने का काम करते हैं। इसी के साथ ही इस दिन विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

विश्व सिकल सेल दिवस का इतिहास

==========

शोध के अनुसार सिकल सेल रोग का कारण बनने वाला जीन हज़ारों साल पहले अफ्रीका में मलेरिया से लड़ने के लिए विकसित हुआ था। इस बीमारी के प्रति जागरूकता फ़ैलाने के उद्देश्य से 22 दिसंबर 2008 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा में 19 जून को विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस के रूप में मनाए जाने का फैसला लिया गया। वहीं पहला सिकल सेल जागरूकता दिवस 19 जून 2009 को आयोजित किया गया था। तब से लेकर हर साल यह दिवा मनाया जा रहा है।

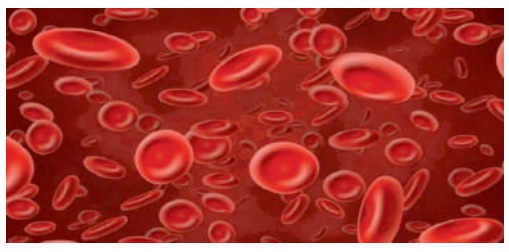

विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस का महत्व

==========

विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस कई कारणों से महत्वपूर्ण हैः

इस दिवस के कारण लोगों में सिकल सेल रोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है।

इस दिवस के कारण लोगों को सिकल सेल के लक्षणों के बारे में पता चल है और वे डॉक्टर के पास समय से जांच करा पाते हैं।

इस दिवस की वजह से लोग इसके इलाज के प्रति जागरूक होते हैं।

वाणी के चार पाप, आप भी जाने

1. परुष भाषण अर्थात् कठोर वाणीः कभी-भी कड़वी बात नहीं बोलनी चाहिए। किसी भी बात को मृदुता से, मधुरता से एवं अपने हृदय का प्रेम उसमें मिलाकर फिर कहना चाहिए। कठोर वाणी का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

गुरु ने शिष्य को किसी घर के मालिक की तलाश करने के लिए भेजा। शिष्य जरा ऐसा ही था – अधूरे लक्षणवाला। उसने घर की महिला से पूछाः

'ए माई ! तेरा आदमी कहाँ है ?'

महिला क्रोधित हो गयी और उसने चेले को भगा दिया। फिर गुरुजी स्वयं गये एवं बोलेः

'माता जी ! आपके श्रीमान्‌पतिदेव कहाँ है ?'

उस महिला ने आदर के साथ उन्हें बिठाया एवं कहाः 'पतिदेव अभी घर आयेंगे।'

दोनों ने एक ही बात पूछी किन्तु पूछने का ढंग अलग था। इस प्रकार कठोर बोलना यह वाणी का एक पाप है। वाणी का यह दोष मानवता से पतित करवाता है।

2. अनृत वाणी अर्थात् अपनी जानकारी से विपरीत बोलनाः हम जो जानते हैं वह न बोलें, मौन रहें तो चल सकता है किन्तु जो बोलें वह सत्य ही होना चाहिए, अपने ज्ञान के अनुसार ही होना चाहिए। अपने ज्ञान का कभी अनादर न करें, तिरस्कार न करें। जब हम किसी के सामने झूठ बोलते हैं तब उसे नहीं ठगते, वरन्‌अपने ज्ञान को ही ठगते हैं, अपने ज्ञान का ही अपमान करते हैं। इससे ज्ञान रूठ जाता है, नाराज हो जाता है। ज्ञान कहता है कि 'यह तो मेरे पर झूठ का परदा ढाँक देता है, मुझे दबा देता है तो इसके पास क्यों रहूँ ?' ज्ञान दब जाता है।इस प्रकार असत्य बोलना यह वाणी का पाप है।

3. पैशुन्य वाणी अर्थात् चुगली करनाः इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करना। क्या आप किसी के दूत हैं कि इस प्रकार संदेशवाहक का कार्य करते हैं ? चुगली करना आसुरी संपत्ति के अंतर्गत आता है। इससे कलह पैदा होता है, दुर्भावना जन्म लेती है। चुगली करना यह वाणी का तीसरा पाप है।

4. असम्बद्ध प्रलाप अर्थात्‌असंगत भाषणः प्रसंग के विपरीत बात करना।

यदि शादी-विवाह की बात चल रही हो तो वहाँ मृत्यु की बात नहीं करनी चाहिए।

यदि मृत्यु के प्रसंग की चर्चा चल रही हो तो वहाँ शादी-विवाह की बात नहीं करनी चाहिए।

इस प्रकार मानव की वाणी में कठोरता, असत्यता, चुगली एवं प्रसंग के विरुद्ध वाणी – यह चार दोष नहीं होने चाहिए। इन चार दोषों से युक्त वचन बोलने से बोलने वाले को पाप लगता है।

शिवदर्शन

निराकार ब्रह्म शिवसे इस सृष्टि की रचना हुई और प्रथम पंचतत्व के देवता गणपति, विष्णु, सूर्य, शक्ति और रुद्रदेव की उपासना शुरू हुई । उपासना ओर देव अनुसार वो विविधमत के सम्प्रदाय कहलाये। शिवपूजा ओर रुद्र उपासना के विविधमत सम्प्रदाय ।

भगवान शिव तथा उनके अवतारों को मानने वालों को शैव कहते हैं। शैव में शाक्त, नाथ, दसनामी, नाग आदि उप संप्रदाय हैं।

महाभारत में माहेश्वरों (शैव) के चार सम्प्रदाय बतलाए गए हैः (i) शैव (ii) पाशुपत (iii) कालदमन (iv) कापालिक।

शैवमत का मूलरूप ऋग्वेद में रुद्र की आराधना में हैं।

12 रुद्रों में प्रमुख रुद्र ही आगे चलकर शिव, शंकर, भोलेनाथ और महादेव कहलाए। शिव-मन्दिरों में शिव को योगमुद्रा में दर्शाया जाता है।

भगवान शिव की पूजा करने वालों को शैव और शिव से संबंधित धर्म को शैवधर्म कहा जाता है।शिवलिंग उपासना का प्रारंभिक पुरातात्विक साक्ष्य हड़प्पा संस्कृति के अवशेषों से मिलता है।ऋग्वेद में शिव के लिए रुद्र नामक देवता का उल्लेख है।अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति और भूपति कहा जाता है। लिंगपूजा का पहला स्पष्ट वर्णन मत्स्यपुराण में मिलता है।महाभारत के अनुशासन पर्व से भी लिंग पूजा का वर्णन मिलता है।

वामन पुराण में शैव संप्रदाय की संख्या चार बताई गई हैः

(i) पाशुपत
(ii) काल्पलिक
(iii) कालमुख
(iv) लिंगायत

पाशुपत संप्रदाय शैवों का सबसे प्राचीन संप्रदाय है। इसके संस्थापक लवकुलीश थे जिन्हें भगवान शिव के 18 अवतारों में से एक माना जाता है।पाशुपत संप्रदाय के अनुयायियों को पंचार्थिक कहा गया, इस मत का सैद्धांतिक ग्रंथ पाशुपत सूत्र है।

कापालिक संप्रदाय के ईष्ट देव भैरव थे, इस सम्प्रदाय का प्रमुख केंद्र 'शैल' नामक स्थान था!

कालमुख संप्रदाय के अनुयायिओं को शिव पुराण में महाव्रतधर कहा जाता है। इस संप्रदाय के लोग नर-कपाल

में ही भोजन, जल और सुरापान करते थे और शरीर पर चिता की भस्म मलते थे।

लिंगायत समुदाय दक्षिण में काफी प्रचलित था। इन्हें जंगम भी कहा जाता है, इस संप्रदाय के लोग शिव लिंग की उपासना करते थे। बसव पुराण में लिंगायत समुदाय के प्रवर्तक वल्लभ प्रभु और उनके शिष्य बासव को बताया गया है, इस संप्रदाय को वीरशिव संप्रदाय भी कहा जाता था दसवीं शताब्दी में मत्स्येंद्रनाथ ने नाथ संप्रदाय की स्थापना की, इस संप्रदाय का व्यापक प्रचार प्रसार बाबा गोरखनाथ के समय में हुआ। दक्षिण भारत में शैवधर्म चालुक्य, राष्ट्रकूट, पल्लव और चोलों के समय लोकप्रिय रहा।

नायनारों संतों की संख्या 63 बताई गई है जिनमें उप्पार, तिरूज्ञान, संबंदर और सुंदर मूर्ति के नाम उल्लेखनीय है।पल्लवकाल में शैव धर्म का प्रचार प्रसार नायनारों ने किया।ऐलेरा के कैलाश मंदिर का निर्माण राष्ट्रकूटों ने करवाया।चोल शालक राजराज प्रथम ने तंजौर में राजराजेश्वर शैव मंदिर का निर्माण करवाया था। भारशिव नागवंशी शासकों की मुद्राओं पर शिव और नन्दी का एक साथ अंकन प्राप्त होता है।

शिव पुराण में शिव के दशावतारों के अलावा अन्य का वर्णन मिलता है। ये दसों अवतार तंत्रशास्त्र से संबंधित हैंः

(i) महाकाल (ii) तारा (iii) भुवनेश (iv) षोडश (v) भैरव (vi) छिन्नमस्तक गिरिजा (vii) धूम्रवान (viii) बगलामुखी (ix) मातंग (x) कमल। (दशमहाविद्या)

शिव के अन्य ग्यारह अवतार हैंः (i) कपाली (ii) पिंगल (iii) भीम (iv) विरुपाक्ष (v) विलोहित (vi) शास्ता (vii) अजपाद (viii) आपिर्बुध्य (ix) शम्भ (x) चण्ड (xi) भव

शैव ग्रंथ इस प्रकार हैंः

(i) श्वेताश्वतरा उपनिषद (ii) शिव पुराण (iii) आगम ग्रंथ (iv) तिरुमुराई

शैव तीर्थ इस प्रकार हैंः

(i) बनारस (ii) केदारनाथ (iii) सोमनाथ (iv) रामेश्वरम (v) चिदम्बरम (vi) अमरनाथ (vii) कैलाश मानसरोवर

शैव सम्प्रदाय के संस्कार इस प्रकार हैंः

(i) शैव संप्रदाय के लोग एकेश्वरवादी होते हैं।

(ii) इसके संन्यासी जटा रखते हैं।

(iii) इसमें सिर तो मुंडाते हैं, लेकिन चोटी नहीं रखते।

(iv) इनके अनुष्ठान रात्रि में होते हैं।

(v) इनके अपने तांत्रिक मंत्र होते हैं।

(vi) यह निर्वस्त्र भी रहते हैं, भगवा वस्त्र भी पहनते हैं और हाथ में कमंडल, चिमटा रखकर धूनी भी रमाते हैं।

(vii) शैव चंद्र पर आधारित व्रत उपवास करते हैं।

(viii) शैव संप्रदाय में समाधि देने की परंपरा है।

(ix) शैव मंदिर को शिवालय कहते हैं जहां सिर्फ शिवलिंग होता है।

(x) यह भभूति तीलक आड़ा लगाते हैं।

शैव साधुओं को नाथ, अघोरी, अवधूत, बाबा, औघड़, योगी, सिद्ध कहा जाता है।

आप सभी धर्म प्रेमी जनो पर महादेव की सदैव कृपा हो यही प्रार्थना है।

भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन पर टिकट काउंटर को नवनिर्मित ग्राउंड लेवल निकास द्वार पर स्थानांतरित किया गया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन के चल रहे पुनर्विकास कार्य के तहत, भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन को विश्व स्तरीय मानकों के अनुरूप उन्नत करने के उद्देश्य से यात्री सुविधाओं और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

मौजूदा अस्थायी शेड पर निर्माण गतिविधियों को देखते हुए, मौजूदा यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस) और मानव रहित टिकटिंग प्रणाली (यूटीएस) काउंटरों को अस्थायी शेड से अस्थायी रूप से नवनिर्मित ग्राउंड लेवल एग्जिट कॉनकोर्स में स्थानांतरित कर दिया गया है। इस व्यवस्था से अस्थायी शेड स्थल पर निर्माण कार्य की सुचारू प्रगति और टिकटिंग सेवाओं की निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित होगी।यात्रियों की आवाजाही को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए, टाउन बस स्टैंड/मंदिर की ओर से एक नवनिर्मित पहुंच मार्ग खोला गया है, जो स्टेशन तक बेहतर कनेक्टिविटी और परेशानी मुक्त पहुंच को सक्षम करेगा।

इस पुनर्विकास प्रयास में एक प्रमुख मील का पत्थर एक नवनिर्मित ग्राउंड लेवल एग्जिट कॉनकोर्स के माध्यम से प्लेटफ़ॉर्म नंबर 1 तक सीधी पहुंच खोलना है, जिससे भीड़भाड़ कम होने और यात्री प्रवाह में उल्लेखनीय सुधार होने की उम्मीद है। मौजूदा स्टेशन भवन में स्थानांतरित किए गए यूटीएस और पीआरएस काउंटर यात्रियों के लिए अधिक स्थान प्रदान करेंगे और यात्रियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाएंगे।

भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन पर पार्किंग शुल्क 8 गुना बढ़ा ,प्रति बाइक शुल्क 94

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन पर पार्किंग शुल्क में भारी वृद्धि हुई है। पहले प्रति बाइक शुल्क 12 रुपये था। अब यह शुल्क 8 गुना बढ़ाकर 94 रुपये कर दिया गया है। साइकिल पार्किंग शुल्क में भी 5 गुना वृद्धि की गई है। इसे लेकर यात्रियों में काफी नाराजगी है। रेलवे स्टेशन पर मास्टर कैंटीन के पास बाइक और साइकिल के लिए पार्किंग स्थल है ईस्ट कोस्ट रेलवे ने इस पार्किंग को डीएंडएस एसोसिएट्स को लीज पर दिया है। पहले यह टेंडर तारिणी सिक्योरिटी सर्विसेज को दिया गया था। 12 तारीख को यह कॉन्ट्रैक्ट पूरा हुआ था। टेंडर जीतने वाली नई कंपनी अब मनमाना पार्किंग शुल्क वसूल रही है। यात्री परेशान हो रहे हैं। बाइक या साइकिल पार्किंग ही नहीं, कार पार्किंग का शुल्क भी काफी ज्यादा है। वहां 2 घंटे के लिए 24 रुपये लिए जा रहे हैं। 24 घंटे के लिए 71 रुपये का शुल्क लगता है। अगर कोई एक दिन से ज्यादा कार रखता है तो 142 रुपये देने होते हैं। इस संबंध में रेलवे ने कहा है कि पार्किंग शुल्क कमर्शियल इंस्पेक्टर, स्टेशन मैनेजर और अकाउंट ऑफिसर वसूल रहे हैं। एक सर्वे कमेटी ने यह शुल्क रिपोर्ट प्रस्तावित की है जिसके बाद डीआरएम की अनुमति जरूरी है। चूंकि टेंडर के दौरान सबसे ज्यादा रकम चुकाने वाली कंपनी को ही पार्किंग स्थल लीज पर मिल रहा है। पहले नीलामी 12 लाख रुपये में हुई थी। अब लीज लेने वाली नई कंपनी ने 45 लाख रुपये में नीलामी ली है।

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने फ़ास्ट टैग के एक साल में 200 ट्रिप के 3000 रुपए में करने का स्वागत किया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी के द्वारा फ़ास्ट टैग के एक साल में 200 ट्रिप के 3000 रुपए में करने का स्वागत किया है.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की भारत में जितने भी रोड NHAI (नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया) द्वारा बनाये जा रहे है, उसमे जो अरबो रूपया लग रहा है वो पूरे भारत की जनता का पैसा लग रहा है. जब भारत की जनता के पैसे से हाईवे के रोड बन सकते है तो फिर इनकी मेंटेनेंस (मरम्मत) के टोल लिया ही क्यों जा रहा है? रोज हाईवे के टोल पर लड़ाई झगडे की खबरे देखने को मिलती है. टोल प्लाजा पर बाउंसर खड़े रेहते है जो काफी बार आम पब्लिक की पिटाई तक कर देते है. बल्कि करोडो रूपए का घोटाला भी टोल टैक्स के वसूलने पर होता है. टोल के टेंडर लेने के लिए कम्पनी आपस में कम्पटीशन के दौरान ज्यादा पैसे सरकार को देकर खुद टोल का टेंडर हासिल करते है और फिर यें किसी भी तरह हेर फेर करके जनता से ही पैसे वसूल करते है. काफी बार टोल पर लम्बी लम्बी लाइन लगी होती है.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की श्री नितिन गडकरी जी जो भी रोड भारत में बना रहे है दिल्ली के टैक्सी बसों वालो के लिए वो किसी अभिशाप से कम नहीं है क्योंकि सिर्फ दिल्ली की टैक्सी बसों की स्पीड लिमिट 80 किलो मीटर प्रति घंटा भारत के परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी ने करी हुई.

जबकि उनके द्वारा बनाये गए रोड पर भारत की सारी टैक्सी बसें और प्राइवेट कारे 120 किलो मीटर प्रति घंटे से दौड़ती है.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन पूरे भारत से फ़ास्ट टैग या टोल टैक्स हटाने के लिय जल्दी ही पूरे भारत में आंदोलन करेंगी.

क्योंकि यें टोल या फ़ास्ट टैग भ्रष्टाचार करने का साधन है जिसमे आम जनता पिसती है.

इसलिए पूरे भारत में रोड से टोल वसूल करना बंद होना चाहिए.

कबूतरों को दाना डालना स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा – जागरूक बनें, सतर्क रहें

अंकुर शरण

आज के शहरी जीवन में कबूतरों को दाना डालना एक आम दृश्य बन चुका है। मंदिरों, घरों की छतों, बालकनियों और सार्वजनिक स्थानों पर लोग बड़े प्रेम से कबूतरों को दाना डालते हैं। यह परंपरा करुणा और पुण्य के भाव से जुड़ी मानी जाती है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यह आदत आपके और आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिए कितनी घातक हो सकती है?

कबूतरों से होने वाले स्वास्थ्य जोखिम:

कबूतरों को रफ्लाइंग रैट्सरु यानी उड़ने वाले चूहे कहा जाता है, क्योंकि इनसे भी गंभीर रोग फैल सकते हैं। उनके मल और पंखों से निकलने वाले विषाणु व बैक्टीरिया हवा में फैलकर कई बीमारियों को जन्म देते हैं:

हिस्टोप्लास्मोसिस (Histoplasmosis): यह एक फंगल इंफेक्शन है जो फेफड़ों को प्रभावित करता है। कबूतरों के सूखे मल में यह फंगस पनपता है और सांस के ज़रिए शरीर में प्रवेश करता है।

साइटाकोसिस (Psittacosis): यह एक बैक्टीरियल संक्रमण है जो फेफड़ों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

एलर्जिक रिएक्शन: कबूतरों के पंखों, मल और घोंसले से धूल और कण निकलते हैं जो सांस लेने में तकलीफ,

अस्थमा और स्किन एलर्जी जैसी समस्याएं पैदा करते हैं।

फंगल इंफेक्शन: बुजुर्गों और बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, जिससे वे अधिक प्रभावित हो सकते हैं।

पर्यावरणीय नुकसान:

कबूतरों की अत्यधिक संख्या से अन्य पक्षियों जैसे गौरैया (sparrow) का अस्तित्व संकट में आ गया है।

मल से इमारतों को नुकसान पहुंचता है, जिससे दीवारें काली पड़ जाती हैं और मरम्मत की जरूरत पड़ती है।

सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिससे नगर निगम की सफाई व्यवस्था भी बाधित होती है।

धार्मिक विश्वास बनाम वैज्ञानिक सच्चाई:

भले ही कबूतरों को दाना डालना पुण्य का काम समझा जाता है, लेकिन अंधश्रद्धा के नाम पर अनियंत्रित फीडिंग से न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है, बल्कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर संकट बन सकता है। धर्म करुणा सिखाता है, लेकिन करुणा विवेकपूर्ण होनी चाहिए।

समाधान:

फीडिंग पॉइंट पर नियंत्रण: नगर निगम या सोसायटी द्वारा तय स्थानों पर ही सीमित मात्रा में दाना डालने की अनुमति होनी चाहिए।

अन्य पक्षियों को प्राथमिकता दें: संकट में पड़ी गौरैया और अन्य छोटी प्रजातियों के लिए नेस्टिंग और फीडिंग ज़ोन बनाएं।

जागरूकता अभियान: RWAs और स्थानीय संगठनों को मिलकर इस विषय पर लोगों को शिक्षित करना चाहिए।

घरों में नेट लगवाएं: जिन बालकनियों में कबूतर घोंसला बनाते हैं, वहां जाल लगाकर रोका जा सकता है।

करुणा और जागरूकता के बीच संतुलन ज़रूरी है। यदि हम अपने बच्चों को स्वस्थ जीवन देना चाहते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि कबूतरों को अनियंत्रित तरीके से दाना डालना केवल परंपरा नहीं, एक स्वास्थ्य खतरा भी है। इसलिए अब समय आ गया है कि हम "सही को अपनाएं, गलत को समझें" और ऐसे व्यवहारों पर पुनर्विचार करें जो समाज और पर्यावरण दोनों के लिए नुकसानदायक हैं।

स्वस्थ समाज की ओर पहला कदम – आज ही कबूतरों को दाना डालने की आदत पर पुनर्विचार करें।

indiangreenbuddy@gmail.com

पार्यावरण पाठशाला : आवारा बनाम पालतू – समाज की जटिल होती संवेदना: जानवरों से निपटने की जिम्मेदारी, टकराव और IPC की भूमिका

अंकुर शरण

एक संतुलन की तलाश – जहाँ करुणा, क़ानून और सामाजिक व्यवस्था साथ चलें।

शहरों में बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के बीच एक गंभीर लेकिन अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाने वाला मुद्दा है – आवारा जानवरों की समस्या। चाहे वह कुत्ते हों, गायें हों या बंदर – रिहायशी कॉलोनियों, सोसायटियों और सड़कों पर इनकी बढ़ती संख्या ने न केवल नागरिकों की सुरक्षा को प्रभावित किया है बल्कि सामाजिक सौहार्द पर भी सवाल खड़े किए हैं। यह विषय समाज के हर वर्ग के लिए संवेदनशील है, क्योंकि यह सीधे तौर पर मानवीय करुणा, कानून व्यवस्था और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ा है।

कारण:

असंतुलित फीडिंग व पॉइंट्स: कई लोग अपनी करुणा के तहत नियमित रूप से आवारा जानवरों को खाना खिलाते हैं, परंतु यह अभ्यास यदि सोसायटी के कॉमन एरिया, गेट्स या बच्चों के खेलने की जगह पर हो, तो यह झुंड इकट्ठा करने का कारण बनता है।

अनियंत्रित प्रजनन: स्टरलाइज़ेशन अभियान की धीमी गति ने कुत्तों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि की है।

प्रदूषण और खाद्य अपशिष्ट: खुले कूड़ेदान और गलियों में फैला कचरा जानवरों को आकर्षित करता है, जिससे वे वहीं रहने लगते हैं।

सामाजिक अज्ञानता: कानून और अधिकारों की जानकारी का अभाव, और नागरिकों का सिर्फ अपनी सुविधा के अनुसार प्रतिक्रिया करना।

प्रभाव:

बच्चों और बुज़ुर्गों पर खतरा: आवारा कुत्तों के झुंड द्वारा पीछा करना या काट लेना आम घटनाएं बन गई हैं। कई जगहों पर बंदरों द्वारा हमला करने की घटनाएं भी सामने आई हैं।

मानव-जानवर संघर्ष: सोसायटी में भोजन खिलाने वालों और इसका विरोध करने वालों के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है।

स्वास्थ्य संबंधी खतरे: रेबीज जैसे रोगों के फैलाव की संभावना रहती है, जो गंभीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न कर सकता है।

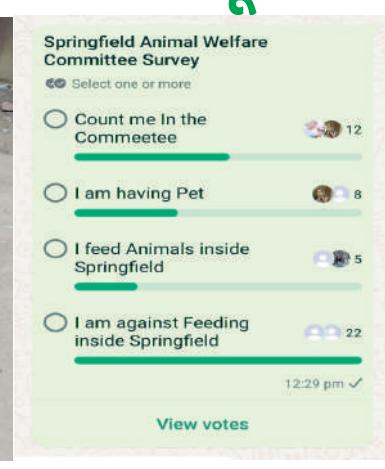

IPC और कानूनी प्रावधान:

भारतीय दंड संहिता (IPC) और पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (PCA Act, 1960) के तहत जानवरों को अनावश्यक पीड़ा पहुंचाना दंडनीय अपराध है।

IPC की धारा 428 और 429 के तहत किसी भी पालतू या आवारा जानवर को नुकसान पहुंचाने पर जुर्माना और सजा दोनों हो सकती है।

PCA Act की धारा 11 के अनुसार किसी भी जानवर के साथ दुर्व्यवहार करने, मारने या भूखा रखने पर कार्यवाही की जा सकती है।

वहीं High Court और Supreme Court ने भी स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि जानवरों को मारना या जबरन भगाना गैरकानूनी है, परंतु उनके प्रबंधन हेतु नगर निगम और सोसायटी को उचित योजना बनानी चाहिए।

समाधान:

निर्धारित फीडिंग ज़ोन: सोसायटी के भीतर या बाहर निर्धारित स्थानों पर ही भोजन देने की अनुमति होनी चाहिए, वह भी निर्धारित समय पर।

स्थानीय नगर निगम के साथ समन्वय: स्टरलाइज़ेशन, टीकाकरण और रेस्क्यू के लिए प्राधिकृत एजेंसियों से जुड़ना होगा।

सोसायटी बाय-लॉज में प्रावधान: हर सोसायटी को अपने बाय-लॉज में इस विषय को शामिल करना चाहिए कि कैसे जानवरों के लिए जिम्मेदारी से कार्य किया जाएगा।

नागरिक जागरूकता: स्कूलों, आरडब्ल्यूए मीटिंग्स और सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता फैलाना ज़रूरी है ताकि यह समझा जा सके कि यह एक सामूहिक उत्तरदायित्व है, न कि व्यक्तिगत विवाद का विषय।

आवारा जानवरों की समस्या केवल पशु या मानव अधिकारों की बहस नहीं, बल्कि एक सामाजिक और प्रशासनिक संतुलन की मांग करती है। अगर इस दिशा में समाज और प्रशासन मिलकर ठोस कदम नहीं उठाते, तो यह न केवल सुरक्षा और स्वास्थ्य को प्रभावित करेगा, बल्कि सामाजिक तानाबाना भी कमजोर करेगा। अतः यह समय है कि हम करुणा और व्यवस्था – दोनों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए इस संवेदनशील विषय पर गंभीरता से विचार करें।

पार्यावरण पाठशाला के अंतर्गत एक संवेदनशील विषय पर व्हाट्सएप्प सर्वे (Springfield, Fbd)

पार्यावरण पाठशाला के अंतर्गत आवारा जानवरों से जुड़ी समस्याओं पर 400+ सदस्यों के साथ एक व्हाट्सएप्प सर्वे किया गया, जिसमें केवल 15-20% लोगों ने ही अपनी स्पष्ट राय साझा की। यह विषय जितना संवेदनशील है, उतना ही समाज में सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता रखता है।

स्थानीय रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (URWA) ने इस दिशा में एक समिति गठित करने की पहल की है, जो इस मुद्दे पर नियम, समाधान और सामंजस्यपूर्ण कार्यप्रणाली (SOP) तैयार करेगी। ऐसी ही पहल हर सोसायटी में होनी चाहिए।

"इलाज से बेहतर है बचाव" – अब समय आ गया है कि हम जागरूकता के साथ-साथ कड़े प्रवर्तन और ठोस कार्ययोजना की दिशा में कदम बढ़ाएं, ताकि समाज में मानव और पशु – दोनों के बीच संतुलन बना रहे।

Email at
indiangreenbuddy@gmail.com

पलामू नवाबजार का अंचल अधिकारी शैलेश 30 हजार लेते एसीबी के हत्थे चढ़ा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। जमीन के खेल में झारखंड में हर अधिकारी कर्मचारी दागदार है। जिसका छोटा सा नमूना आज आप देख रहे है इस नवाबाजार सीओ को।

पलामू जिले के नावाबाजार अंचल अधिकारी शैलेश कुमार को एसीबी ने 30 हजार रुपये घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया. एंटी करप्शन ब्यूरो की इस कार्रवाई से हड़कंप मच गया है. बताया जा रहा है कि जमीन के म्यूटेशन के एवज में घूस ले रहे थे. एसीबी की टीम ने आरोपी अधिकारी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है. इस कार्रवाई से जिले भर के सरकारी महकमे में चर्चा का केन्द्र बन गया है. एसीबी ने बड़ी सुनियोजित तरीके से

सीओ शैलेश कुमार को अपने शिकंजे में लिया.एसीपी को शिकायत मिली थी की एक जमीन के दाखिल खारिज के नाम पर अंचल अधिकारी रिश्वत की मांग कर रहे थे इसकी शिकायत मिलते ही एसीपी की टीम ने जाल बिछाया और को शैलेश कुमार को गिरफ्तार कर लिया. एसीबी को शिकायत मिल रही थी कि नया बाजार अंचल कार्यालय में भ्रष्टाचार हो रहा है इसी मामले में एक लिखित शिकायत दर्ज कराई गई इसके बाद दोपहर एसीबी की टीम अधिकारी को रंगे हाथों दबोच लिया है साथी उन्हें पलामू एसीबी भी दफ्तर ले जाया गया जहां उनसे पूछताछ की जाएगी और फिर कोर्ट में पेश किया जाएगा।

झारखंड के रामगढ़ जिले में एक्सीडेंट बाद दो ट्रकों में लगी भयंकर आग

आग मे झुलसने से चालक समेत दो की दर्दनाक मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के रामगढ़ जिला अन्तर्गत गोला थाना क्षेत्र के एनएच १३ के चौपादारू घाटी में बुधवार की दोपहर एक ट्रेलर और हाइवा में आमने-सामने टक्कर हो गई. टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों वाहनों में आग लग गई. टक्कर के बाद दोनों वाहनों के केबिन आपस में बुरी तरह चिपक गए.

हादसा इतना भयावह था कि केबिन में फंसा एक व्यक्ति वाहन के केबिन से बाहर नहीं निकल सका, जिससे वह आग की चपेट में आ गया. झुलसने से उसकी मौत हो गई, जबकि हादसे में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया. घायल को गोला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्राथमिक उपचार करने के बाद बेहतर इलाज

के लिए रेफर कर दिया गया.

घटना की सूचना मिलते ही गोला थाना और पेटरवार थाना की पुलिस मौके पर पहुंची, जबकि तेनुघाट अग्निशमन वाहन ने आग पर काबू पाने में अहम भूमिका निभाई. स्थानीय लोगों का कहना है कि ट्रेलर का चालक वाहन में फंस गया, जिससे उसकी मौके पर ही झुलसने से मौत हो गई.

घटना के कारण बोकारो-रामगढ़ मुख्य मार्ग के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई. करीब दो घंटे तक यातायात बाधित रहा. तो पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है. रामगढ़ एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद ने बताया कि गोला थाना क्षेत्र के चोपादारू घाटी में दो वाहनों के बीच भीषण टक्कर हुई है. वाहनों में भीषण आग भी लग गई जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि एक अन्य व्यक्ति घायल है. घायल को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है. दुर्घटनाग्रस्त दोनों वाहनों को सड़क से हटाने का प्रयास किया जा रहा है।

दक्षिण जिला दिल्ली के साइबर पुलिस स्टेशन ने यूएसडीटी निवेश धोखाधड़ी गिरोह का भंडाफोड़ किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: एक बड़ी सफलता में, साइबर पुलिस स्टेशन, दक्षिण जिला ने एक संगठित साइबर अपराध गिरोह का भंडाफोड़ किया है जो यूएसडीटी (टीथर क्रिप्टोकरेंसी) ट्रेडिंग के जरिए उच्च रिटर्न के बहाने निर्दोष निवेशकों को ठगने में शामिल था। आरोपी व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है।

साइबर पीएस साउथ डिस्ट्रिक्ट नई दिल्ली में एक पीड़ित से शिकायत प्राप्त हुई थी, जिसे यूएसडीटी में उच्च रिटर्न के झूठे वादे के तहत एक धोखाधड़ी वाले क्रिप्टो ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से 10 लाख रुपये का निवेश करने का लालच दिया गया था। शिकायतकर्ता को एक नकली क्रिप्टो ट्रेडिंग एप्लीकेशन डाउनलोड करने के लिए प्रेरित किया गया और वॉलेट/डैशबोर्ड में नकली लाभ दिखाया गया। हालांकि, जब उसने अपनी निवेश की गई राशि वापस लेने की कोशिश की, तो आरोपी ने 30% "क्लियरेंस फीस" की मांग की, जिसके बाद उसे एहसास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ है। इस पर धोखेबाजों को पकड़ने के लिए जांच शुरू की गई। एफआईआर संख्या 27/25, दिनांक 29/04/2025, यू/एस 318(4) बीएनएस, पीएस साइबर साउथ दिल्ली पंजीकृत किया गया। टीम और जांच चूंकि निवेश धोखाधड़ी की प्रवृत्ति बढ़ रही है, इसलिए साइबर पुलिस स्टेशन, साउथ जिले की एक समर्पित टीम, जिसमें एसआई राज कुमार सिंह (नंबर डी-6892), एचसी राकेश (नंबर 1477/एसडी), एचसी मुकेश (नंबर 1386/एसडी), एचसी भूदेव (नंबर 1086/एसडी), एचसी विकास (नंबर 2146/एसडी), एचसी प्रवीण (नंबर 1495/एसडी) और डब्ल्यू/एचसी सुनेर (नंबर 979/एसडी) शामिल थे, का गठन

इंस्पेक्टर हंसराज स्वामी, एसएचओ/साइबर साउथ के नेतृत्व में और श्री भरत राम मीना और श्री अरविंद कुमार, एसीपी/ऑपरेशंस की करीबी निगरानी में सक्रिय धोखेबाजों को पकड़ने के लिए किया गया था। साइबर पुलिस टीम ने तेजी से काम किया और व्यापक तकनीकी और फील्डवर्क के बाद, गरिमा सिंह पत्नी अमित सिंह निवासी मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान, उसने खुलासा किया कि अक्टूबर 2024 में, उसके पड़ोसी आलोक सिंह ने 1,000 के बदले में उसके पीएनबी बैंक खाते की जानकारी ले ली थी। वर्तमान मामले में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। आगे की जांच में अविनाश वर्मा और आलोक सिंह की पहचान हुई, जिन्होंने मामूली रकम के लिए ग्रामीणों के नाम पर बैंक खाते खोले। दोनों को मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश में गिरफ्तार किया गया और उन्होंने खुलासा किया कि खातों को उनके सहयोगी हिमांशु बैसोया को 15,000 में बेचा गया था। उन्हें ट्रांजिट रिमांड पर दिल्ली लाया गया और पूछताछ के लिए दो दिन की पुलिस हिरासत में लिया गया। उनके खुलासे के आधार पर, हिमांशु बैसोया को दिल्ली के कोटला मुबारकपुर से गिरफ्तार किया गया और उनकी पुलिस हिरासत हासिल की गई। उसने धोखाधड़ी वाले खातों का संचालन करने और दिल्ली भर में एटीएम से नकदी में ठगी के पैसे निकालने की बात स्वीकार की। नकदी का इस्तेमाल उसके साथी सिमरनजीत सिंह उर्फ लवी और कमल इंसां के जरिए यूएसडीटी खरीदने में किया गया।

सभी आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद, अपराध को अंजाम देने में इस्तेमाल की गई। निम्नलिखित वस्तुएं उनके कब्जे से बरामद की गईं । पांच मोबाइल फोन, एक लैपटॉप, पीएनबी की चार पास बुक आरोपियों की प्रोफाइल 1. 2. 3. 4. 5. 6. आरोपी हिमांशु बैसोया पुत्र जैनेश बैसोया निवासी मकान नंबर 2011/डी, चौथी मंजिल, पिलांजी, कोटला मुबारकपुर, दिल्ली-110003, उम्र 23 साल, बीसीए है और फिलहाल बेरोजगार है। वह मौजूदा साइबर क्राइम मामले का मास्टरमाइंड है। उसने बैंक खातों का संचालन किया, एटीएम से ठगी गई राशि नकद निकाली, कमल इंसां और सिमरनजीत सिंह उर्फ लवी से नकद में यूएसडीटी खरीदी और आगे यूएसडीटी को उच्च मार्जिन पर अपने संपर्कों में स्थानांतरित कर दिया। आरोपी कमल इंसां उर्फ कमल अवाना पुत्र हेमराज इंसां निवासी एच. नंबर एम-11, गली नंबर 10, सौरव विहार, जैतपुर, बदरपुर, दिल्ली, उम्र 29 वर्ष इंटीरियर डिजाइनर। वह मार्जिन के आधार पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर यूएसडीटी का सक्रिय रूप से व्यापार कर रहा था और नकद राशि प्राप्त करने के बाद आरोपी हिमांशु वर्मा को यूएसडीटी उपलब्ध कराता था। आरोपी सिमरनजीत सिंह उर्फ लवी पुत्र श्री मंजीत सिंह निवासी एच. नंबर सी-20, सौरव विहार, जैतपुर, बदरपुर, दिल्ली, उम्र 28 वर्ष, कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातक बीसीए है और वर्तमान में बेरोजगार है। उसने हिमांशु बैसोया को आरोपी कमल इंसां से मिलवाया और धोखाधड़ी की भी साजिश रची।

दुनिया में मित्रविहीन क्यों होता जा रहा है भारत?

राजेंद्र शर्मा

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि करीब पांच दर्जन सांसदों तथा कूटनीतिज्ञों के सात दलों के 33 देशों के दौरे से भी, कम से कम विदेश नीति के मामले में मोदी सरकार ने कोई सबक नहीं लिया लगता है। यह तब है, जब जैसा कि आम तौर पर सभी जानते भी हैं और मानते भी हैं, 7 से 10 मई के बीच भारत और पाकिस्तान के बीच हुई सैन्य झड़पों की पृष्ठभूमि में मोदी सरकार को, जो राजनीति में उभयपक्षीयता के विचार से सिर्फ कोसों दूर ही नहीं है, एक प्रकार से इस तरह की परंपराओं की शत्रु ही बनी रही है, दुनिया भर में इन बहुदलीय प्रतिनिधिमंडलों को भेजने की जरूरत इसीलिए महसूस हुई थी कि, उक्त टकराव के संदर्भ में भारत की विदेश नीति पूरी तरह से विफल रही थी। जैसा कि सभी ने दर्ज किया था, मोदी राज की विदेश नीति के 11 साल का हासिल यही था कि छोटे से बड़ा तक और विकसित से पिछड़ा तक, दुनिया का एक भी देश इस टकराव में स्पष्ट रूप से भारत का पक्ष लेने के लिए सामने नहीं आया था। और तो और, रूस जैसा भारत का सदाबहार मददगार और समर्थक तक, दुविधाग्रस्त नजर आ रहा था। बाकी सारी दुनिया को छोड़ भी दें, तो हमारा एक भी पड़ौसी देश, दक्षिण एशिया का कोई भी देश, भारत के साथ खड़ा नहीं हुआ था। अलबत्ता, अफगानिस्तान ही इस मामले में अपवाद साबित हुआ था, जहां की तालिबान सरकार के साथ बढ़ती नजदीकियों के बावजूद, भारत अब तक उसे कूटनीतिक मान्यता देने की हिकमत नहीं जुटा पाया है।

इस कूटनीतिक आउटरीच कार्यक्रम के बाद, इन बहुदलीय प्रतिनिधिमंडलों के सदस्यों से प्रधानमंत्री मोदी ने बहु-प्रचारित मुलाकात भी की थी। इस मुलाकात के संबंध में प्रेस में आए कुछ ब्यौरों में, प्रतिनिधिमंडलों के सदस्यों द्वारा इन दौरों में बने अपने इंप्रैशन बेलाग तरीके से प्रधानमंत्री से साझा किए जाने के जोर-शोर से दावे किए गए हैं, हालांकि विवरणों पर प्रायः चुप्पी साध ली गयी है। फिर भी यह मानने का कोई कारण नहीं है कि कम से कम राजनीतिक राय के इंद्रधनुष के अधिकांश रंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले सांसदों ने सारे संकोच के बावजूद, इन विदेश दौरों के अपने वास्तविक इंप्रैशन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, कम से कम इशारतन, प्रधानमंत्री से साझा नहीं किए होंगे। इनमें इसे समझने के लिए कुछ-न-कुछ संकेत भी जरूर रहे होंगे कि आंतकवाद जैसे मुद्दे पर भी भारत आज दुनिया में इतना अलग-थलग क्यों है? लेकिन, प्रधानमंत्री की उक्त बैठक के बाद का मोदी सरकार का प्रकट कूटनीतिक आचरण यही दिखाता है कि यह सरकार कुछ भी न सीखने को तैयार है और न ही रत्तीभर बदलने को।

उक्त प्रतिनिधिमंडलों की स्वदेश वापसी के फौरन बाद, मोदी सरकार की कूटनीति की महत्वपूर्ण परीक्षा एक नहीं, दो अलग-अलग, किन्तु परस्पर जुड़े हुए मामलों में हुई। इनमें से पहला मामला इजरायली नरसंहार की शिकार गज़ा की जनता की प्राण रक्षा के लिए, तुरंत युद्घ विराम कराने के संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव का था। गज़ा पर दो साल से ज्यादा से जारी इजरायली हमलों में साठ हजार से ज्यादा असैनिक मारे जा चुके हैं, जिनमें बहुमत बच्चों और महिलाओं का ही है। इस नरसंहारकारी युद्घ में इजरायल सिर्फ हवाई हमलों से लेकर जमीनी चढ़ाई तक, सैन्य हथियारों का ही इस्तेमाल नहीं कर रहा है, बल्कि घेरेबंद गज़ा में न्यूनतम आपूर्तियां तक पहुंचने के रास्ते बंद करने के जरिए, भूख को समान रूप से घातक हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है और गजावासियों को सामूहिक दंड के रूप में भुखमरी में धकेल रहा है। हैरानी की बात नहीं है कि विश्व न्यायिक मंचों ने इस मामले में इजरायल को युद्घ अपराधों का दोषी तक करार दिया है।

स्वाभाविक रूप से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रचंड बहुमत से गज़ा के खिलाफ जंग बंद किए जाने का प्रस्ताव स्वीकार किया। 149 देशों ने प्रस्ताव के समर्थन में वोट किया, जबकि इजरायल तथा अमेरिका समेत कुल 12 देशों ने प्रस्ताव खिलाफ वोट किया। लेकिन पूरी तरह से अप्रत्याशित न होते हुए भी, बहुतों को हैरान करते हुए, भारत ने उन 18 अन्य देशों के साथ वोट किया, जिन्होंने खुद को इस प्रस्ताव पर मतदान से अलग रखे जाने के लिए मतदान किया था। भारत का यह रुख इसलिए और भी हैरान करने वाला था कि इससे पहले भारत ने, दो साल पहले इसी तरह के जंगबंदी के संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के पक्ष में वोट किया था। यह समझना वाकई तर्क से परे था कि संयुक्त राष्ट्र संघ के पिछले और इस ताजातरीन प्रस्ताव के बीच ऐसा क्या बदल गया था, जो मोदी का भारत जंगबंदी की मांग का समर्थन करना छोड़कर, इस मांग पर तटस्थता का रुख अपनाने पर आ गया था! बेशक, गज़ा के खिलाफ इजरायली सैन्य कार्रवाइयों की शुरूआत से ही मोदी सरकार, फिलिस्तीन के समर्थन के भारत के परंपरागत रुख के विपरीत, जिसकी जड़ें भारत के अपने साम्राज्यवादविरोधी स्वतंत्रता संग्राम में थीं, आमतौर पर इजरायलपरस्त रुख ही अपनाए रही है। लेकिन, गज़ा में नरसंहार रोके जाने पर भी तटस्थ हो जाने की हद तक इजरायलपरस्ती तो, मोदी सरकार के मानकों के हिसाब से भी नयी ही है। कहने की जरूरत नहीं है कि अपनी इस पल्टी से भारत ने खुद को दुनिया भर से, जिसमें जाहिर है कि सबसे बड़ी संख्या विकासशील देशों की ही है, अलग ही कर लिया। यहां तक कि भूटान जैसे देश ने भी भारत से भिन्न रुख अपनाते हुए, प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया।

इसके फौरन बाद, मोदी राज की विदेश नीति की दूसरी परीक्षा भी हो गयी। इस परीक्षा का भी संबंध इजरायली आक्रामकता से था, जिसका प्रदर्शन इजरायल पश्चिमी विकसित दुनिया के पूरे-पूरे समर्थन के बल पर ही करता आया है। गजा. के खिलाफ अपने नरसंहारकारी हमले के बीच, इजरायल ने अचानक ईरान पर सैकड़ों जंगी जहाजों, ड्रोनों और मिसाइलों से हमला कर दिया। इस हमले में ईरानी सेना के कुछ शीर्ष नेताओं तथा देश के कई प्रमुख नाभिकीय वैज्ञानिकों समेत सैकड़ों लोग मारे गए। इनमें से अनेक की टार्गेट कर के हत्याएं की गयी थीं, जिसमें इजरायल को खास महारत हासिल है। स्वाभाविक रूप से, ईरान ने इस हमले का जवाब देने का ऐलान किया है और इससे दोनों के बीच व्यापक लड़ाई छिड़ सकती है।

इजरायल ने यह हमला इसके नाम पर किया है कि वह ईरान को नाभिकीय हथियार बनाने से रोकना चाहता है और इसलिए उसके नाभिकीय प्रतिष्ठान पर हमला किया गया है। लेकिन, इजरायल को जो पश्चिम की कृपा से नाभिकीय हथियार लिए बैठा है, इसके नाम पर हमला करने का अधिकार किसने दिया है? फिर यह बहाना भी कितना झूठा है, इसका अंदाजा एक इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि यह हमला, ठीक ईरान के नाभिकीय कार्यक्रम के प्रश्न पर ही, अमेरिका और ईरान के बीच जारी वार्ताओं के बीच में किया गया है, जब दोनों के बीच पांच दौर की वार्ता हो चुकी थी और छठे दौर की वार्ता अगले ही दिन होनी थी। इस हमले में ईरानी पक्ष के वार्ताकारों की चुन-चुनकर हत्या कर दी गयी। हैरानी की बात नहीं है कि इस हमले की व्यापक रूप से निंदा हो रही है। लेकिन, शंघाई सहयोग संगठन ने, जिसका भारत पूर्ण सदस्य है, जब इस इजरायली हमले की निंदा के एक प्रस्ताव पर विचार करने के लिए बैठक बुलाई, मोदी के भारत ने इस बैठक से ही खुद को अलग कर लिया। इस सबके बाद, 'ग्लोबल साउथ' यानी विकासशील दुनिया का 'प्रवक्ता' होने के भारत के दावे, एक भद्दा मजाक ही लगते हैं।

बेशक, यह महज इजरायल प्रेम का ही मामला नहीं है। मोदी राज के इजरायल प्रेम का सीधा संबंध, इजरायल की पीठ पर अमेरिका समेत समूची साम्राज्यवादी दुनिया का हाथ होने से है। मोदी राज की विदेश नीति की मुख्य पहचान, जो उसे भारत की स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत और आजादी के बाद के पांच दशक से ज्यादा की भारत की विदेश नीति से बुनियादी तौर पर अलग करती है, उसका भारत को साम्राज्यवादी मंसूबों का जूनियर पार्टनर बना देना है। यह दूसरी बात है कि मोदी राज में इजरायल प्रेम में, अमेरिका समेत साम्राज्यवादी ताकतों के प्रेम के अलावा एक तत्व और भी शामिल है, जो इस विदेश नीति को उसकी घरेलू नीति का प्रत्यक्ष विस्तार बनाता है। यह तत्व है, मुस्लिमविरोध, जो संघ-भाजपा के मुस्लिम विरोध का दोस्ताना, इजरायली यहूदीवादियों के इस्लामविरोध से जोड़ता है।

इसी सब के चलते, मोदी राज के 11 साल में, खासतौर पर विकासशील दुनिया में, भारत की नैतिक प्रतिष्ठा ध्वस्त हो गयी है। जो भारत कभी गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से विकाशील दुनिया की सबसे भरोसेमंद आवाज हुआ करता था, अब अपने मुंह से विकासशील दुनिया की ओर से बोलने के दावे भले ही करे, विकासशील देश उस पर रत्तीभर विश्वास नहीं करते हैं। दूसरी ओर, पश्चिम की पंगत में किसी तरह शामिल होने के लालच में विकासशील दुनिया के हितों की ओर से मुंह मोड़ने के ईनाम के तौर पर उसे निचली मेजों के न्यौते जरूर मिल रहे हैं, लेकिन वहीं तक, जहां तक सामराजी मंसूबों के लिए उसका उपयोग है। दूसरी ओर, मोदी राज में देश में जो कुछ हो रहा है और खासतौर पर धर्मनिरपेक्षता समेत सभी प्रमुख पहलुओं से जिस तरह जनतंत्र का त्याग किया जा रहा है, वह विकासशील दुनिया के साथ-साथ, पश्चिम की इस बारात में भी उसकी उपस्थिति को असहज और असामान्य बनाता है, और जिसका पता अनेकानेक सूचकांकों पर भारत के खराब प्रदर्शन से चलता है। नतीजा यह कि विश्व समुदाय में भारत का कद घटता जा रहा है और उसके मित्रों का दायरा तेजी से सिकुड़ता जा रहा है।

जैसे-तैसे कर के जी-7 के आउटरीच कार्यक्रम का न्यौता हासिल करने और शर्तों पर न्यौता हासिल करने के बाद, नरेंद्र मोदी जिस तरह लपक कर कनाडा समेत तीन देशों की पांच दिन की यात्रा पर रवाना हुए हैं, वह यही दिखाता है कि वर्तमान शासन में विदेश नीति, विदेश में नरेंद्र मोदी की छवि चमकाने का औजार भर बनकर रह गयी है, ताकि विश्व नेता की इस छवि के प्रतिबिंबन से, देश के लोगों को चकाचौंध किया जा सके। ऐसी विदेश नीति से ज्यादा समय तक तो विदेश में राष्ट्रीय गोदी पूंजीपति के हितों तक को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है, भारत जैसे विशाल देश के हितों को आगे बढ़ाने का तो सवाल ही कहां उठता है।

मध्यप्रदेश भाजपा : एक अनार और छह बीमारों के बीच घोड़ा पछाड़ युद्ध

(विशेष टिप्पणी : संजय पराते)

अनार के बारे में माना जाता है कि इसका नियमित सेवन स्वास्थ्यवर्धक है, शरीर में खून की मात्रा बढ़ाता है, दिमाग को तरो ताजा रखता है और बीमारी को दूर भगाता है। समस्या तब पैदा होती है, जब अनार केवल एक हो और इसके सेवनकर्ता इच्छुक लोग एक से ज्यादा हो। तब यह अनार जी का जंजाल बन जाता है।

यही हाल मध्यप्रदेश का है। मुख्यमंत्री का पद एक है और दावेदार अनेक। आज भाजपा का हर नेता अपने स्वास्थ्य के लिए इस पद को हथियाना चाहता है। जिसके पास यह पद होता है, उसकी सारी बीमारियां छू-मंतर हो जाती है। जिसको इस पद से हटाया जाता है, उसकी काया बीमारियों का घर बन जाती है। इसलिए यहां की रामनामी सरकार के लिए मुख्यमंत्री का पद रामबाण औषधि है।

विधानसभा चुनाव के बाद यहां के तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान किस तरह हटाए गए, पूरी जनता जानती है। चुनाव में भाजपा को अपने बल-बूते प्रचंड विजय दिलाने वाले चौहान को बे-आबरू होकर अपने कूचे से जाना पड़ा। प्रधानमंत्री मोदी के एक लिफाफे ने, जिसमें नए मुख्यमंत्री का नाम लिखा था, उनकी कुर्सी छीन ली और न उन्हें, और न उनके समर्थकों को विद्रोह करने, हाईकमान को ललकारने का मौका मिला। प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजय वर्गीय को भी मन मारकर मोहन यादव के समर्थन में हाथ उठाना पड़ा, जबकि विधानसभा चुनाव की पूर्व संध्या से ही उनकी नजर इस कुर्सी पर थी। मोदी के एक लिफाफे ने उनकी पुख्ता दावेदारी को मिट्टी में मिला दिया। लिफाफे के मजमून के उजागर होते ही

भाजपा के कद्दावर नेता नरेंद्र सिंह तोमर भी कहीं के नहीं रहे।

ऑपरेशन सिंदूर को केंद्र में रखकर उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा और मंत्री विजय शाह ने जो बयान दिए, उससे भाजपा की छवि धूमिल ही हुई है। हालांकि, दोनों मंत्रियों ने ₹सरदार शाबाशी देगा₹ के अंदाज में भाजपा में अपना नंबर बढ़ाने के लिए ऐसे मुस्लिम विरोधी बयान दिए थे, ताकि देश और समाज में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की प्रक्रिया तेज हो। संघ-भाजपा चाहती भी ऐसा ही है। लेकिन आम जनता के बीच इन दोनों भाजपा नेताओं के बयान उल्टे पड़े। भाजपा की स्थिति ₹न उगलते बन रहा, न निगलते बन रहा₹ वाली बन गई है। ये दोनों महाशय भी मुख्यमंत्री पद के दावेदार हैं और मुख्यमंत्री मोहन यादव के जाने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन तब तक के लिए उनकी आंखों के कांटे बन गए हैं।

शिवराज सिंह चौहान, कैलाश विजय वर्गीय, नरेंद्रसिंह तोमर, जगदीश देवड़ा, विजय शाह -- इन सब गुटों को साधते-संभालते मोहन यादव घनचक्कर बन गए है। लेकिन एक और कद्दावर दावेदार है ज्योतिरादित्य सिंधिया, जो कहने के लिए तो केंद्र में संचार मंत्री हैं, लेकिन राज्य की राजनीति के केंद्र से इतने गायब हैं कि अपने समर्थक विधायक तक को छोटी मोटी पोस्ट पर नवाजने के काबिल नहीं रह गए हैं। उनकी नाराजगी का आलम यह है कि भाजपा के पचमढ़ी शिविर से उनके समर्थक विधायक पूरी तरह से गायब रहे। यह हाल तब है, जब पचमढी शिविर का उदघाटन केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने और समापन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किया था।

बताया जाता है कि इस शिविर में घोड़ा पछाड़ नाम का एक सांप निकल आया था, जिसने शिविर में सनसनी फैला दी थी। इसे घोड़ा पछाड़ इसलिए कहा जाता है कि यह घोड़े-जैसी तेज रफ्तार से दौड़ सकता है। यह सांप लगभग डेढ़ से दो मीटर लंबा होता है। हालांकि इस सांप को वन विभाग के सर्प-मित्रों ने पकड़कर दूर कही छोड़ दिया, लेकिन सांप की अनुपस्थिति से शिविर की सनसनी में कोई कमी नहीं आई।

मीडिया खबर दे रहा है कि अपना वजूद जताने के लिए शिवराज सिंह चौहान का अपने गृह क्षेत्र बुदनी से पदयात्रा शुरू है। अंदरखाने भाजपा सुलग रही है और उसकी आंच में कोई हाथ ताप रहा है, तो कोई रोटी सेंक रहा है। मध्यप्रदेश भाजपा में घोड़ा पछाड़ युद्ध जारी है। सब एक-दूसरे को काटने पर तुले हैं और मोहन यादव इस रणक्षेत्र में अपना पद साध रहे हैं। लेकिन पद साधना एक बात है और सरकार चलाना दूसरी बात। क्या आप सोचते हैं कि मध्यप्रदेश में वाकई सरकार चल रही है?

(टिप्पणीकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

महाराष्ट्र में कांग्रेस को झटका, पूर्व सीएम की बहू ने सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ बीजेपी ज्वाइन की

परिवहन विशेष न्यूज

महाराष्ट्र में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के दिग्गज नेता वसंत दादा पाटिल की बहू जयश्री पाटिल ने आज अपने सांगली जिले के सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ बीजेपी ज्वाइन कर ली। इस दौरान महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस, महाराष्ट्र बीजेपी प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले और अन्य नेता उपस्थित रहे।

बीजेपी को क्या फायदा होगा?

वसंतदादा पाटिल की बहू के कांग्रेस छोड़ने से बीजेपी को काफी फायदा मिलेगा। जयश्री पाटिल के बीजेपी में शामिल होने से पश्चिमी महाराष्ट्र में बीजेपी की ताकत बढ़ेगी और खासकर मराठा वोट बैंक बीजेपी की तरफ आएगा। अब तक मराठा वोट बैंक शरद पवार, अजित पवार, कांग्रेस पार्टी से जुड़ा रहा है लेकिन अब बीजेपी भी पूर्व सीएम वसंतदादा पाटिल के परिवार को जोड़कर अपना वर्चस्व बढ़ाएगी।

वसंत दादा पाटिल थे महाराष्ट्र कांग्रेस के कद्दावर नेता

वसंत दादा पाटिल महाराष्ट्र के एक प्रमुख राजनेता थे, जो स्वतंत्रता सेनानी भी रहे। उनका जन्म 13 नवंबर 1917 को सांगली जिले के पद्माळे गांव में एक शेतकरी परिवार में हुआ और मृत्यु 1

मार्च 1989 को हुई। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता थे और महाराष्ट्र की राजनीति में उनकी काफी पकड़ थी। वसंत दादा ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी और विनोबा भावे जैसे नेताओं से प्रेरणा ली और सत्याग्रही के रूप में कई बार जेल गए। सांगली में ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल थे, जिसमें एक घटना में उन्हें गोली भी लगी थी। वह महाराष्ट्र के सीएम रहे और राजस्थान के राज्यपाल के रूप में भी काम किया। उन्होंने कांग्रेस को मजबूत करने के लिए काफी काम किया। उनके सहकारी कार्यों के लिए 1967 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

1978 में शरद पवार ने वसंत दादा की सरकार के खिलाफ बगावत की थी, जिसके कारण उनकी सरकार गिर गई थी। वसंत दादा ने ग्रामीण महाराष्ट्र में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ाया और सामाजिक एकता पर जोर दिया। वसंत दादा को उनकी सादगी, व्यवहारिकता और जनता से जुड़ाव के लिए जाना जाता था। लोग उन्हें प्यार से "दादा" कहते थे।

51वें जी-7 शिखर सम्मेलन 15-17 जून 2025 कनाडा में भारत का आगाज़

भारत भविष्य में जी-7 का सदस्य बन सकता है,क्योंकि भारत की आर्थिक,राजनीतिक, वैश्विक ताकत तेजी से बढ़ रही है। भारत की वैश्विक भूमिका- चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वैश्विक चुनौतियों में योगदान,जियो पोलिटिकल महत्व सहित अनेको वैश्विक उपलब्धियों से प्रतिष्ठा बढ़ी- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा का डंका पूरी दुनियाँ में बज रहा है,जिसका सटीक उदाहरण अभी 17 जून 2025 को माननीय भारतीय पीएम द्वारा जी-7शिखर सम्मेलन के अंतिम दिन कनाडा पहुंचे व सम्मेलन अटेंड किया, हालांकि भारत इसका सदस्य नहीं है, फिर भी 2019 से लगातार एक विशिष्टता से आमंत्रित हो रहे हैं।सम्मेलन में भाग लेकर वैश्विक विकसित देशों से चर्चा कर विश्व को अपने अनुभव साझा कर रहा हैं,ताकि पूरी दुनियाँ की बेहतरीन के लिए बेहतर योगदान दिया जा सके।

आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि हमारे पीएम को जी-7 में आमंत्रित किया गया जिससे हम उन सटीक अंदाज लगा सकते हैं कि, भारत की प्रतिष्ठा में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हुई है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र से आज दिन भर इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर माननीय पीएम के कनाडा पहुंचने से लेकर अंत तक नजर गाड़ाए राखी। सम्मेलन के दौरान हर विकसित देश माननीय पीएम से मिलना चाहता था,भारत से नजदीकियां बनाए रखने के भाव बड़े-बड़े नेताओं में देखे जो रेखांकित करने वाली बात है। चूँकि भारत का 51 वें जी-7 शिखर सम्मेलन 15-17 जून 2025 कनाडा में भारत का आगाज हुआ इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत भविष्य में जी-7 का सदस्य बन सकता है,क्योंकि भारत आर्थिक, राजनीतिक, वैश्विक ताकत बनकर तेजी से बढ़ता चला जा रहा है।

साथियों बात अगर हम जी-7 सम्मेलन 2025 कनाडा के प्रमुख बिंदुओं और उद्देश्यों को समझने की करें तो, जी-7 देश भारत को एक ऐसे शक्तिशाली साझेदार के रूप में देखते हैं, जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की आक्रामकता का जवाब दे सकता है. भारत क्वाड समूह (भारत, अमेरिका, जापान, औरऑस्ट्रेलिया) का हिस्सा है, जो चीन के प्रभाव को संतुलित करने में महत्वपूर्णहै,दरअसल 2019 से भारत के पीएम को दुनिया के अमीर देश अपनी बैठक में हर साल बुलाते हैं, यह भारत की वैश्विक स्थिति और रणनीतिक महत्व को दर्शाता है।

अमेरिका के हडसन इंस्टीट्यूट द्वारा 14 मई, 2023 को प्रकाशित लेख, जिसका शीर्षक है इंडिया is ऑलवेज इन्विटेड टू जी-7. व्हाई इज डैट सो इम्पोर्टेन्ट? ने भी भारत की दुनिया में बढ़ती ताकत और प्रासंगिकता को महसूस किया था,लेख में अनुमान लगाया गया है कि भारत भविष्य में जी-7 का औपचारिक सदस्य बन सकता है, क्योंकि उसका आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव बढ़ रहा है। हालांकि, भारत की ओर से कुछ हिचकिचाहट हो सकती है।

जी-7 2025 के एजेंडा के प्रमुख बिंदुः(1) वैश्विक आर्थिक स्थिरता और वृद्धि मुद्रास्फीति, आर्थिक मंदी की आशंका, वैश्विक व्यापार में असंतुलन, आपूर्ति श्रृंखला की सुरक्षा (2) ऊर्जा सुरक्षा और डिजिटल संक्रमणआर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग, क्रिटिकल मिनरल्स, नेट-ज़ीरो लक्ष्यऊर्जा आत्मनिर्भरता के लिए नवीकरणीय स्रोतों और हरित हाइड्रोजन पर बल (3) शांति और सुरक्षा, इज़राइल -ईरान संघर्ष, यूक्रेन–रूस युद्ध, आतंकवाद उन्मूलन, साइबर सुरक्षा अंतरराष्ट्रीय मानवीय सहायता और शरणार्थियों के संरक्षण पर चर्चा, जी-7 देश भारत को एक ऐसे शक्तिशाली साझेदार के रूप में देखते हैं, जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की आक्रामकता का जवाब दे सकता है।

जी-7 के प्रमुख उद्देश्यः (1) वैश्विक आर्थिक स्थिरता और वृद्धि को बढ़ावा देना (2) वित्तीय पारदर्शिता और सहयोग (3) जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय मुद्दों पर नेतृत्व(5)वैश्विक स्वास्थ्य (जैसे कोविड -19) के संकट में सहयोग (6) लोकतंत्र और मानवाधिकारों का समर्थन, कनाडा के अल्बर्टा राज्य के कैननास्किस में जी7 समिट का आज आखिरी दिन है। पीएम

मोदी अब तक 6 वर्ल्ड नेताओं से मुलाकात कर चुके हैं। इनमें फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज, मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम पार्डो, ऑस्ट्रेलिया पीएम एंथनी अल्बनीज, द. अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा, साउथ कोरिया राष्ट्रपति लीजे म्युंग शामिल हैं।

साथियों बात अगर हम भारत की बढ़ती भूमिका उपस्थित प्रतिष्ठा को समझने की करें तो,(1)भारत इस साल ही दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना हैतमाम वैश्विक संस्थाओं का मानना है कि भारत एक साल के अंदर ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का खिताब पा सकता है, जी 7 देश, जो विश्व की सबसे उन्नत अर्थव्यवस्थाओं का समूह हैं, भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं (सप्लाई चेन) में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी मानते हैं, कनाडाई पीएम ने शिखर सम्मेलन में भारत को आमंत्रित करते हुए कहा कि भारत का होना आर्थिक और रणनीतिक चर्चाओं के लिए जरूरी है क्योंकि यह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के केंद्र में है (2)-जिओ पोलिटिकल महत्व, भारत विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाला देश और एक उभरती हुई शक्ति है, जी-7 देश भारत को एक लोकतांत्रिक और जिम्मेदार शक्ति के रूप में देखते हैं, जो चीन और रूस जैसे अधिनायकवादी देशों के प्रभाव को संतुलित करने में मदद कर सकता है,भारत का इंडो- पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक महत्व, खासकर चीन के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में, जी-7 के लिए महत्वपूर्ण है (3)-ग्लोबल साउथ का प्रतिनिधित्व-भारत को ग्लोबल साउथ का एक प्रमुख आवाज माना जाता है,जी 7 देश, जो मुख्य रूप से विकसित देश हैं, भारत जैसे उभरते देशों को शामिल करके वैश्विक मुद्दों पर व्यापक सहमति बनाना चाहते हैं,भारत की जी-20 अध्यक्षता (2023) ने इसे और मजबूत किया, जिससे जी7 को भारत की राय को नजरअंदाज करना मुश्किल हो गया, हडसन इंस्टिट्यूट के लेख में विदेश मंत्री एस. जयशंकर के 2022 के बयान का हवाला देते हुए लिखा गया कि यूरोप को यह मानसिकता छोड़नी होगी कि यूरोप की समस्याएँ विश्व की समस्याएं हैं, लेकिन विश्व की समस्याए यूरोप कीसमस्याएं नहीं हैं. भारत की जी-20 अध्यक्षता और वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ सम्मेलन (2023) ने इसे ग्लोबल साउथ के हितों को जी-7 जैसे मंचों पर उठाने में सक्षम बनाया है। (4) वैश्विक चुनौतियों में योगदान--जी-7 शिखर सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, डिजिटल परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, और अंतरराष्ट्रीय शांति जैसे मुद्दों पर चर्चा होती हैय भारत इन क्षेत्रों में अपनी नीतियों और तकनीकी प्रगति (जैसे नवीकरणीय ऊर्जा और डिजिटल अर्थव्यवस्था) के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दे सकता हैइसके साथ ही भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के नाते, जी-7 के लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ मैच करता है. यह इसे उन देशों से अलग करता है जो जी-7 के लिए रणनीतिक चुनौतियां पेश करते हैं, जैसे कि चीन।(5) मोदी की व्यक्तिगत छवि--2019 से हर जी-7 शिखर सम्मेलन में भारत को आमंत्रित किया गया है (2020 को छोड़कर, जब कोविड-19 के कारण शिखर सम्मेलन रद्द हुआ था). यह भारत की बढ़ती वैश्विक हैसियत और मोदी के नेतृत्व में भारत की सक्रिय विदेश नीति को दर्शाता है।पीएम की वैश्विक मंचों पर सक्रियता और उनकी कूटनीतिक पहल (जैसे जी-20 में भारत की भूमिका) ने उन्हें एक प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित किया है. जी-7 देश भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए मोदी के साथ सीधे संवाद को महत्व देते हैं(6) चीन के मुकाबले भारत की रणनीतिक भूमिका--आज अमेरिका सहित पूरे पश्चिम की सबसे बड़ी चिंता चीन है. इसका कारण चीन की नीतियां तो अफेंसिव हैं हीं, चीन में लोकतंत्र का न होना भी एक बहुत बड़ा कारण है, हडसन इंस्टिट्यूट के लेख में तर्क दिया गया है कि भारत एक जिम्मेदार और लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में उभर रहा है, जो चीन जैसे अधिनायकवादी देशों के प्रभाव को संतुलित कर सकता है, उदाहरण के लिए, दक्षिण चीन सागर में चीन के क्षेत्रीय दावों को अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने 2016 में खारिज कर दिया था, लेकिन चीन ने इसे नजरअंदाज किया. इसके विपरीत, भारत ने नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का समर्थन किया है,जी-7 देश भारत को एक ऐसे शक्तिशाली साझेदार के रूप में देखते हैं, जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की आक्रामकता का जवाब दे सकता है,(7) भारत जैसे देश ही बचा सकेंगे जी-7 की प्रासंगिकता, हडसन इंस्टीट्यूट की लेख की मानें तो जी-7 का प्रभाव घट रहा है, और भारत जैसे देशों को शामिल करना इसे फिर से प्रासंगिक बनाने का एक तरीका हो सकता है।जी-7 देश भारत को एक लोकतांत्रिक और जिम्मेदार शक्ति के रूप में देखते हैं, जो रूस और चीन जैसे देशों के विपरीत है,लेख में भारत कीहिचकिचाहट को भी रेखांकित किया गया था. भारत एक तटस्थ और स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करता है, और जी-7 जैसे पश्चिमी-केंद्रित समूह में शामिल होने से उसकी नॉन-अलीज्ड मूवमेंट की नीति प्रभावित हो सकती है, इसके अलावा, चीन के साथ तनाव बढ़ने का जोखिम भी है।

अतः अगर हम पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 51वें जी-7 शिखर सम्मेलन 15-17 जून 2025 कनाडा में भारत का आगाज़ भारत भविष्य में जी-7 का सदस्य बन सकता है,क्योंकि भारत की आर्थिक, राजनीतिक, वैश्विक ताकत तेजी से बढ़ रही है।भारत की वैश्विक भूमिका- चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वैश्विक चुनौतियों में योगदान, जियो पोलिटिकल महत्व सहित अनेको वैश्विक उपलब्धियों से प्रतिष्ठा बढ़ी।

टोयोटा की इस हाइब्रिड एसयूवी पर बंपर डिस्काउंट, और भी मिल रहे कई ऑफर

परिवहन विशेष न्यूज

टोयोटा जून 2025 में अपनी एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder पर 70 हजार रुपये तक की छूट दे रही है। यह ऑफर पेट्रोल हाइब्रिड और सीएनजी वेरिएंट पर लागू है। पेट्रोल वेरिएंट पर 15 हजार का कैश डिस्काउंट और 50 हजार का एक्सचेंज बोनस है। हाइब्रिड वेरिएंट पर 20 हजार का कैश डिस्काउंट और 50 हजार का एक्सचेंज बोनस मिल रहा है।

नई दिल्ली। जून 2025 में टोयोटा अपनी एसयूवी पर शानदार ऑफर का एलान किया है। यह ऑफर Toyota Urban Cruiser Hyryder पर मिल रहा है। इस महीने इस कार पर 70 हजार रुपये तक की छूट दी जा रही है, लेकिन यह छूट जून 2025 या स्टॉक रहने तक ही वैलिड है। टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर पर मिल रही छूट में कैश डिस्काउंट, एक्सचेंज बोनस और एक्स्ट्रा बेनिफिट्स भी शामिल है। आइए जानते हैं कि इसके किस वेरिएंट पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है।

किस वेरिएंट पर कितना डिस्काउंट?

toyota urban cruiser hyryder के पेट्रोल वेरिएंट पर 15 हजार रुपए तक का कैश डिस्काउंट, 50 हजार रुपए तक का एक्सचेंज बोनस ऑफर किया जा रहा है। हाइब्रिड वेरिएंट पर 20 हजार रुपए तक का कैश डिस्काउंट, 50 हजार रुपए तक का एक्सचेंज बोनस दिया जा रहा है। इसके सीएनजी वेरिएंट पर 15 हजार रुपए तक का कैश डिस्काउंट मिल रहा है। इसके पेट्रोल और हाइब्रिड वेरिएंट पर एक्सटेंडेड वारंटी और एक्सेसरीज भी दिया जा रहा है। इसके साथ ही इसपर कंपनी कॉर्पोरेट डिस्काउंट भी दे रही है।

Toyota Urban Cruiser Hyryder की कीमत

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर के पेट्रोल वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 11.14 लाख रुपए, हाइब्रिड वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 16.66 लाख रुपए और CNG वेरिएंट की 13.23 लाख रुपए एक्स-शोरूम कीमत है।

Toyota Urban Cruiser Hyryder के फीचर्स

इसके फीचर्स की बात करें, तो यह कई बेहतरीन सुविधाओं से लैस है। इसमें 9-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, वेंटिलेटेड फ्रंट सीटें, वायरलेस फोन चार्जर, पैनोरमिक सनरूफ, 360 डिग्री कैमरा और एम्बिएंट लाइटिंग जैसे फीचर्स मिलते हैं। इसके अलावा, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, क्रूज कंट्रोल, एयर प्योरीफायर, और रियर एसी वेंट भी दिया जाता है।

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर में पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS), व्हीकल स्टेबिलिटी कंट्रोल (वीएससी), और आईएसओफिक्स चाइल्ड सीट एंकर जैसे फीचर्स दिए जाते हैं।

ट्रायम्फ स्पीड टी4 नए रंगरूप में लॉन्च, पहले से ज्यादा हुई अट्रैक्टिव

परिवहन विशेष न्यूज

ट्रायम्फ इंडिया ने अपनी लोकप्रिय बाइक Triumph Speed T4 को नए बाजा ऑरेंज कलर में लॉन्च किया है। इस नए रंग के साथ बाइक की एक्स-शोरूम कीमत 2.05 लाख रुपये है। इसमें 398.15cc का लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 31 PS की पावर और 36 Nm का टॉर्क पैदा करता है। बाइक में टेलिस्कोपिक फोर्क और मोनोशॉक सस्पेंशन दिया गया है।

नई दिल्ली। ट्रायम्फ इंडिया अपनी पॉपुलर बाइक Triumph Speed T4 को नए कलर के साथ भारत में लॉन्च किया है। इस नए कलर ऑप्शन का नाम बाजा ऑरेंज है। यह नया कलर बाइक को काफी अट्रैक्टिव बनाता है। बाइक की एक्स-शोरूम कीमत 2.05 लाख रुपये रखी गई है। आइए स्पीड T4 के नए कलर और बाइकी के फीचर्स के बारे में विस्तार में जानते हैं।

Triumph Speed T4 का नया कलर

ट्रायम्फ स्पीड T4 का नया बाजा ऑरेंज कलर देखने में बाइक पर काफी शानदार लगता है। इससे टैंक पर ऑरेंज और ग्रे का ड्यूल-टोन फिनिश दिया गया है। यह कलर ट्रायम्फ की बड़ी बाइक्स जैसे स्ट्रीट ट्रिपल 765 R और स्क्रैम्बलर 1200 XE के ऑरेंज से मिलता-जुलता है। इस बाइक को कुल 5 कलर ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है और उसमें से बाजा ऑरेंज उनमें सबसे नया है।

Triumph Speed T4 का इंजन

ट्रायम्फ स्पीड T4 में कलर के अलावा और किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें अभी भी 398.15cc के लिक्विड-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 31 PS पावर और 36 Nm टॉर्क जनरेट करता है।

Triumph Speed T4 का सस्पेंशन

इसमें टेलिस्कोपिक फोर्क और मोनोशॉक सस्पेंशन दिया गया है और दोनों पहियों में 17-इंच अलॉय व्हील्स का इस्तेमाल किया गया है। ब्रेकिंग के लिए इसमें 300mm फ्रंट डिस्क और 230mm रियर डिस्क ब्रेक दिया गया है। दोनों ही डुअल-चैनल ABS के साथ आते हैं। इसके डिस्प्ले में एनालॉग स्पीडोमीटर और डिजिटल स्क्रीन है, जो टैकोमीटर, फ्यूल लेवल, ट्रिप, और ओडोमीटर दिखाती है।

Triumph Speed T4 की स्पीड

ट्रायम्फ स्पीड T4 को भारत में 2.05 लाख रुपये रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश की जाती है। भारत में इसका मुकाबला हीरो मावेरिक 440 और रॉयल एनफील्ड हंटर 350 जैसी रेट्रो मोटरसाइकिल से देखने के लिए मिलता है।

नितिन गडकरी ने की वार्षिक फास्टैग पास की घोषणा, नुकसान से बचने के लिए समझें ये 5 जरूरी बातें

परिवहन विशेष न्यूज

टोल टैक्स के नए नियम केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री Nitin Gadkari की ओर से Annual Fastag Pass सुविधा को शुरू करने की घोषणा कर दी गई है। जिसके बाद कई लोग इसे लेने की तैयारी कर रहे हैं। अगर आप भी इस लिस्ट में शामिल हो चुके हैं तो नुकसान से बचने के लिए किन 5 पाइंट्स को समझना जरूरी है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री Nitin Gadkari की ओर से Annual Fastag Pass को लेकर 18 जून 2025 को बड़ी घोषणा (Nitin Gadkari announcement) की गई है। जिसके बाद सभी लोग अपने अपने तरीके से इस सुविधा का फायदा उठाने की तैयारी कर रहे हैं। अगर आप भी इस पास को लेने की तैयारी कर रहे हैं तो नुकसान से बचने के लिए किन पांच चीजों का ध्यान रखना काफी जरूरी है। हम आपको इस खबर में समझा रहे हैं।

किस तरह के वाहनों के लिए होगा पास

नितिन गडकरी की ओर से यह बताया गया है कि एनुअल फास्टैग पास को हर तरह के वाहन पर उपयोग में नहीं लाया जा सकेगा। इस पास को सिर्फ निजी वाहनों के लिए ही एक्टिव किया जा सकेगा। जिनमें प्राइवेट कार, एसयूवी, एमपीवी, वैन शामिल होंगी। किसी भी तरह के व्यवसायिक वाहन पर इस पास को जारी नहीं किया जा सकेगा।

सभी के लिए जरूरी नहीं

नितिन गडकरी की ओर से भले ही Annual Fastag Pass की घोषणा कर दी गई है लेकिन इसे खरीदना सभी के लिए जरूरी नहीं है। आप अपनी गाड़ी पर फास्टैग का उपयोग करते हैं, लेकिन महीने में एक या दो बार ही आप नेशनल हाइवे या एक्सप्रेस वे का उपयोग करते हैं तो एनुअल फास्टैग पास आपके लिए फायदेमंद नहीं होगा, बल्कि इसको लेने से आपको हजारों रुपये का नुकसान भी हो सकता है।

कहां से मिलेगा

केंद्रीय मंत्री की ओर से जानकारी दी गई है कि इस पास को मौजूदा फास्टैग से ही उपयोग किया जा सकता है। इसको एक्टिवेट और रिन्यू करने के लिए जल्द ही राजमार्ग यात्रा एप, NHAI और MoRTH की वेबसाइट पर अलग से लिंक को उपलब्ध करवाया जाएगा। जिसके जरिए आसानी से मौजूदा फास्टैग के साथ ही इसे एक्टिव किया जा सकेगा।

साल में मिलेंगी 200 ट्रिप

Nitin Gadkari के मुताबिक 15 अगस्त 2025 से Annual Fastag Pass की सुविधा की शुरुआत देशभर में कर दी जाएगी। जिसके बाद हर साल 200 ट्रिप या एक साल जो भी पहले हो, उसको माना जाएगा।

क्या है 200 ट्रिप का मतलब

अगर आप यह समझ रहे हैं कि एक बार एनुअल फास्टैग पास को एक्टिव करने के बाद आप एक शहर से दूसरे शहर तक एक ट्रिप में जा सकते हैं तो ऐसा नहीं है। केंद्रीय मंत्री ने साफ कहा है कि अगर आप एक शहर से दूसरे शहर तक अपनी निजी कार से सफर कर रहे हैं और उस बीच पांच टोल टैक्स बूथ आते हैं तो आपकी 200 ट्रिप में से पांच ट्रिप कम हो जाएंगी।

उदाहरण से समझें

दिल्ली से जयपुर के बीच सफर करने पर तीन टोल प्लाजा पड़ते हैं। जिनमें दिल्ली से जाते हुए पहला टोल मानेसर में आता है। दूसरा टोल नीमराणा के पास शाहजहांपुर, तीसरा टोल शाहपुरा के पास मनोहरपुर आता है। ऐसे में अगर आप यह मान रहे हैं कि दिल्ली से जयपुर के बीच आपकी सिर्फ एक ही ट्रिप होगी तो ऐसा नहीं होगा बल्कि दिल्ली से जयपुर के बीच आने वाले तीन टोल ही आपके तीन ट्रिप माने जाएंगे। ऐसे ही जयपुर से दिल्ली आते हैं तो आने-जाने में आपके छह ट्रिप पूरे हो जाएंगे। ऐसे ही जब आपके 200 ट्रिप पूरे हो जाएंगे तो एनुअल फास्टैग पास को फिर से रिन्यू करवाना होगा, जिसके लिए आपको तीन हजार रुपये देने होंगे।

मोटर थर्ड पार्टी बीमा हो सकता है महंगा, जानिए कितना बढ़ जाएगा आपका खर्च

परिवहन विशेष न्यूज

मोटर बीमा प्रीमियम में बढ़ोतरी भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI) ने मोटर थर्ड पार्टी बीमा प्रीमियम को औसतन 18% तक बढ़ाने का प्रस्ताव रखा है कुछ वाहन श्रेणियों में 20% से 25% तक की वृद्धि की संभावना है। यह वृद्धि वाहनों की मरम्मत लागत और दुर्घटना क्षतिपूर्ति में वृद्धि के कारण बीमा कंपनियों को हो रहे नुकसान को कम करने के लिए की जा रही है।

नई दिल्ली। आपको अपनी गाड़ी के इंश्योरेंस के लिए पहले से मुकाबले ज्यादा पैसे चुकाना पड़ सकता है। दरअसल, द इंश्योरेंस रेगुलेटरी ऐंड डिवेलपमेंट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (IRDAI) ने मोटर थर्ड पार्टी (TP) बीमा प्रीमियम में औसतन 18% बढ़ाने का प्रस्ताव रखा है। वही कुछ गाड़ियों के सेगमेंट में यह बढ़ोतरी 20% से 25% तक की जा सकती है। जिसके बाद गाड़ी रखना पहले के मुकाबले ज्यादा महंगा हो जाएगा। आइए जानते हैं कि अगर ऐसा होता है तो आपको कितना खर्च बढ़ सकता है?

बीमा महंगा क्यों हो रहा है?

पिछले चार वर्षों में मोटर थर्ड पार्टी बीमा प्रीमियम किसी तरह का बदलाव नहीं हुआ है, लेकिन इस दौरान डिकल खर्च, वाहन मरम्मत की लागत और मुआवजे की राशि में लगातार बढ़ोतरी देखने के लिए मिली है। इसके साथ ही गाड़ियों की संख्या और सड़क हादसों के मामलों में बढ़ोतरी भी हुई है। इसकी वजह से फिक्स प्राइसिंग स्ट्रक्चर से बीमा कंपनियों काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। जिसे देखते हुए RDAI ने यह कदम उठाया है ताकि बीमा कंपनियों की वित्तीय स्थिति मजबूत की जा सके।

मोटर थर्ड पार्टी इंश्योरेंस क्या है?

यह मोटर वाहन अधिनियम के तहत अनिवार्य बीमा है। इसका फायदा तब मिलता है जब किसी का सड़क हादसा हो जाए, तो इस स्थिति में तीसरे पक्ष (राहगीर, अन्य वाहन, या संपत्ति) को हुए नुकसान की भरपाई की जाती है। इसमें खुद के नुकसान का कोई कवर नहीं मिलता है। अगर आपकी गलती से किसी अन्य को चोट लगती है या संपत्ति को नुकसान होता है, तो इंश्योरेंस कंपनी उसकी भरपाई करती है। इसके बिना भारत में गाड़ी चलाना अवैध है और इससे जुर्माना या कानूनी कार्रवाई की जाती है।

बढ़ोतरी के बाद कितना बढ़ेगा खर्च?

दोपहिया वाहनः अगर आपके पास 350cc की मोटरसाइकिल है और अभी 2800 रुपये सालाना मोटर थर्ड पार्टी प्रीमियम दे रहे हैं, तो 8% बढ़ोतरी के बाद यह लगभग 3300 रुपये तक पहुंच जाएगा। यानी आपको हर साल 500 रुपये ज्यादा मोटर थर्ड पार्टी प्रीमियम पर खर्च करना पड़ेगा।

चार पहिया वाहनः अगर आपके पास 1500cc की कार है और आप अभी उसके मोटर थर्ड पार्टी प्रीमियम के लिए 7900 रुपये सालाना खर्च कर रहे हैं, तो 18% की बढ़ोतरी के बाद यह लगभग 9870 रुपये हो जाएगा। यानी आपको करीब 1400 रुपये एक्सट्रा खर्च करना पड़ेगा।

यह मोटर वाहन अधिनियम के तहत अनिवार्य बीमा है। इसका फायदा तब मिलता है जब किसी का सड़क हादसा हो जाए, तो इस स्थिति में तीसरे पक्ष (राहगीर, अन्य वाहन, या संपत्ति) को हुए नुकसान की भरपाई की जाती है। इसमें खुद के नुकसान का कोई कवर नहीं मिलता है। अगर आपकी गलती से किसी अन्य को चोट लगती है या संपत्ति को नुकसान होता है, तो इंश्योरेंस कंपनी उसकी भरपाई करती है। इसके बिना भारत में गाड़ी चलाना अवैध है और इससे जुर्माना या कानूनी कार्रवाई की जाती है।

बढ़ोतरी के बाद कितना बढ़ेगा खर्च?

दोपहिया वाहनः अगर आपके पास 350cc की मोटरसाइकिल है और अभी 2800 रुपये सालाना मोटर थर्ड पार्टी प्रीमियम दे रहे हैं, तो 8% बढ़ोतरी के बाद यह लगभग 3300 रुपये तक पहुंच जाएगा। यानी आपको हर साल 500 रुपये ज्यादा मोटर थर्ड पार्टी प्रीमियम पर खर्च करना पड़ेगा।

चार पहिया वाहनः अगर आपके पास 1500cc की कार है और आप अभी उसके मोटर थर्ड पार्टी प्रीमियम के लिए 7900 रुपये सालाना खर्च कर रहे हैं, तो 18% की बढ़ोतरी के बाद यह लगभग 9870 रुपये हो जाएगा। यानी आपको करीब 1400 रुपये एक्सट्रा खर्च करना पड़ेगा।

पेट्रोल वाले स्कूटर से भी कम होगीहीरो विदा VX2 की कीमत, कंपनी ने बनाया ये खास प्लान

परिवहन विशेष न्यूज

हीरो मोटोकॉर्प का इलेक्ट्रिक स्कूटर हीरो Vida VX2 1 जुलाई 2025 को लॉन्च होगा। यह बैटरी-एज़-ए-सर्विस (BaaS) मॉडल के साथ आएगा जिससे इलेक्ट्रिक स्कूटर सस्ता होगा। पे-एज़-यू-गो मॉडल में स्कूटर और बैटरी को अलग-अलग फाइनेंस किया जा सकेगा। इसमें फ्लैक्सिबल सब्सक्रिप्शन प्लान्स भी मिलेंगे। Vida के 3600 से ज्यादा चार्जिंग स्टेशन हैं। आइए Hero Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर और BaaS मॉडल के बारे में जानते हैं?

नई दिल्ली। हिरो मोटोकॉर्प का इलेक्ट्रिक स्कूटर Hero Vida VX2 भारतीय बाजार में 1 जुलाई 2025 को लॉन्च होने वाला ह। कंपनी इसे 'बैटरी-एज़-ए-सर्विस' (BaaS) मॉडल के रूप में पेश करेगी। इसकी मकसद लोगों के लिए इलेक्ट्रिक स्कूटर भारत में सस्ता बनाना है। इससे लोगों को इलेक्ट्रिक स्कूटर को बैटरी के बिना स्कूटर सस्ते में मिलेगा साथ ही लोग स्कूटर और बैटरी को अलग-अलग तरीके से ले सकेंगे। आइए Hero Vida VX2 इलेक्ट्रिक स्कूटर और BaaS मॉडल के बारे में जानते हैं?

क्या है बैटरी-एज-ए-सर्विस?

इस नए मॉडल में 'पे-एज़-यू-गो' का तरीका अपनाया गया है। इसका मतलब है कि आपको स्कूटर की बैटरी को लिए ज्यादा पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा। आप स्कूटर का बॉडी और बैटरी को अलग-अलग फाइनेंस कर सकते हैं, जिससे शुरुआती खर्चा कम हो जाएगा है।

फ्लैक्सिबल सब्सक्रिप्शन प्लान्स

Hero Vida VX2 को कई फ्लैक्सिबल सब्सक्रिप्शन प्लान्स के साथ भी पेश किया जाएगा, जिन्हें रोजाना या महीने के इस्तेमाल के हिसाब से बनाया गया है। इन प्लान्स में शुरुआत में कम पैसा देना, मासिक भुगतान, बैटरी की हेल्थ जैसी चीजों की लोगों को चिंता नहीं करना पड़ेगा। वहीं, Vida का देशभर में 3,600 से ज्यादा फास्ट-चार्जिंग स्टेशन और 500 से ज्यादा सर्विस सेंटर हैं, जो 100 से ज्यादा शहरों में मौजूद हैं।

कब मिलेगी पूरी जानकारी?

Hero Vida VX2 को भारतीय बाजार में 1 जुलाई को लॉन्च किया जाएगा। उसी समय इसके BaaS मॉडल, सब्सक्रिप्शन प्लान्स, और कीमतों की सारी डिटेल्स की जानकारी बताई जाएगी। बहुत से लोग इस वजह से इलेक्ट्रिक स्कूटर नहीं खरीदते हैं कि वह बैटरी की कीमत और रखरखाव से डरते हैं, लेकिन हीरो की इस पहल से लोगों को इन समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। तब तक आप इस नए ऑफर के बारे में सोच-विचार कर सकते हैं और अपनी जरूरत के हिसाब से प्लान चुनने की तैयारी कर सकते हैं।

Hero Vida VX2 को भारतीय बाजार में 1 जुलाई को लॉन्च किया जाएगा। उसी समय इसके BaaS मॉडल, सब्सक्रिप्शन प्लान्स, और कीमतों की सारी डिटेल्स की जानकारी बताई जाएगी। बहुत से लोग इस वजह से इलेक्ट्रिक स्कूटर नहीं खरीदते हैं कि वह बैटरी की कीमत और रखरखाव से डरते हैं, लेकिन हीरो की इस पहल से लोगों को इन समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। तब तक आप इस नए ऑफर के बारे में सोच-विचार कर सकते हैं और अपनी जरूरत के हिसाब से प्लान चुनने की तैयारी कर सकते हैं।

रील्स की मायावी दुनिया का धोखा

विजय गर्ग

यह बात आज से लगभग दो दशक पहले की है। हिंदी साहित्य जगत में उस समय मैत्रेयी पुष्पा का डंका बज रहा था। एक के बाद एक चर्चित उपन्यास लिखकर उन्होंने साहित्य जगत में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की थी। गोष्ठियों में भी उनकी मांग थी। लोग उन्हें सुनना चाहते थे। मैत्रेयी पुष्पा भी अपने ग्रामीण अनुभवों के आधार पर बात रखतीं तो महानगरीय परिवेश में रहनेवालों को वह बिल्कुल नया जैसा लगता। मुझे जहां तक याद पड़ता है कि दिल्ली के हिंदी भवन में एक गोष्ठी थी। उसमें मैत्रेयी पुष्पा भी वक्ता के रूप में उपस्थित थीं। विषय स्त्री विमर्श से जुड़ा हुआ था। मैत्रेयी पुष्पा के अलावा जो भी वक्ता थीं, वह सब वहां स्त्री विमर्श को लेकर सैद्धांतिक बातें कर रही थी। मंच से बार बार 'सिमोन द बीउआर' के उपन्यास 'सेकेंड सेक्स' का नाम लिया जा रहा था। वस्तुतः वहां सिमोन की स्थापनाओं पर बात हो रही थी और उसे भारतीय परिदृश्य से जोड़कर बातें रखी जा रही थीं। उनमें से अधिकतर ऐसी बातें थीं जो अमूमन स्त्री विमर्श की गोष्ठियों में सुनाई पड़ती ही थीं।

अब बारी मैत्रेयी पुष्पा के बोलने की थी। उन्होंने माइक संभाला और फिर बोलना आरंभ किया। स्त्री विमर्श पर आने के पहले उन्होंने एक ऐसी बात कही जो उस समय नितांत मौलिक और उनके स्वयं के अनुभवों पर आधारित थी। उन्होंने कहा कि जब से औरतों के हाथ में मोबाइल पहुंचा है, वह बहुत सशक्त हो गई हैं। उन्हें एक ऐसा सहारा या साथी मिल गया जो वक्त-बेवक्त उनके काम आता है, उनकी मदद करता है। गांव की महिलाएं भी घूंघट की आड़ से अपनी पीड़ा दूर बैठे अपने हितचिंतकों को या अपने रिश्तेदारों को बता सकती हैं। संकट के समय मदद मांग सकती हैं। इस संबंध में मैत्रेयी पुष्पा ने कई किस्से बताए जो उनकी भाभी से जुड़े हुए थे। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने गंवई अंदाज में मोबाइल को स्त्री सशक्तीकरण से जोड़कर ऐसी बात कह दी जो उनके साथ मंच पर बैठी अन्य स्त्रियों ने शयद सेचा भी न होगा। जब मैत्रेयी बोल रही थीं तो सभागार में जिस प्रकार की चुप्पी थी, उससे ऐस प्रतीत हो रहा था कि अधिकतर लोग उनकी इस स्थापना से सहमत हों।

आज से दो दशक पहले मैत्रेयी पुष्पा ने जब ऐस बोला था, तब शायद ही सोचा होगा कि मोबाइल स्त्रियों और पुरुषों की दबी आकांक्षाओं के प्रदर्शन का कारक भी बनेगा। पिछले दिनों मित्रों के साथ डिजिटल स्क्रीन पर व्यतीत होनेवाले समय पर बातचीत हो रही थी। चर्चा में सभी यह बताने में लगे थे कि किन-किन प्लेटफार्म पर उनका अधिक समय व्यतीत होता है। ज्यादतर मित्रों का कहना था कि 'इंस्टा' और 'एक्स' की रील्स देखने समय अधिक जाता है। इस चर्चा में ही एक मित्र ने कहा कि वह जब घरेलू और अन्य महिलाओं के वीडियो देखते हैं तो आनंद दोगुना हो जाता है। जिनको डांस करना नहीं आता वे भी डांस करते हुए वीडियो डालती हैं। कई बार तो पति पत्नी के बीच के संवाद भी रील्स में नजर आते हैं। उसमें वह रितेश देशमुख और जेनेलिया की भौंडी नकल करने का प्रयास करते हैं। इस चर्चा के बीच एक बहुत मार्के की बात निकल कर आई। इंस्टा की रील्स एक ऐसा मंच बन गया है जो महिलाओं और पुरुषों के मन में दबी आकांक्षाओं को भी समने ला रही है। जिन महिलाओं को चर्चित होने का शौक था, जिनको पर्दे पर आने की इच्छा थी, जिनको डांस सीखने और मंच पर अपनी कला को प्रदर्शित करने की इच्छा थी, वो सारी इच्छाएं पूरी हो रही हैं। रील्स और इंस्टा के पहले इस तरह की आकांक्षाएं मन में ही दबी रह जाती थीं। उनके अंदर कुंठा पैदा करती थीं। मोबाइल और इंटरनेट की सुविधा नहीं होने से जो महिलाएं पहले अपनी नृत्य कला का प्रदर्शन करना चाहती थीं, आवश्यक संसाधन उपलब्ध नहीं होने के कारण वो ऐसा कर नहीं पाती थीं। इसमें बहुत सी अधेड़ उम्र की महिलाओं को भी रील्स में देखा जा सकता है। कई तो अजीबोगरीब करतब करते हुए भी नजर आती हैं। लेकिन अपने मन का कर तो रही हैं। रील्स का यह एक सकारात्मक पक्ष माना जा सकता है जैसे मोबाइल फोन ने महिलाओं को सशक्त किया उसी तरह से इंटरनेट और इंटरनेट प्लेटफार्म्स ने महिलाओं की आकांक्षाओं को पंख लगा दिए। अब वो बगैर लज्जा, संकोच के अपने मन का कर रही हैं और समाज के सामने उसको प्रदर्शित भी कर रही हैं। वैसे रोल्स को लेकर पहले भी इस स्तंभ में चर्चा हो चुकी है जिसमें रोग से लेकर शेयर बाजार में निवेश करने से जुड़े टिप्स तक और धन कमाने से लेकर भाग्योदय तक के नुस्खों को केंद्र में रखा गया था। रील्स पर हो रही चर्चा में एक चिकित्सक मित्र ने एक मजेदार बात कही। उन्होंने कहा कि रोल्स ने डाक्टरों का फायदा करवाया है। रील्स देखकर स्वस्थ रहने के नुस्खे अपनाने वाले लोग बढ़ते जा रहे हैं। स्वस्थ रहने के तरीकों को देखकर और बिना विशेषज्ञ की सलाह के उन तरीकों को अपनाने से समस्याएं भी पैदा होती जा रही हैं। जैसे रोल्स में सेंधा नमक को लेकर बहुत अच्छी बातें कही जाती हैं। सलाह देनेवाले सेंधा नमक को स्वास्थ्य के लिए उपयोगी बताते हैं। रील्स देखकर लोग सैंधा नमक खाने लग जाते हैं। बगैर यह सोचे समझे कि आयोडाइज्ड नमक खाने के क्या लाभ थे और छोड़ देने के क्या नुकसान हो सकते हैं? जब शरीर में सोडियम और पोटैशियम का संतुलन बिगड़ता है तो चिकित्सकों के पास भागते हैं। पता चलता है कि यह असंतुलन सैंधा नमक के निरंतर सेवन से हुआ। स्वस्थ रहने के इसी तरह के कई नुस्खे आपको इंस्टाग्राम पर भी मिल जाएंगे। सभी ऐसे बताए जाते हैं कि देखनेवालों का एक बार तो मन कर ही जाता है कि वह उसको अपना ले। चूंकि इस बात का उल्लेख रोल्स में नहीं होता है कि सलाह देनेवाले चिकित्सक या न्यूट्रिशनिस्ट है या नहीं, इसलिए इसे देखनेवाला यह मानकर चलता है कि रील्स बनाने वाला विशेषज्ञ होगा ही। रील की दुनिया बहुत ही मनोरंजक है। समय बहुत सोखती है। कई बार वहीं अच्छी सामग्री भी मिल जाती है, लेकिन एआइ के इस दौर में प्रामाणिकता को लेकर मन में एक प्रकार का संशय बना ही रहता है। किसी का भी वीडियो बनाकर उसमें किसी दूसरे की आवाज पिरोकर बहुप्रसारित करने का चलन भी बढ़ रहा है। ऐसे में इस आभासी दुनिया को केवल और केवल मनोरंजन के लिए ही उपयोग किया जाना चाहिए। मन में दबी इच्छाओं को पूर्ण करने का मंच माना या बनाया जा सकता है। इस माध्यम को गंभीरता से लेने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नहीं जब लोग इससे ऊबकर फिर से छपे हुए अक्षरों की और लौटेंगे। दरअसल जिस प्रकार की प्रामाणिकता प्रकाशित शब्दों या अक्षरों की होती है, वैसी इन आभासी माध्यमों में नहीं होती है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अभी इस माध्यम का समाज पर प्रभाव पड़ रहा है। लोग कई बार यहाँ सुझाई या कही गई बातों को सही मानकर अपनी राय बना लेते हैं। लेकिन जैसे-जैसे देश में शिक्षित लोगों की संख्या बढ़ेगी और इन सबके बारे में लोगों की समझ बढ़ेगी तो इसको विशुद्ध मनोरंजन के तौर पर ही देखा जाएगा, सूचना के माध्यम के तौर पर नहीं।

हाँ, जेईई! आईआईटी लिंग अंतर को बंद कर रहे हैं, लेकिन अभी भी एक लंबी सड़क है

विजय गर्ग

गर्व और समृद्धि के मध्यम वर्ग के सपने के केंद्र में आईआईटी फिर से मुख्य हैं। लेकिन कई सालों तक महिला छात्रों को इस आकांक्षा के हाशिए पर छोड़ दिया गया. जबकि 2025 के परिणाम इंजीनियरिंग में पुरुषों के निरंतर प्रभुत्व (2025 में कुल योग्यता छात्रों का 82.7%) को रेखांकित करते हैं, इस वर्ष लड़कियों का रिकॉर्ड पास प्रतिशत दर्शाता है कि 2018 के बाद से बहुत कुछ बदल गया है जब आईआईटी ने लड़कियों के लिए अतिरिक्त सीटें जोड़कर एक सकारात्मक कार्रवाई योजना शुरू की। सात साल पहले, बीटेक की डिग्री में 8% चौंकाने वाली कम महिलाओं के साथ स्थिति गंभीर थी, एक संख्या जो पहली पीढ़ी के आईआईटी के अस्तित्व के लगभग 60+ वर्षों में स्थिर रही थी। किसी को भी इस बारे में कुछ भी अजीब नहीं लगा क्योंकि इंजीनियरिंग को 'पुरुष' कोडित किया गया था, जब तक कि आईआईटी मंडी के पूर्व निदेशक प्रो टिमोथी गोंसाल्वेस ने मामलों को हाथ में नहीं लिया और इस योजना को 'सुपरन्यूमरी सीट्स स्कीम' (एसएसएस) के रूप में जाना जाता है। आईआईटी काउंसिल को यह समझाने के लिए सबूत कि योजना आवश्यक थी और स्टु-डेंट्स की गुणवत्ता में ₹कमजोर पड़ने₹ का कारण नहीं होगा, दो स्रोतों से आया: जेईई डेटा दिखा रहा है कि योग्य कई महिलाएं अलग-अलग कारणों से आईआईटी में शामिल नहीं हुईं जैसे कि नागरिक और यांत्रिक जैसी 'पुरुष' शाखाओं में प्रवेश प्राप्त करना, और घर से सुरक्षा और दूरी के बारे में माता-पिता की चिंताएं। लड़कियों के पास अपने विज्ञापन-मिशन में बहुत कम विकल्प थे, क्योंकि हमें 2018 में आईआईटी दिल्ली में जेईई एडवांस योग्य लड़कियों और उनके बराबर-दाखले के लिए आयोजित पहले खुले घर में पता चला था। दूसरा स्रोत 2016 का आईआईटी दिल्ली का एक अध्ययन था, जिसमें दिखाया गया था कि जेईई रैंक के बावजूद, महिला छात्रों ने अपने पुरुष साथियों से बेहतर प्रदर्शन किया। यह पेचीदा है कि केवल आईआईटी को इंजीनियर-इंग में महिला छात्रों के बेहद कम प्रतिशत से ग्रस्त किया गया है; राष्ट्रीय औसत लगभग 30% है। दक्षिणी राज्यों ने पहले ही 2000 के दशक में लड़कियों के लिए 33% आरक्षण शुरू कर दिया था। इसलिए, विडंबना यह है कि यह तथाकथित राष्ट्रीय महत्व संस्थान , आईआईटी है, जिसने महिलाओं को उनके पोर्टल्स से रोक दिया है, एक पुरुष संरक्षित के रूप में कुलीन इंजीनियरिंग की छवि को फिर से परिभाषित करता है, इस प्रक्रिया में न केवल एसटीईएम से वंचित है अनुसंधान और नवाचार पर विविध दृष्टिकोण लेकिन यह भी तारकीय रोल मॉडल और नेटवर्क है कि आईआईटी उत्पन्न के औरत। इन संस्थानों में महिला संकाय संख्या भी फिर से मुख्य कम- एक और समय के लिए एक कहानी।

एसएसएस योजना कई मोर्चों पर सफल रही है। यह 2020 तक लड़कियों के प्रतिशत को 20% तक बढ़ाने के अपने बताए हुए टार-गेट को पूरा कर चुका है, जो 2024 में 22% तक सुधर गया। यहां न होने के लिए महत्वपूर्ण जीत हैं। जेईई डेटा के एक अवलोकन से पता चलता है कि जेईई फुल स्टेम आगे के लिए प्रदर्शित होने वाली महिलाओं की संख्या: न केवल आईआईटी के लिए अर्हता प्राप्त करने और सीटें प्राप्त करने वाली अधिक लड़कियां हैं, यहां तक कि जो कम जेईई रैंक पर आते हैं, वे स्नातक स्तर पर पुरुष साथियों के साथ पकड़ लेते हैं 2018 और 2025 के बीच उन्नत 33% बढ़ गया है। योजना की सफलता के अधिक महत्वपूर्ण संकेतक उन लोगों के प्रतिशत हैं जो अर्हता प्राप्त करते हैं और जिन्हें सीट आवंटित होती है। SSS से पहले, महिलाओं ने सभी (पुरुषों और महिलाओं) में से 12% का प्रतिनिधित्व किया था, जिन्हें उत्तीर्ण किया गया था और 9% सीटें आवंटित की गई थीं। एसएसएस के बाद, आवंटित सीटों का प्रतिशत 2024 में दोगुना होकर 19.8% हो गया था। आवंटित सीटों की वृद्धि की दर 2011-17 के बीच प्रति वर्ष -1.4% से बढ़कर 2018-24 के बीच 4.1% हो गई। 2018 के बाद से महिलाओं के अल-लॉटेड सीटों का बढ़ता प्रतिशत अतिरिक्त सीटों के साथ-साथ लड़कियों को इंस्टी-ट्यूट और विभाग के अपने पसंदीदा विकल्पों को पूरा करने में सक्षम होने का एक कार्य है, जिसके परिणामस्वरूप बढ़ती स्वीकृति दर है। इसने घर के पास एक एनआईटी या एक इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए बहाव को दूर कर दिया। इसके अलावा अच्छी खबर है, एसटीईएमगैप द्वारा हाल ही में काम के रूप में, आईआईटी दिल्ली में रखे गए एक फिर से खोज परियोजना से पता चलता है, कि भले ही कुछ लड़कियों कुछ कम जेईई स्कोर और रैंक पर आईआईटी में प्रवेश, वे अपने पुरुष साथियों के साथ पकड़ने और इसी तरह प्रदर्शन करते हैं, जबकि कार्यक्रम से बाहर निकलें । युवा महिलाओं के लिए शैक्षिक और कैरियर विकल्प के रूप में इंजीनियरिंग के दरवाजे खोलने में यह योजना कितनी सफल रही है? आईआईटी दिल्ली पोस्ट-एसएसएस में प्रवेश करने वाली लड़कियों के साथ हमारे गुणात्मक अध्ययन से पता चलता है कि जाति श्रेणियों के परिवारों में महिलाओं के आईआईटी में प्रवेश करने की उच्च संभावना है, जैसा कि स्कूली शिक्षक और कोचिंग सेंटर हैं। अतिरिक्त लड़कियों ने आईआईटी परिसरों की भावना को बदल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप एक अधिक स्वागत योग्य एनवायरन-मेंट और कम अलगाव हुआ है। चूंकि यह योजना यह भी सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक विभाग 20% प्रतिनिधित्व तक पहुंचे, यह 'निचले क्रम' विभागों में महिलाओं के समूह के कारण होने वाले पूर्वाग्रह को रोकता है। यह योजना अनिवार्य जाति आरक्षण का भी पालन करती है, जिससे जाति श्रेणियों के भीतर लिंग असंतुलन को संबोधित किया जाता है। इस योजना ने इंजीनियरिंग के भीतर डिस-सिप्लिनरी स्टीरियोटाइप्स को तोड़ने के अलावा IIT में लिंग और जाति दोनों की विविधता बढ़ा दी है। आईआईटी के लिए महिला पाइप-लाइन को और बढ़ाने के लिए, उन उपायों को शुरू करना महत्वपूर्ण है जो गहरी जड़ें वाले पूर्वाग्रह को संबोधित करते हैं- लड़कियों और महिलाओं की अंतर्निहित एसटीईएम क्षमताओं के बारे में और प्रवेश परीक्षा में निर्मित संरचनात्मक बाधाओं को दूर करते हैं; ऐसे कदम शामिल करने के लिए पर्यावरण को फिर से आकार देने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, खुले घरों और मेंटरशिप कार्यक्रमों जैसी पहल, जो स्कूली छात्राओं को एक इमर्सिव अनुभव के लिए आईआईटी परिसरों में लाती हैं, इस मानसिकता को बदलने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं कि महिलाएं इंजीनियरिंग के लिए अनुपयुक्त हैं।

बेटियां: विरासत नहीं, संवेदना का सच

विजय गर्ग

भारतीय समाज में सदियों से यह धारणा रही है कि बेटा ही वंश चलाता है, बेटा ही अर्थी को कंधा देगा, बेटा ही संपत्ति का उत्तराधिकारी होगा. यह सोच न सिर्फ बेटियों को दोयम दर्जे में धकेलती है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी ठेस पहुंचाती है. पर समय ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि वंश केवल नाम का नहीं होता, वंश वह संवेदना है जिसे कोई भी आगे बढ़ा सकता है. कितनी ही बेटियाँ हैं जो अपने बूढ़े माँ-बाप की सेवा करती हैं, उन्हें सहारा देती हैं और उनकी अंतिम इच्छा तक निभाती हैं. आँसुओं की तासीर एक-सी क्यों होती है ? जब किसी घर में दुख आता है, तो आँसू किसी रिश्ते, लिंग या वर्ग को नहीं देखते. माँ की ममता और बेटी का दुलार - दोनों में दर्द की वही भाषा होती है. मौत एक ऐसी सच्चाई है जो सबको एक छतरी के नीचे खड़ा कर देती है. उस क्षण न कोई बेटा बड़ा होता है न बेटी छोटी. उस क्षण सिर्फ़ इंसान होता है - समर्पित, भावुक, टूटता हुआ. हमारे समाज में मृत्यु के बाद का अनुष्ठान बेटे के जिम्मे होता है. बदलते सामाजिक समीकरण आज का भारत एक संक्रमण काल से गुजर रहा है, जहाँ बेटियों को पढ़ाया जा रहा है, आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है, पर मानसिकता का बदला जाना अभी अधूरा है. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा तो है, पर क्या हम बेटियों को जीवन के हर अधिकार में समान दर्जा दे पा रहे हैं? क्या उन्हें संपत्ति, परंपरा और निर्णयों में बराबरी का स्थान मिल रहा है?

अनुभवों की कहानियाँ: बेटियाँ जिन्होंने समाज को बदला राजस्थान के छोटे गाँवों से लेकर महानगरों तक, हजारों बेटियाँ अपने माता-पिता के लिए वह संबल बनीं हैं जिसकी कल्पना समाज बेटों से करता था. एक उदाहरण महाराष्ट्र की प्रियंका का है, जिसने अपने पिता की मृत्यु पर विधिवत अंतिम संस्कार किया, गाँव ने विरोध किया, पर वह डटी रही. आज गाँव की अन्य लड़कियाँ उसे अपना आदर्श मानती हैं.

क्या यह प्रेम, यह समर्पण विरासत का हिस्सा नहीं है ? कानून क्या कहता है ? भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 2005 के संशोधन के बाद बेटियों को संपत्ति में बराबरी का अधिकार मिला है. पर सामाजिक स्तर पर यह अधिकार कितनी बार स्वीकारा गया है? अदालतें भले ही बेटियों को बराबरी दें, पर समाज अब भी मानसिक तौर पर इस बदलाव को पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाया है. कई बार बेटियों को स्वेच्छा से 'हक छोड़ने' के लिए मजबूर किया जाता है ताकि बेटों का हिस्सा बना रहे. यह 'त्याग' नहीं, एक सुनियोजित सामाजिक दबाव है. बेटियों को कमजोर क्यों समझा जाता है ? संवेदनशील होना कमजोरी नहीं होती. सहनशीलता को ही हमने दुर्बलता मान लिया है. बेटियाँ घर की शांति होती हैं, स्नेह का प्रवाह होती हैं और दुख की सबसे पहली साथी होती हैं. अगर यही गुण बेटे में हों, तो उन्हें 'समझदार' कहा जाता है, फिर बेटियों को 'कमजोर' क्यों? बेटियाँ अक्सर परिवार की भावनात्मक रीढ़ होती हैं. वे संघर्षों को चुपचाप सहती हैं और फिर भी मुस्कुराती हैं. क्या यह शक्ति नहीं ? पीढ़ियों की सोच में बदलाव की जरूरत - बेटा ज़रूरी है - यह सोच एक सामाजिक भ्रम है. वंश वही चलता है जहाँ संस्कार होते हैं, और संस्कार बेटा या बेटी में नहीं, पालन-पोषण और संबंध में होते हैं. जो बेटी पिता की चिता को अग्नि दे, क्या वह उससे कम है जो पिता की तस्वीर पर माला चढ़ाता है ? नयी पीढ़ी को यह समझना होगा कि परिवार की जिम्मेदारियाँ केवल बेटों की नहीं होतीं. बेटियाँ भी माँ-बाप की बुढ़ापे की लाठी हो सकती हैं, अगर समाज उन्हें वह अवसर और अधिकार दे. विरासत सिर्फ़ ज़मीन या नाम नहीं होती- विरासत वह भी होती है जो आँसुओं में झलकती है, जो संवेदनाओं में बहती है, जो संस्कारों में जीती है. बेटियाँ वह विरासत हैं जो सिर्फ़ खून का नहीं, प्रेम और सेवा का रिश्ता आगे बढ़ाती हैं.

मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति में बदलाव की जरूरत- हमारे टेलीविजन धारावाहिकों और फिल्मों में बेटियों को या तो बोझ के रूप में या फिर त्याग की देवी के रूप में दिखाया जाता है. यह चरम सीमाएँ हैं. हमें ज़रूरत है ऐसी कहानियों की जो बेटियों को वास्तविक, सशक्त और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करें. हमारी जिम्मेदारी समाज को चाहिए कि वह बेटियों को केवल एक विकल्प के रूप में न देखे, बल्कि उन्हें एक पूर्ण, सक्षम उत्तराधिकारी माने. बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान सिर्फ़ नारे नहीं, एक गहरी सामाजिक क्रांति की शुरुआत है. स्कूलों में समानता की शिक्षा हो, पंचायतों में बेटियों की भागीदारी हो, और घरों में उनके फैसलों को सम्मान मिले- तभी यह बदलाव स्थायी होगा.

बेटियों की परवरिश करते समय यह न सोचें कि "कल तो पराई हो जाएगी," बल्कि सोचें कि ₹यह मेरी आज की ताकत है.₹ आज के दौर में जब परिवार, रिश्ते और मूल्यों की परिभाषाएं बदल रही हैं, तब बेटियों की भूमिका को एक बार फिर नए दृष्टिकोण से समझना जरूरी है. वे केवल सहारा नहीं, शक्ति हैं. वे सिर्फ़ संवेदना नहीं, उत्तराधिकार की हक़दार हैं. बेटियाँ सिर्फ रिश्तों की गारंटी नहीं हैं, वे समाज की रीढ़ भी हैं. उनकी आँखों में अपने पिता के लिए वही चिंता, वही अपनापन, वही असीम प्रेम है जो किसी भी बेटे में होता है-बल्कि कई बार उससे कहीं अधिक. उन्हें हाशिए से उठाकर केंद्र में लाना, उन्हें सिर्फ़ 'बेटी' नहीं, 'वारिस' मानना ही सच्ची सामाजिक प्रगति होगी.

प्लास्टिक प्रदूषण एक ऐसा संकट है, जो धीरे-धीरे पृथ्वी को अपनी चपेट में ले रहा है

विजय गर्ग

प्रदूषण आज दुनिया के लिए बड़ी समस्या बन चुका है। इसमें प्लास्टिक प्रदूषण एक ऐसा संकट है, जो धीरे-धीरे पृथ्वी को अपनी चपेट में ले रहा है। यह प्रदूषण हमारी नदियों, समुद्रों, मिट्टी और यहां तक कि हमारे शरीर में भी प्रवेश कर चुका है। प्लास्टिक, जो कभी सुविधा और टिकाऊपन के कारण एक क्रांतिकारी आविष्कार माना जाता था, आज हमारे पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा बन गया है। सुबह जब हमारी आंख खुलती है, तो समय पर पर घंटी बजाने वाली घड़ी से लेकर टूथब्रश, पानी की टंकी से लेकर दूध की थैली तक, हर वस्तु में प्लास्टिक मौजूद है। हमारे भोजन को रखने वाली पैकिंग, दवाइयों की सुरक्षित बोतलें, बच्चों के रंग-बिरंगे खिलौने, जीवनरक्षक चिकित्सा उपकरण, संचार के साधन, परिवहन के कलपुर्जे और फैशन की दुनिया, कोई भी क्षेत्र प्लास्टिक के प्रभाव से प्रभाव से अछूता नहीं है। निस्संदेह प्लास्टिक ने हमारे जीवन को सुगम बनाया, उत्पादों को सस्ता किया और कई मायनों में सुरक्षित भी, लेकिन इस सुविधा की कीमत हम एक ऐसे भविष्य के रूप चुका रहे हैं, जो प्लास्टिक के कचरे के नीचे दबता जा रहा है। इसका उत्पादन इतनी तीव्र गति से और इतने बड़े पैमाने पर बढ़ा है कि हमने इसके अंधाधुंध उपयोग के दूरगामी परिणामों पर कभी गंभीरता से विचार ही नहीं किया और अब यह हमारे पर्यावरण के लिए एक ऐसा नासूर बन गया है, जिसका इलाज यदि समय रहते नहीं किया गया तो यह हमारी पृथ्वी के स्वास्थ्य को सदा के लिए नष्ट कर देगा।

वैश्विक स्तर पर हर साल करोड़ों टन प्लास्टिक का उत्पादन होता है और अनुमान है कि अब तक उत्पादित कुल प्लास्टिक का एक बड़ा हिस्सा कचरे के रूप में हमारे पर्यावरण में मौजूद है भारत जैसे विकासशील देश में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक खपत विकसित देशों की तुलना में भले ही कम हो, लेकिन हमारी विशाल जनसंख्या और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के कारण उत्पन्न प्लास्टिक कचरे की कुल मात्रा बहुत अधिक है। नदियां, जो कभी जीवनदायिनी मानी जाती थीं, आज प्लास्टिक की थैलियों, बोतलों और अन्य कचरे से पटी पड़ी हैं। गंगा और यमुना जैसी नदियां भी इससे अछूती नहीं हैं, जो अपने साथ भारी मात्रा में प्लास्टिक बहा कर समुद्र तक ले जाती हैं।

हमारे महासागर आज प्लास्टिक प्रदूषण के सबसे बड़े शिकार बन चुके हैं। एक अनुमान के मुताबिक, प्रति मिनट एक ट्रक भर प्लास्टिक कचरा समुद्रों में डाला जाता है। यह समुद्री जीवन के लिए मौत का एक जाल है। व्हेल और डाल्फिन जैसे बड़े जीव अक्सर मछली पकड़ने के पुराने जालों में फंस कर दम तोड़ देते हैं। समुद्री कछुए प्लास्टिक की थैलियों को जेलीफिश समझ कर निगल लेते जिससे उनका पाचन तंत्र अवरुद्ध हो जाता है और वे भूख से मर जाते हैं। समुद्री पक्षी अपने बच्चों को गलती से प्लास्टिक के छोटे टुकड़े खिला देते हैं, जो उनके पेट में जमा होकर उनकी मृत्यु का कारण बनते हैं। प्रवाल भित्तियां, जो समुद्री जैव विविधता के महत्त्वपूर्ण केंद्र हैं, वे प्लास्टिक कचरे से ढक कर और दम घुटने से नष्ट हो रही हैं। माइक्रोप्लास्टिक समुद्री खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर चुके हैं। छोटे समुद्री जीव प्लवक आदि प्लास्टिक के इन सूक्ष्म कणों को खाते हैं, फिर उन्हें छोटी मछलियां खाती हैं और फिर बड़ी मछलियां जब मनुष्य इन समुद्री जीवों का सेवन करते हैं, तो ये उपजाऊपन

हानिकारक तत्त्व शरीर में भी पहुंच जाते हैं। प्लास्टिक प्रदूषण हमारी मिट्टी की गुणवत्ता को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। प्लास्टिक के टुकड़े मिट्टी की संरचना को बदलते हैं, जल सोखने की उसकी क्षमता को कम करते हैं और मिट्टी में रहने वाले लाभकारी सूक्ष्मजीवों की गतिविधियों में बाधा डालते हैं। इससे मिट्टी का ऊपन कम होता और कृषि पैदाव पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिस जगह शहर का कचरा इकट्ठा किया जाता है, वह प्लास्टिक से भरी होती हैं। यहां हैं। यहां प्लास्टिक कचरे से रिसने वाले जहरीले रसायन भूजल में मिल कर उसे दूषित करते हैं, जिससे जलजनित बीमारियां फैलने का खतरा रहता है। कूड़े के इस में अर अक्सर आग लग जाती है। इस दौरान प्लास्टिक जलने पर अत्यंत विषैली गैसें वायुमंडल में फैलती हैं, जो गंभीर श्वसन समस्याओं, त्वचा रोगों और यहां तक कि कैंसर का कारण बन सकती हैं।

इसके अलावा प्लास्टिक कचरे से शहरों की नालियां जाम हो जाती हैं, जिससे थोड़ी सी बारिश में भी जलभराव और बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। आवारा पशु भोजन की तलाश में कूड़े के ढेर में मुंह मारते हैं और खाद्य सामग्री के साथ पालीथिन भी निगल जाते हैं, जो उनकी मौत कारण बनता है। राष्ट्रीय उद्यानों और यारण्यों के आसपास के क्षेत्रों में वन्यजीवों द्वारा प्लास्टिक खाने। उसमें फंसने की घटनाएं सामने आती रहती हैं। हवा में भी माइक्रोप्लास्टिक और नैनोप्लास्टिक कण पाए गए हैं। जब हम सांस हैं, तो ये कण फेफड़ों में में प्रवेश कर सकते हैं। इससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर अभी शोध जारी है। प्लास्टिक उत्पादन की प्रक्रिया में भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जो जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा है।

हमारे समाज में गहरी जड़ें जमा ली हैं। पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता आज बहुत महत्त्वपूर्ण हो ग हो गई है। है। पर्यावरण केवल पेड़-पौधे, नदी- पहाड़ या जीव-जंतुओं का समूह नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र है, पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाता जब हम प्लास्टिक जैसे प्रदूषकों से इस संतुलन को बिगाड़ते हैं,

तो इसके दूरगामी परिणाम होते हैं। इसलिए यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम संतुलित पर्यावरण की धरोहर को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखें। यदि हम दृढ़ निश्चय और सामूहिक प्रयास करें तो निश्चित रूप से इस समस्या पर काबू पा सकते हैं।

समय के साथ कम हो चली है झींगुरों की झांय-झांय !

जून के इस महीने में इन दिनों में यह लेखक पहाड़ी राज्य उत्तराखंड में है और इन दिनों यहां खूब बारिश हो रही है। एक ओर जहां उत्तर भारत में 48-49 डिग्री सेल्सियस तापमान से उत्तर भारत जल रहा है वहीं उत्तराखंड राज्य हरितिमा से भरपूर और गर्मियों में राहत देने वाला राज्य है। सूरज ढ़लते ही यहां झींगुरों की झांय-झांय सुनाई देने लगती है और कभी-कभी तो दिन के समय भी जब बारिश के कारण मौसम में ठंडक होती है, वातावरण झांय-झांय की आवाज से गूंजने लगता है। कभी फिल्मों के किसी दृश्य में ही झींगुरों की आवाज सुनाई दिया करती थी। शहरों में झींगुरों के बारे में कभी देखने सुनने को नहीं मिलता। आखिर इसके पीछे कारण क्या हैं ? कारण है बढ़ती आबादी, औधोगिकीकरण, शहरीकरण, तीव्र विकास, ग्लोबल वार्मिंग के कारण आज जंगलों का कम होना। कहना ग़लत नहीं होगा कि इंसानी शोर से आज झींगुरों की झांय-झांय पर लगातार खतरा मंडरा रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि इस संबंध में कुछ समय पहले एक शोध के नतीजे बीएमसी इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन जर्नल में प्रकाशित हुए थे। इसके मुताबिक इंसानों के बढ़ते शोर से न सिर्फ झींगुरों का संगीत मंद पड़ा है, बल्कि उनका जीवन काल भी घट गया है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि झींगुर, इन्सेक्टा वर्ग का हिस्सा और ग्रिलिडे परिवार से संबंधित हैं, जो कई प्रजातियों से मिलकर बने हैं। ये अक्सर खेतों, सड़क के किनारे चरागाहों, घने जंगलों और आवासीय लॉन में पनपते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि घास के मैदानों, जंगलों, गुफाओं और यहां तक कि उनकी विशिष्ट प्रजातियों के अनुरूप इनडोर क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है। अंग्रेजी में इन्हें क्रिकेट कहते हैं। झींगुरों के बारे में रोचक तथ्य यह है कि झींगुरों के पंख होते हैं, लेकिन वे उड़ नहीं पाते, वे केवल कूद सकते हैं। ये सामाजिक कीट नहीं माने जाते हैं। नर झींगुर अपनी चहचहाहट के लिए प्रसिद्ध हैं, यह एक ऐसी ध्वनि है जो उनके पंखों के घर्षण से उत्पन्न होती है जिसे स्ट्रिड्यूलेशन कहते हैं। दरअसल, इस तरह की चहचहाहट के दो उद्देश्य होते हैं: यह मादा झींगुरों को आकर्षित करती है और अन्य नर झींगुरों के बीच क्षेत्रों को परिभाषित करती है। मुख्य रूप से रात में सक्रिय रहने वाले ये जीव रात्रिचर प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं, जो उन्हें शिकारियों से बचने में मदद करते हैं।शाम के बाद या रात के समय उनकी आवाज़ को स्पष्ट सुना जा सकता है। दरअसल,तापमान और उनके चहकने की आवृत्ति के बीच एक संबंध है। खास तौर पर, घरेलू झींगुर गर्म स्थानों की ओर आकर्षित होते हैं। दरअसल, ठंड के मौसम में झींगुरों को गर्मी और पोषण की तलाश रहती है। झींगुर तीन चरण के जीवन चक्र से गुजरते हैं , जिसमें अंडा चरण, निम्फ चरण और वयस्क रूप शामिल हैं। एक क्लच में, मादा झींगुर 200 अंडे तक देने में सक्षम होती हैं और वे अपने परिपक्व चरण के दौरान लगभग हर दो सप्ताह में नए बैच दे सकती हैं। इन अंडों के लिए ऊष्मायन अवधि आमतौर पर आदर्श गर्मी की स्थिति में 11 से 14 दिनों के बीच होती है। जानकारी देना चाहूंगा कि झींगुर मुख्य रूप से पौधों की सामग्री जैसे पत्तियां, तने और बीज खाते हैं, लेकिन वे शहरी वातावरण में मानव भोजन के अवशेष भी खा सकते हैं। सरल शब्दों में कहें तो ये सर्वभक्षी होते हैं तथा इनका आहार काफी विविध और अनुकूलनीय है। बहरहाल, झींगुर विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्रों मे मुख्य रूप से अपघटन, पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण और कीट नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक छोटा सा जीव है जो सड़ने वाले कार्बनिक पदार्थों को खाता है, जिससे पोषक तत्वों को वापस मिट्टी में मिलाने में मदद मिलती है। दूसरे शब्दों में कहें तो झींगुर मृत पौधों और जानवरों के अवशेषों को खाते हैं, जिससे वे छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं और हमारे पर्यावरण में अपघटन की प्रक्रिया में मदद करते हैं। अपघटन की क्रिया से झींगुर विभिन्न पोषक तत्वों को मिट्टी में या इस धरती पर वापस छोड़ते हैं, जो पौधों और अन्य जीवों के लिए उपलब्ध होते हैं। इतना ही नहीं, छोटे-छोटे कीड़ों को खाकर ये कीट नियंत्रण में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। यदि झींगुर नहीं होंगे तो ऐसे कीट(जिनको झींगुर खाते हैं) विभिन्न पौधों और वनस्पतियों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। खाद्य श्रृंखला को बनाए रखने में भी झींगुरों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। दरअसल,झींगुर कई जानवरों जैसे पक्षियों, सरीसृपों और अन्य कीड़ों के लिए भोजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उल्लेखनीय है कि झींगुरों द्वारा बनाए गए बिल मिट्टी को हवादार बनाने और जल निकासी में सुधार करने में मदद करते हैं, जिससे मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर होता है। इतना ही नहीं, कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि झींगुर पौधों के परागण में भी भूमिका निभाते हैं।

झींगुरों के बारे में रोचक तथ्य यह है कि झींगुरों के पंख होते हैं, लेकिन वे उड़ नहीं पाते, वे केवल कूद सकते हैं। ये सामाजिक कीट नहीं माने जाते हैं। नर झींगुर अपनी चहचहाहट के लिए प्रसिद्ध हैं, यह एक ऐसी ध्वनि है जो उनके पंखों के घर्षण से उत्पन्न होती है जिसे स्ट्रिड्यूलेशन कहते हैं। दरअसल, इस तरह की चहचहाहट के दो उद्देश्य होते हैं: यह मादा झींगुरों को आकर्षित करती है और अन्य नर झींगुरों के बीच क्षेत्रों को परिभाषित करती है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड ।

सिकल सेल रोग: चुपचाप बहता खून और अनसुनी चीखें [सिर्फ बीमारी नहीं, एक सामाजिक आपातकाल है सिकल सेल]

बचपन की मुस्कान जब हर सुबह दर्द से कराहने लगे, जब एक किशोर अपने सपनों के पीछे भागने से पहले अपनी नसों की टेढ़ी-मेढ़ी राहों से जूझने लगे — तब समझिए कि कोई सिकल सेल रोग से लड़ रहा है। यह कोई मामूली बीमारी नहीं, यह एक ऐसी चुप्पी में पलती त्रासदी है, जो न केवल शरीर को तोड़ती है, बल्कि आत्मा को भी घायल करती है। यही वजह है कि हर साल 19 जून को विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस केवल एक तारीख़ नहीं, बल्कि एक पुकार है — उस समाज से जो आज भी इस बीमारी को नज़रअंदाज़ कर रहा है, उस शासन से जो वादे तो करता है पर ज़मीनी हकीकत से कोसों दूर है, और उन लाखों चेहरों से, जो दिन-रात इस अदृश्य संघर्ष में अपने अस्तित्व को बचाए रखने की जद्दोजहद में लगे हैं।

सिकल सेल रोग एक अनुवांशिक रक्त विकार है, जो हीमोग्लोबिन जीन में उत्परिवर्तन के कारण होता है। सामान्य लाल रक्त कोशिकाएं गोल और लचीली होती हैं, जो रक्त वाहिकाओं में आसानी से ऑक्सीजन पहुंचाती हैं। लेकिन सिकल सेल रोग में ये कोशिकाएं कठोर और हंसिया (सिकल) जैसी हो जाती हैं। ये टेढ़ी-मेढ़ी कोशिकाएं रक्त वाहिकाओं में फंस जाती हैं, जिससे रक्त प्रवाह बाधित होता है। इसका परिणाम होता है असहनीय दर्द, जिसे 'सिकल सेल क्राइसिस' कहते हैं, साथ ही अंगों को नुकसान, बार-बार संक्रमण, एनीमिया, और गंभीर मामलों में समयपूर्व मृत्यु। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, विश्व भर में हर साल लगभग 3 लाख बच्चे सिकल सेल रोग के साथ जन्म लेते हैं, और इनमें से अधिकांश मामले उप-सहारा अफ्रीका, भारत, और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में देखे जाते हैं। भारत में यह रोग विशेष रूप से मध्य और दक्षिणी राज्यों के जनजातीय समुदायों में प्रचलित है, जहां लाखों लोग इस रोग से प्रभावित हैं।

भारत में सिकल सेल रोग का प्रसार चिंताजनक है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के आंकड़ों के अनुसार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, झारखंड, और गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में 10-20% आबादी सिकल सेल जीन की वाहक है। इनमें से कई लोग बिना जानकारी के इस रोग को अगली पीढ़ी तक ले जाते हैं। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश के आदिवासी बेल्ट में हर साल हजारों बच्चे इस रोग के साथ जन्म लेते हैं। इन क्षेत्रों में गरीबी, शिक्षा की कमी, और चिकित्सा सुविधाओं का अभाव इस बीमारी को और घातक बनाता है। एक अध्ययन के अनुसार, भारत में सिकल सेल रोग से पीड़ित 50% बच्चे 5 साल की उम्र तक जीवित नहीं रह पाते, अगर समय पर इलाज न मिले। यह आंकड़ा न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि यह समाज और सरकार की उदासीनता पर सवाल भी उठाता है।

सिकल सेल रोग की रोकथाम का सबसे प्रभावी तरीका है जागरूकता और समय पर जांच। विवाह से पहले जीन टेस्टिंग, गर्भावस्था के दौरान स्क्रीनिंग, और नवजात शिशुओं में डायग्नोसिस इस रोग को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। लेकिन भारत जैसे देश में, जहां स्वास्थ्य सेवाएं अभी भी ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में अपर्याप्त हैं, यह एक बड़ी चुनौती है। सामाजिक कलंक भी इस रोग से लड़ने में बाधा डालता है। कई समुदायों में सिकल सेल रोग को 'अभिशाप' या 'किसी पाप का फल' मान लिया जाता है, जिसके कारण रोगी और उनके परिवार सामाजिक बहिष्कार का शिकार होते हैं। यह अंधविश्वास और अज्ञानता ही इस बीमारी को और खतरनाक बनाती है।

भारत सरकार ने इस दिशा में कुछ प्रयास किए हैं। 2023 में शुरू किया गया राष्ट्रीय सिकल सेल उन्मूलन मिशन 2047 तक इस रोग को समाप्त करने का लक्ष्य रखता है। इसके तहत 17 राज्यों में मुफ्त जांच, परामर्श, और उपचार सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में सिकल सेल स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, और डिजिटल हेल्थ कार्ड के माध्यम से रोगियों की निगरानी की जा रही है। लेकिन ये प्रयास अभी भी प्रारंभिक चरण में हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्रों की कमी, प्रशिक्षित चिकित्सकों की अनुपलब्धता, और दवाओं की अपर्याप्त आपूर्ति जैसे मुद्दे इस मिशन की सफलता में रोड़ा बने हुए हैं। उदाहरण के लिए, हाइड्रॉक्सीयूरिया जैसी दवा, जो सिकल सेल रोग के लक्षणों को कम करने में प्रभावी है, कई क्षेत्रों में आसानी से उपलब्ध नहीं है।

सिकल सेल रोग केवल एक चिकित्सकीय समस्या नहीं है, यह एक सामाजिक और आर्थिक चुनौती भी है। इस रोग से पीड़ित लोग अक्सर बार-बार अस्पताल में भर्ती होने के कारण अपनी शिक्षा और रोजगार के अवसर खो देते हैं। एक अनुमान के अनुसार, भारत में सिकल सेल रोग के कारण होने वाला आर्थिक नुकसान सालाना अरबों रुपये तक पहुंचता है। इसके अलावा, रोगी और उनके परिवारों को मानसिक तनाव और सामाजिक भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। कई मामलों में, सिकल सेल रोग से पीड़ित लोगों को शादी के प्रस्तावों में अस्वीकार कर दिया जाता है, या उन्हें नौकरी में अवसर नहीं मिलते। यह सामाजिक बहिष्कार न केवल रोगी के आत्मविश्वास को तोड़ता है, बल्कि उनके परिवार को भी आर्थिक और भावनात्मक रूप से कमजोर करता है।

19 जून का विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि इस रोग से लड़ाई केवल अस्पतालों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। समाज को इस बीमारी के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत है। स्कूलों में बच्चों को सिकल सेल रोग के बारे में शिक्षित करना, समुदायों में जागरूकता अभियान चलाना, और स्थानीय नेताओं को इस मुद्दे पर सक्रिय करना जरूरी है। गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और सामुदायिक समूह भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उदाहरण के लिए, छत्तीसगढ़ में कुछ स्थानीय संगठनों ने सिकल सेल रोगियों के लिए मुफ्त परामर्श और दवा वितरण के कार्यक्रम शुरू किए हैं, जो सराहनीय हैं।

सबसे महत्वपूर्ण है रोगियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण। सिकल सेल रोग से पीड़ित व्यक्ति को केवल एक मरीज के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उनके पास भी सपने हैं, इच्छाएं हैं, और एक बेहतर जीवन जीने का हक है। हमें उनकी कहानियों को सुनना होगा, उनके दर्द को समझना होगा, और उनके साथ खड़े होना होगा। एक सिकल सेल रोगी ने एक साक्षात्कार में कहा था, ₹मैं हर दिन दर्द से लड़ता हूं, लेकिन सबसे ज्यादा दुख तब होता है, जब लोग मुझे कमजोर समझते हैं।₹ यह भावना हर उस व्यक्ति की है, जो इस रोग से जूझ रहा है। हमें उनकी कमजोरी नहीं, उनकी ताकत को देखना होगा।

19 जून का यह दिन केवल एक जागरूकता दिवस नहीं है, यह एक संकल्प है — एक ऐसा संकल्प जो हमें यह याद दिलाता है कि हर बच्चा, हर व्यक्ति, जो इस रोग से लड़ रहा है, अकेला नहीं है। हमें उनके लिए आवाज उठानी होगी, उनके लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मांगनी होंगी, और उनके लिए एक ऐसा समाज बनाना होगा, जहां उन्हें बराबरी का दर्जा मिले। क्योंकि जब एक बच्चा दर्द में भी मुस्कराता है, वह हमसे कुछ नहीं मांगता — बस इतना चाहता है कि अगली बार जब वह गिरे, तो कोई उसका हाथ थामे। हम वह हाथ बनें। यह विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस की सच्ची पुकार है, और इसे सुनना हमारी जिम्मेदारी है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कूटनीति की हिमगंगा: कनानास्किस में पिघली तकरार की बर्फ

बर्फीली चोटियों और वैश्विक कूटनीति की गर्माहट से सजा कनाडा का कनानास्किस, उस ऐतिहासिक पल का गवाह बना, जब भारत और कनाडा ने अपने तनावग्रस्त रिश्तों को नई उड़ान देने का संकल्प लिया। यह मुलाकात, जो जी-7 शिखर सम्मेलन की पृष्ठभूमि में हुई, न केवल दो देशों के बीच विश्वास की पुनर्स्थापना का प्रतीक है, बल्कि वैश्विक मंच पर एक साहसी कूटनीतिक जीत भी है। बीते सालों में खालिस्तानी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद दोनों देशों के बीच उपजा गहरा अविश्वास, राजनयिक निष्कासन और तीखे बयानों की आंधी में फंस गया था। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कनाडा के नए प्रधानमंत्री मार्क कार्नी की इस मुलाकात ने बर्फ को पिघलाकर एक नई शुरुआत की नींव रखी। दोनों देशों ने एक-दूसरे की राजधानियों में उच्चायुक्तों की नियुक्ति पर सहमति जताई, जो केवल एक कदम नहीं, बल्कि आपसी सम्मान, सहयोग और साझा भविष्य की ओर एक छलांग है।

यह निर्णय उस समय आया, जब भारत-कनाडा संबंध अपने निम्नतम बिंदु पर थे। 2023 में निज्जर की हत्या के बाद तत्कालीन कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भारत पर गंभीर आरोप लगाए, जिन्हें भारत ने सिरे से खारिज कर दिया। इसने दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संकट को जन्म दिया—राजनयिकों का निष्कासन, उच्चायुक्तों की वापसी, और संवाद का लगभग ठप होना। भारत ने निज्जर को आतंकवादी माना, जबकि कनाडा में कुछ समूह उन्हें सिख समुदाय का नायक मानते थे। इस वैचारिक खाई ने दोनों देशों को एक-दूसरे से दूर कर दिया था। लेकिन मार्क कार्नी, जिन्होंने मई 2025 में कनाडा की कमान संभाली, ने एक नया दृष्टिकोण अपनाया। उनकी आर्थिक दूरदर्शिता और वैश्विक सोच ने भारत को जी-7 में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखा। कार्नी ने न केवल भारत को इस मंच पर आमंत्रित किया, बल्कि बैठक से पहले कहा - प्रधानमंत्री मोदी की मेजबानी करना सम्मान की बात है। भारत की वैश्विक भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह बयान न केवल भारत के भू-राजनीतिक कद को रेखांकित करता है, बल्कि कनाडा की नई सरकार की सकारात्मक सोच को भी दर्शाता है।

विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने इस मुलाकात को "कूटनीति का एक स्वर्णिम अध्याय" घोषित किया, जो दोनों देशों के बीच संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का वादा करता है। नेताओं ने न केवल उच्चायुक्तों की बहाली पर एकमत होकर इतिहास रचा, बल्कि व्यापार, जन-जन के बीच जुड़ाव और अत्याधुनिक तकनीकी सहयोग जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी शुरुआत का संकल्प लिया। यह मुलाकात इसलिए और भी खास है, क्योंकि कनाडा में 18 लाख से अधिक भारतीय मूल के लोग सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु के रूप में दोनों देशों को जोड़ते हैं। 2023 में भारत-कनाडा द्विपक्षीय व्यापार 9.36 बिलियन डॉलर के प्रभावशाली आंकड़े तक पहुंचा, जिसमें भारत का निर्यात 5.56 बिलियन और कनाडा का 3.80 बिलियन डॉलर रहा। इस साझेदारी को नई गति देने के लिए, दोनों पक्षों ने स्वच्छ ऊर्जा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर और महत्वपूर्ण खनिजों जैसे भविष्योन्मुखी क्षेत्रों में सहयोग के नए द्वार खोले। एक प्रमुख नेता ने जोश के साथ कहा, "हम भारत के साथ ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद और AI जैसे वैश्विक मुद्दों पर मिलकर दुनिया के लिए एक मिसाल कायम करने को तैयार हैं।" यह बयान दोनों देशों के साझा सपनों और वैश्विक चुनौतियों से निपटने की अटूट इच्छाशक्ति को दर्शाता है।

इस मुलाकात की सबसे बड़ी उपलब्धि है आपसी विश्वास की पुनर्स्थापना। कार्नी ने निज्जर मामले पर तीखी बयानबाजी से परहेज करते हुए कानूनी प्रक्रिया पर भरोसा जताया, जिससे यह संदेश गया कि उनकी सरकार संवेदनशील मुद्दों को कूटनीति के जरिए हल करने को प्राथमिकता देगी। भारत ने भी इस दृष्टिकोण का स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कार्नी को उनकी चुनावी जीत की बधाई देते हुए कहा - भारत और कनाडा लोकतांत्रिक मूल्यों और आर्थिक संभावना के दो ध्रुव हैं। हमें मिलकर विश्व में लोकतंत्र और मानवता को मजबूत करना है। यह बयान न केवल दोनों देशों के बीच गहरे रिश्ते की पुनरपुष्टि करता है, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की नेतृत्वकारी भूमिका को भी रेखांकित करता है।

हालांकि, यह राह आसान नहीं है। कनाडा में खालिस्तानी समूहों की गतिविधियां और उनकी भारत-विरोधी बयानबाजी अभी भी एक चुनौती है। हाल ही में कनाडा की पील रीजनल पुलिस ने 'प्रोजेक्ट पेलिकन' के तहत एक ड्रग रैकेट का भंडाफो किया, जिसमें खालिस्तानी समर्थकों की संलिप्तता की आशंका जताई गई। यह कार्रवाई, जो मोदी की यात्रा से ठीक पहले हुई, कनाडा की नई सरकार की सख्ती को दर्शाती है। फिर भी, कनाडा में सिख समुदाय के कुछ संगठनों ने जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान मोदी के दौरे का विरोध किया, जो इस बात का संकेत है कि कूटनीतिक सुधार के रास्ते में कुछ बाधाएं अभी बाकी हैं। लेकिन कार्नी का यह बयान कि "कनाडा-भारत संबंध आपसी सम्मान और कानून के शासन पर आधारित होंगे," इन चुनौतियों से निपटने की दिशा में एक मजबूत संकल्प को दर्शाता है।

यह मुलाकात केवल राजनयिक नियुक्तियों तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसी साझेदारी का प्रारंभ है, जो वैश्विक स्थिरता, आर्थिक विकास, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देगी। कनाडा की कंपनियों का भारत में निवेश और भारतीय डायस्पोरा का कनाडा में योगदान इस रिश्ते की रीढ़ हैं। दोनों देशों के बीच स्वच्छ प्रौद्योगिकी, खाद्य सुरक्षा, और आपूर्ति श्रृंखलाओं में सहयोग न केवल उनके नागरिकों के लिए अवसर पैदा करेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में उनकी संयुक्त ताकत को भी प्रदर्शित करेगा। भारत, जो पहले से ही डिजिटल क्रांति और स्वच्छ ऊर्जा में अग्रणी है, और कनाडा, जो अपने नवाचार और प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है, मिलकर 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं।

कनानास्किस की यह मुलाकात विश्व को एक शक्तिशाली संदेश देती है—कूटनीति की ताकत से कोई भी खाई पाटी जा सकती है। यह न केवल भारत और कनाडा के लिए एक नया अध्याय है, बल्कि विश्व मंच पर सहयोग और संवाद की जीत है। जैसे ही दोनों देश अपने उच्चायुक्तों को एक-दूसरे की राजधानियों में भेजने की तैयारी कर रहे हैं, यह केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि विश्वास की नई नींव है। यह क्षण, जब दो लोकतांत्रिक राष्ट्र एक-दूसरे की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं, यह साबित करता है कि अतीत की कड़वाहट को भुलाकर एक साझा भविष्य गढ़ा जा सकता है। भारत और कनाडा, अब एक ऐसी यात्रा पर हैं, जो न केवल उनके रिश्तों को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी, बल्कि विश्व को एकजुटता का नया सबक देगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

उछलते आसन, झुलसते रिश्ते – योग का अधूरा सच, [योग दिवस या सोशल मीडिया शो ?]

हर साल की तरह इस बार भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की आहट सुनाई दे रही है। सूरज की पहली किरण के साथ पार्कों में चटाइयाँ बिछ जाएंगी, लोग सूर्य नमस्कार की मुद्रा में कैमरे के सामने तन जाएंगे, और सोशल मीडिया पर ₹योग से निरोग₹ का शोर मच जाएगा। ₹फिट रहो, हिट रहो₹ के नारे हर दीवार, हर स्क्रीन पर चमकेंगे। इंस्टाग्राम पर योगासन की रील्स, ट्विटर पर ₹योग है तो जीवन है₹ के हैशटैग, और व्हाट्सएप स्टेटस पर ₹स्वस्थ जीवन की कुंजी₹ की बाढ़ आ जाएगी। लेकिन इस चमक-दमक भरे 'योग-तमाशे' में एक सवाल चुपके से खड़ा है, और वो ये कि क्या योग सिर्फ शरीर को मोड़ने-तोड़ने का खेल है, या उससे कहीं गहरा, कहीं ज्यादा ज़रूरी कुछ?

आज हम अनुलोम-विलोम से सांसें तो संवार रहे हैं, लेकिन ज़ुबान की आंधी में रिश्ते उजाड़ रहे हैं। कपालभाति से माथा तो चमक रहा है, पर वाणी की तलवारें कपाल चीरने को तैयार हैं। हम तन को तो लचीला बना रहे हैं, लेकिन मन की अकड़ और शब्दों की उग्रता को कौन सुधारेगा? घर हो, दफ्तर हो, या सोशल मीडिया का रणक्षेत्र – हर जगह शब्दों का ज़हर फैल रहा है। लोग 'वाक्पटुता' की होड़ में एक-दूसरे को नीचा दिखाने में जुटे हैं, लेकिन 'वाक्संयम' कहीं गायब है। टीवी पर नेताओं की जुबानी जंग, सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग की बमबारी, और घरों में छोटी-छोटी बातों पर तीखी तकरार – ये सब क्या दिखाता है? कि हम योग के नाम पर सिर्फ चटाई बिछा रहे हैं, लेकिन उसकी आत्मा को भूल गए हैं।

योग का मतलब सिर्फ आसनों की जादूगरी नहीं है। ये कोई सर्कस नहीं, जहां आप अपनी पीठ को मोड़कर, पैर को सिर तक उठाकर तालियाँ बटोर लें। योग एक जीवनशैली है, एक सोच है, एक क्रांति है – जो तन के साथ-साथ मन और वाणी को भी साधती है। लेकिन हम कहाँ हैं? हम तो बस चटाई पर उछल-कूद कर, इंस्टा पर रील बनाकर और ₹योगा डे सेलिब्रेशन₹ का ढोल पीटकर खुश हो रहे हैं। हम सूर्य नमस्कार तो कर रहे हैं, पर दूसरों की संवेदनाओं को कुचल रहे हैं। हम पश्चिमोत्तानासन में कमर तो झुका रहे हैं, पर ज़ुबान से किसी का दिल तोड़ने में ज़रा भी नहीं हिचक रहे।

आज के दौर में शब्दों की ताकत को भूलना सबसे बड़ी भूल है। शब्द रिश्ते बनाते हैं, और शब्द ही रिश्ते तोड़ते हैं। एक सही शब्द किसी का दिन बना सकता है, और एक गलत शब्द किसी का जीवन उजाड़ सकता है। लेकिन हमारा ध्यान कहाँ है? हम तो बस अपने बाइसेप्स की साइज़ और सिक्स-पैक की चमक में खोए हैं। सोशल मीडिया पर लोग योग के नाम पर अपनी फिटनेस का ढिंढोरा पीट रहे हैं, लेकिन वही लोग एक कमेंट में किसी को ट्रोल करने से नहीं चूकते। नेताजी मंच पर योग की महिमा बखान रहे हैं, लेकिन अगले ही पल विरोधियों पर तीखा तंज कस रहे हैं। ये कैसा योग है, जो शरीर को तो लचीला बनाए, पर मन को कठोर और ज़ुबान को बेलगाम छोड़ दे?

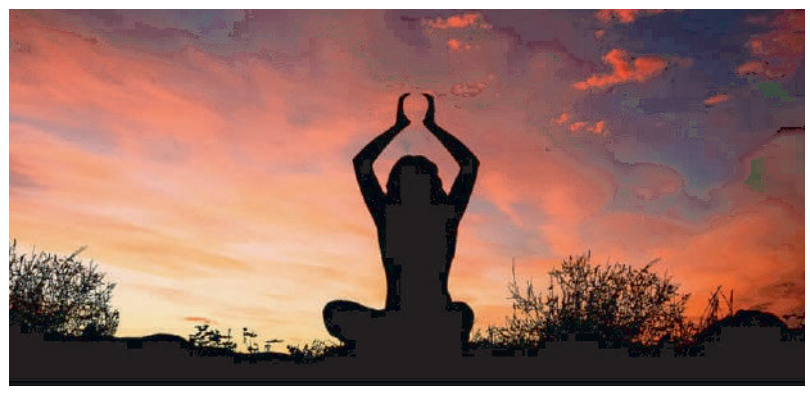

योग का असली मकसद है संतुलन – तन, मन और वाणी का संतुलन। जैसे हर अंग के लिए एक आसन है, वैसे ही हर रिश्ते को जोड़ने के लिए एक सटीक, मधुर शब्द चाहिए। शरीर की चुस्ती तभी सार्थक है, जब ज़ुबान में संयम हो, विचारों में संवेदना हो, और व्यवहार में सौम्यता हो। लेकिन हमारी प्राथमिकताएँ उलट हैं। हम योग स्टूडियो में पसीना बहाने को तो तैयार हैं, पर मन की मैल साफ करने को कोई राज़ी नहीं। हम सूर्य को नमस्कार करने में मशगूल हैं, पर पड़ोसी की भावनाओं को सलाम करने का वक्त नहीं।

इस योग दिवस चटाई से आगे बढ़कर चेतना की ओर कदम बढ़ाएँ। योग को सिर्फ शरीर की कसरत नहीं, बल्कि सोच की सैर बनाएँ। सूर्य नमस्कार के साथ-साथ संवेदनाओं का अभिवादन करें। शब्दों को हथियार नहीं, सेतु बनाएँ – जो दिलों को जोड़े, न कि जख्म दे। एक आसन कम करें, पर एक मीठा शब्द ज़रूर बोलें। क्योंकि तन को साधना आसान है, लेकिन मन और वाणी को संवारना ही असली योग है।

ज़रा सोचिए, अगर हमारी ज़ुबान से निकला हर शब्द किसी को राहत दे, किसी का मन जीत ले, तो क्या हमारा समाज कितना खूबसूरत होगा? अगर हमारी वाणी में मधुरता हो, हमारे विचारों में शांति हो, और हमारे व्यवहार में संयम हो, तो क्या ये सच्चा योग नहीं होगा? योग का मतलब सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य भी है। लेकिन हम इस दिशा में कितना सोचते हैं? हम तो बस चटाई बिछाकर, कुछ देर उछल-कूद करके, और सोशल मीडिया पर ₹योग डे₹ की पोस्ट डालकर अपनी ज़िम्मेदारी पूरी मान लेते हैं।

इस बार, योग दिवस को सिर्फ एक वार्षिक उत्सव न बनने दें। इसे एक मौका बनाएँ – अपने मन को शांत करने का, अपनी ज़ुबान को संयमित करने का, और अपने विचारों को शुद्ध करने का। योग को सिर्फ स्टूडियो या पार्क तक सीमित न रखें, इसे अपने घर, अपने दफ्तर, अपने समाज तक ले जाएँ। जब हमारी वाणी किसी को चोट न पहुँचाए, जब हमारे शब्द रिश्तों को जोड़ें, जब हमारे विचार दूसरों को प्रेरित करें – तभी हम कह सकते हैं कि हमने योग को सही मायनों में अपनाया है।

इस योग दिवस एक नया संकल्प लें। एक आसन कम करें, लेकिन एक अच्छा शब्द ज़रूर जोड़ें। अपनी ज़ुबान को विनम्र, अपने मन को निर्मल, और अपने समाज को संबल बनाएँ। क्योंकि योग सिर्फ चटाई पर नहीं, दिल और दिमाग में बसता है। योग वह नहीं जो शरीर को लचीला बनाए, बल्कि वह है जो मन को उदार और वाणी को अमृत बनाए। यही है शब्दों का योग, यही है सच्चा योग – जो हमें और हमारे आसपास की दुनिया को बेहतर बनाए। तो चलिए, इस योग दिवस, चटाई से उठकर चेतना की ओर बढ़ें, क्योंकि असली योग वही है, जो तन के साथ-साथ समाज को भी साधे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कोचिंग का क्रेडिट, स्कूल की गुमनामी: शिक्षकों के साथ यह अन्याय कब तक?

आज कोचिंग संस्थानों को छात्रों की सफलता का सारा श्रेय मिलता है, जबकि वे शिक्षक गुमनाम रह जाते हैं जिन्होंने वर्षों तक नींव रखी। यह संपादकीय उसी विस्मृति की पीड़ा को उजागर करता है। स्कूल और कॉलेजों में पढ़ाने वाले शिक्षक सिर्फ परीक्षा नहीं, सोच, भाषा और संस्कार गढ़ते हैं। कोचिंग एक पड़ाव है, पर शिक्षकों की तपस्या पूरी यात्रा का आधार। शिक्षा में श्रेय का यह असंतुलन सामाजिक और नैतिक रूप से अन्यायपूर्ण है – और इसे सुधारने की सख्त ज़रूरत है।

डॉ सत्यवान सौरभ

-डॉ. सत्यवान सौरभ, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार, हरियाणा

आज जब भी कोई छात्र NEET, JEE, UPSC या अन्य प्रतियोगी परीक्षा में चयनित होता है, तो मीडिया उसकी सफलता को कोचिंग संस्थान की सफलता के रूप में प्रस्तुत करता है। बधाइयाँ, होर्डिंग्स, विज्ञापन, और सोशल मीडिया पोस्ट्स – सब पर एक ही नाम चमकता है: कोचिंग सेंटर। लेकिन इस पूरे शोरगुल में वह शिक्षक खो जाते हैं, जिन्होंने कभी उस छात्र को पहली बार पेंसिल पकड़ना सिखाया था, जिसने उसे अक्षरों से परिचय कराया था, जिसने उसकी गणना और तर्क की नींव रखी थी। यह वही शिक्षक हैं जो स्कूल और कॉलेजों में वर्षों तक संघर्षरत रहकर बिना किसी विशेष संसाधन के, बच्चों में सोचने की क्षमता और आत्मविश्वास जगाते हैं।

यह लेख इसी अदृश्य, उपेक्षित वर्ग की आवाज़ है।

शिक्षा कभी एक बाज़ार नहीं थी। वह एक संबंध था – गुरु और शिष्य का। लेकिन जब से शिक्षा के क्षेत्र में कोचिंग संस्थानों का वर्चस्व बढ़ा है, तब से यह संबंध एक सेवा और ग्राहक का रूप ले चुका है। छात्र एक उपभोक्ता बन गया है और शिक्षक – एक उत्पाद बेचने वाला। कोचिंग संस्थान अब एक ब्रांड है, जो सफलता बेचता है, और स्कूल का शिक्षक सिर्फ एक सरकारी कर्मचारी, जिसे ना प्रशंसा मिलती है, ना मंच।

शिक्षा में यह असंतुलन क्यों? क्या एक छात्र की सफलता का संपूर्ण श्रेय सिर्फ उस कोचिंग संस्थान को दिया जाना न्यायसंगत है जहाँ वह अंतिम एक या दो वर्षों में गया? और उस स्कूल या कॉलेज की भूमिका क्या शून्य हो जाती है जहाँ उस छात्र ने जीवन के 10-12 वर्ष बिताए?

हमें यह याद रखना होगा कि कोई भी छात्र एकाएक UPSC क्लियर नहीं करता। वह प्रक्रिया कहीं कक्षा-3 की हिंदी की कविता याद करने से शुरू होती है, जब शिक्षक उसकी उच्चारण की भूलें सुधारते हैं। वह गणित के पहले गुणा-भाग से शुरू होती है, जब शिक्षक उसकी उंगलियों की गिनती को गणना में बदलते हैं। ये शिक्षक किसी ब्रांड के बोर्ड तले नहीं पढ़ाते, इनकी कक्षाएँ बिना एयरकंडीशनर की होती हैं, और कभी-कभी बिना पंखे के भी। लेकिन इनके पसीने से ही भविष्य की नींव तैयार होती है।

जब कोई छात्र इंटरव्यू में पूछे जाने पर कहता है कि ₹मेरी सफलता मेरे कोचिंग संस्थान की देन है,₹ तो यह वाक्य सुनकर कहीं किसी गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ा रहा एक शिक्षक चुपचाप मुस्कुरा देता है। वह जानता है कि उसने कुछ तो सही किया होगा, तभी यह छात्र उस जगह तक पहुँच पाया है। लेकिन उस मुस्कान में पीड़ा छिपी होती है, उस चुप्पी में वह सवाल होते हैं जो कोई नहीं पूछता – ₹क्या मेरी कोई भूमिका नहीं थी?₹

कोचिंग संस्थान सफलता का शॉर्टकट दे सकते हैं, लेकिन सोचने की आदत, भाषा की पकड़, सामाजिक चेतना – ये सब स्कूलों में ही पैदा होती है। विद्यालय सिर्फ परीक्षा की तैयारी नहीं कराते, वे व्यक्ति का निर्माण करते हैं।

बाज़ार की भाषा में कहें तो आज शिक्षा एक 'ब्रांडेड सर्विस' बन चुकी है। कोचिंग सेंटर सफलता के ग्राफ के साथ खुद को बेचते हैं, और सफल छात्रों को विज्ञापन की तरह इस्तेमाल करते हैं। यह शोषण का एक नया रूप है, जिसमें मेहनत किसी और की होती है और लाभ किसी और को मिलता है।

विज्ञापनों की भाषा देखिए – "हमारे यहाँ से 72 चयनित!", "AIR-1 हमारे छात्र!", "बिना कोचिंग के असंभव!" – इन दावों में किसी स्कूल का नाम नहीं होता। किसी हिंदी, गणित या विज्ञान शिक्षक की तस्वीर नहीं होती, जिन्होंने छात्रों को अपनी सीमित तन्ख्वाह, खस्ताहाल स्कूल और प्रशासनिक दबावों के बीच तैयार किया।

यहां एक और विडंबना है – जिस छात्र कोचिंग सेंटर में जाकर सफल हुआ, वह खुद एक स्कूल से आया था। उसने कभी कक्षा में बोर होकर या मस्ती करते हुए भी सीखा था। उसके व्यक्तित्व में स्कूल की प्रार्थना, शिक्षक का डांटना, लाइब्रेरी का सन्नाटा और प्रायोगिक कक्षाओं की गंध शामिल होती है। लेकिन सफलता के बाद वह स्कूल के बजाय कोचिंग की ब्रांडिंग करता है।

यह ट्रेंड केवल समाज की विस्मृति को नहीं दर्शाता, यह हमारी प्राथमिकताओं की गिरावट भी दिखाता है।

मूल शिक्षक केवल क्लासरूम तक सीमित कर दिए गए हैं। उनके नाम पर ना कोई स्कॉलरशिप होती है, ना कोई क्रेडिट सिस्टम। वे दिनभर बोर्ड परीक्षा की कॉपियाँ जांचते हैं, चुनाव ड्यूटी निभाते हैं, मिड-डे मील के अंडे गिनते हैं और फिर भी समय निकालकर छात्रों को समझाते हैं – "कृपया अपने नाम के आगे IAS लगाओ तो एक बार स्कूल ज़रूर आना!"

कुछ शिक्षक तो इतने सरल और समर्पित होते हैं कि वे अपने छात्रों की सफलता पर गर्व तो करते हैं, लेकिन उसके सोशल मीडिया पोस्ट में अपना नाम न देखकर भी चुप रहते हैं। वे अपनी भूमिका को ईश्वर के कार्य जैसा मानते हैं – बिना श्रेय की अपेक्षा के, केवल समाजनिर्माण की भावना से।

यह चुप्पी अब तोड़नी होगी।

हमें एक नया सामाजिक अभियान चलाने की आवश्यकता है, जहाँ हर चयनित छात्र अपने स्कूल और वहाँ के शिक्षकों का नाम खुले मंच पर ले। प्रशासन को ऐसे नियम बनाने चाहिए जहाँ छात्रों की सफलता के साथ-साथ विद्यालय और कॉलेज का भी नाम दर्ज किया जाए। मीडिया को भी अपनी रिपोर्टिंग में कोचिंग संस्थानों के साथ-साथ उस छात्र के मूल शैक्षिक संस्थान की जानकारी देनी चाहिए।

कोचिंग संस्थानों को भी नैतिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि वे अपने प्रचार में उस छात्र की संपूर्ण शैक्षिक यात्रा को स्थान दें – केवल अंतिम दो वर्षों को नहीं।

यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो एक दिन आएगा जब हमारे विद्यालय केवल नाममात्र के रह जाएँगे, और शिक्षा केवल एक महंगी सेवा बनकर रह जाएगी।

सच्चा शिक्षक वही होता है जो दीपक की तरह जलता है, ताकि सामने बैठा छात्र उजाले में देख सके। लेकिन दीपक को भी यदि निरंतर नजरअंदाज़ किया जाए, तो अंधकार स्थायी हो सकता है।

यह लेख उन्हीं शिक्षकों को समर्पित है –

जो ब्रांड नहीं हैं, लेकिन ब्रह्मा की भूमिका निभाते हैं।

जो कोचिंग सेंटर नहीं चलाते, लेकिन व्यक्तित्व गढ़ते हैं।

जिनके नाम आज नहीं गूंजते, लेकिन जिनका असर पीढ़ियों तक रहता है।

अब समय आ गया है कि हम शिक्षा की गहराई में उतरें और उसके असली स्थापत्यकारों को पहचानें।

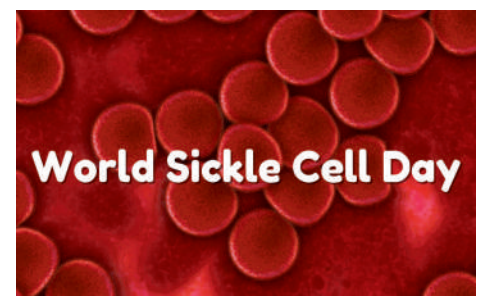

19 जून – विश्व सिकल सेल दिवस विशेष

सिकल सेल रोग बरबस...!

यहीं है एक अंतरराष्ट्रीय जागरूकता दिवस,
वैश्विक जनता को सिकल सेल रोग बरबस।

पहला 19 जून 2009 को आयोजित हुआ!
अभियान से जुड़े सारे संगठन आते हैं साथ,

डॉक्टर से लक्षणों के बारे में पता चलें बात।
यह होता है एक जेनेटिक ब्लड डिसऑर्डर,

लाल रक्त कोशिकाओं को कर देता सरेंडर।
यहीं है एक अंतरराष्ट्रीय जागरूकता दिवस,

वैश्विक जनता को सिकल सेल रोग बरबस।
ऐसे शरीर में आरबीसी की हो जाती है कमी,

शरीर के अंगों में ऑक्सीजन न पहुंच पाती।
समाज में फैली धारणा एवं भेदभाव मिटाना,

ऑटिस्टिक व्यक्ति भी कुशल व सृजनात्मक
होने के साथ समाज के लिए मूल्यवान ही हैं।

(संदर्भ–यह एक जेनेटिक ब्लड डिसऑर्डर है)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

सरायकेला के राजा प्रताप आदित्य ने निर्माणाधीन रथ का किया अवलोकन

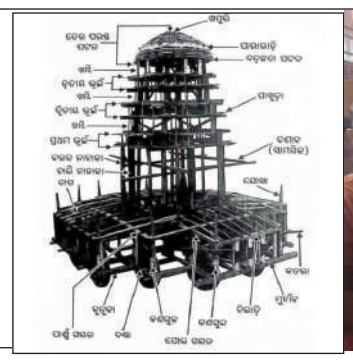

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला। सूर्य क्षेत्र कोणार्क ओडिशा से आये कुशल बढ़ाई (रथ निर्माता कारिगर) समुह द्वारा झारखंड स्थित ओड़िशा का एक पूर्व जिला में विगत अक्षय तृतीया से रथ निर्माण को मूर्त दिया जा रहा है। यह रथ पुरी जगन्नाथ जी के धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप निर्माण कराया जा रहा है ।जिसका अवलोकन राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव ने निर्माणाधीन रथ खलिहान में पहुंच कर की ।

सरायकेला में जगन्नाथ, पुरी का रथ के स्वरूप का ज्यामितीय आरेख यानी Diagram तथा उसके अंग Organ /पुर्जे Parts (लकड़ी) के साहारे अनेक वर्षों बाद हु-ब-हू निर्माण कार्य कराया जा रहा है। जहां रथ के कण कण में देवता आदि को स्थान देने का काम अब यहां जारी है ।

आषाढ़ शुक्ल द्वितीया तिथी के दिन से सरायकेला के बडदांड में जगन्नाथ समेत चतुर्धामुर्ति आकर रथारूढ होगे। रथ के अंग प्रत्यंग मे उनके अधिष्ठाता देवताओं एवं अन्य यथा नाम स्थान विशेष पर आकर अपना स्थान स- समय लेगें ।जगन्नाथ तत्व के धार्मिक आस्था अनुसार इनके स्मरण , दर्शन से इंसान का शरीर , मन को प्रफुल्लित, परिवारिक की भाईचारा अभिवृद्धि एवं हर प्रकार के मनोकामना पूर्ण करने में फलदाई मानी जाती है । बेहद पुण्यदाई ये निर्माणाधीन स्वरूप भी जिस पर वे नव यौवन वेश में दर्शन देने के ठीक बाद दुसरे दिन यानी 26 जून को बैठकर मौसी घर जायेगें । सरायकेला का महत्वपूर्ण राजकीय गुड़िचा मंदिर थाना के समीप पड़ता है जो जगन्नाथ मंदिर का अहम हिस्सा भी होता है ।

इसी निर्माणाधीन रथ का अवलोकन राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव जी ने यहां रथ खलिहान में पहुंचकर की । रथ खलिहान के देवता विश्वकर्मा वंशज माने- जाने वाले मुख्य रथ निर्माता श्री ओझा उन्हे प्रणाम किया । सनद रहे कि झारखंड स्थित इस पूर्व देशी रियासत में राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव उनकी पारंपरिक नीति छेरा पंहरा करेगें । इस अफसर पर गोलक बिहारी पति सरायकेला बार के वरिष्ठ अधिवक्ता सह रथारूढ जगन्नाथ के उपासक एवं जगन्नाथ सेवा समिति के पदाधिकारी व सदस्य गण भी बड़े पैमाने पर जूट रहे है । उल्लेखनीय है कि रथ निर्माण की धनराशि स्थानीय विधायक सह पूर्व मुख्यमंत्री झारखंड चंपाई सोरेन ने प्रदान की है ।

झारखंड में मॉनसून का आगाज, कई जिलों में बारिश आरंभ

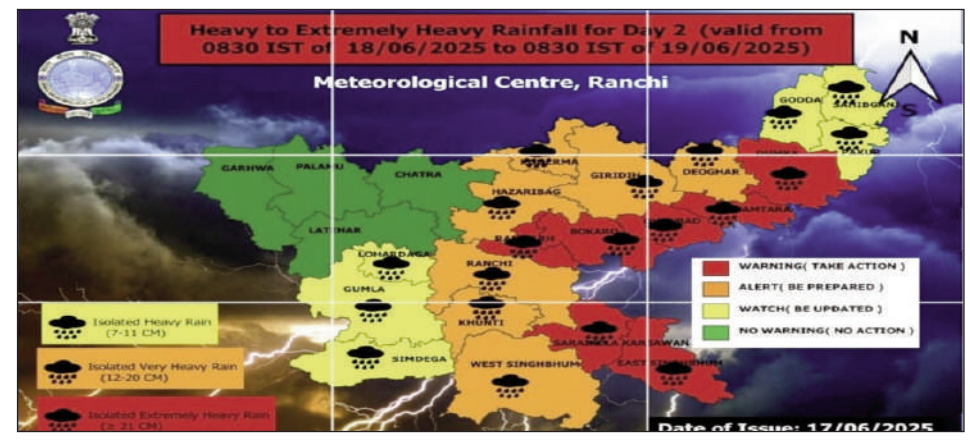

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, भीषण गर्मी के बाद झारखंड में मानसून का शुभारंभ हो चुका है ।राज्य के विभिन्न जिलों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश की संभावना जताई गई है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार 30 जून तक झारखंड के अधिकांश क्षेत्रों में नियमित बारिश जारी रहेगी। इसके साथ ही, बिहार, पश्चिम बंगाल और पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी जल्द ही मॉनसून सक्रिय होने की उम्मीद है, जिससे मौसम में ठंडक आएगी और गर्मी से राहत मिलेगी।

समुचा राज्य के लिए रेड, येलो अलर्ट जारी किया गया है ।गरज, वज्रपात और तेज हवाओं के साथ बारिश की संभावना है ।लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है ।गढ़वा, गुमला, लातेहार, लोहरदगा, पलामू, सिमडेगा, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला - खरसावां, देवघर, गिरिडीह और हजारीबाग जैसे जिलों में बारिश हुई है। तीनों सिंहभूम यानी कोल्हान में दिन के 12 बजे से हल्की वर्षा आरंभ हो गयी ।राजधानी रांची में आज सुबह से बादल छाए हुए हैं और कई क्षेत्रों में हल्की बूंदाबांदी भी देखी गई है। कहीं रेड तो कहीं पर अरेंज ऐलार्ट मौसम विभाग द्वारा अगले दो दिनों तक जारी किये है ।

प्रधानमंत्री 20 को ओडिशा आएंगे, वर्ष 2036 तक ओडिशा के विकास का रोडमैप घोषित किया जाएगा: मनमोहन सामल

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : ओडिशा में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार ने 1 वर्ष तथा यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने 11 वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस संदर्भ में यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हमारा मार्गदर्शन करने के लिए 20 जून को ओडिशा आएंगे। पिछले एक साल में छठी बार ओडिशा के दौरे पर आ रहे और ओडिशा से बेहद प्यार करने वाले प्रधानमंत्री मोदी 20 तारीख को दोपहर 3 बजे भुवनेश्वर एयरपोर्ट पहुंचेंगे। वहां उनका भव्य स्वागत और अभिनंदन किया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष श्री मनमोहन सामल ने कहा कि 2036 तक ओडिशा के विकास का रोडमैप घोषित किया जाएगा। प्रदेश कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में श्री सामल ने कहा कि राज्य सरकार 2036 तक विकसित ओडिशा बनाने के लिए कृतसंकल्पित है। इस संबंध में जोरदार प्रयास शुरू कर दिए गए हैं, जबकि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी इसका पूरा समर्थन कर रहे हैं। ओडिशा के समग्र विकास में मोदी की भूमिका अहम है। उनके नेतृत्व में पिछले एक साल में ओडिशा में राष्ट्रीय स्तर के कई कार्यक्रम और महत्वपूर्ण बैठकें हुई हैं। पुलिस महानिदेशक सम्मेलन से लेकर, नौसेना दिवस, प्रवासी भारतीय दिवस, पुरी में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कार्यक्रम आदि आयोजित किए गए हैं। इसी तरह राज्य में रेलवे, सड़क, विमानन सेवाएं और बुनियादी ढांचे को मजबूत किया गया है। प्रधानमंत्री के दृढ़ निश्चय के कारण आज बड़े-बड़े उद्योगपति ओडिशा में उद्योग लगाने आ रहे हैं। मोदी ने प्रधानमंत्री व्ययबंदना योजना के माध्यम से 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी लोगों को मुफ्त इलाज की सुविधा देकर स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। मोदी की गारंटी ओडिशा की प्रगति है। मोदी ने राज्य और राज्य के लोगों के सामूहिक विकास का संकल्प लिया है।

भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर पहुंचने के बाद यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी पास के बीजू पटनायक चौक से एजी चौक, राजभवन चौक, कलिंग स्टेडियम चौक, जयदेव भवन चौक होते हुए जनता मैदान तक भव्य रोड शो करेंगे। इस अवसर पर तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी और करीब 10 स्थानों पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ प्रधानमंत्री का स्वागत किया जाएगा। सभा स्थल पर पहुंचने के बाद वहां उनका अभिनंदन भी किया जाएगा। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री मोदी ओडिशा विजन-2036 और 2047 पुस्तिका का विमोचन करेंगे (रेल सेवा, ईवी बसें आदि) इसके साथ ही केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों तथा सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी शाम 4.30 बजे जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद मोदी एयरपोर्ट से दिल्ली लौटेंगे, ऐसी जानकारी प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने दी। भुवनेश्वर समेत राज्य के महत्वपूर्ण स्थानों को सजाया जाएगा तथा धन्यवाद मोदी होर्डिंग्स लगाए जाएंगे। लाखों की जनसभा होगी। पूरे राज्य से कार्यकर्ता आएंगे। रोड शो के दौरान आम जनता व कार्यकर्ता सड़क के दोनों ओर खड़े होकर उनका स्वागत करेंगे। राज्य की सभी विधानसभाओं के कार्यकर्ता मोदी की सभा में शामिल होंगे। प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने सभी से इस कार्यक्रम में शामिल होकर इसे सफल बनाने तथा विकसित ओडिशा के निर्माण के ऐतिहासिक क्षण में शामिल होने का आह्वान किया है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पार्टी की ओर से सभी तरह की तैयारियां की गई हैं। प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी, राष्ट्रीय महासचिव श्री सुनील बंसल, प्रदेश प्रभारी श्री विजय पाल सिंह तोमर की उपस्थिति में समीक्षा बैठक हुई। इस अवसर पर प्रदेश प्रवक्ता अनिल शर्मा, प्रदेश प्रवक्ता सुदीप्त रॉय, प्रदेश प्रवक्ता अनिल बिस्वाल एवं प्रदेश मीडिया समन्वयक सुजीत कुमार दास प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

सारंडा में शहीद सुनिल धान के परिजनों को सरकार ने दी 2 करोड 66 लाख सम्मान राशि

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कांके रोड स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में झारखंड जगुआर (एसटीएफ) के शहीद आरक्षी सुनील धान के परिजनों ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने शहीद आरक्षी सुनील धान के परिजनों को सम्मान राशि के रूप में स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, पुलिस सैलरी पैकेज के अंतर्गत निर्गत 1 करोड़ 20 लाख रुपए की वित्तीय सहायता राशि का चेक सौंपा। वहीं गृह विभाग द्वारा 1 करोड़ 46 लाख 26 हजार 972 रुपए की राशि उनके बैंक अकाउंट में क्रेडिट किए गए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार शहीद के परिजनों के साथ सदैव खड़ी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार एक शहीद परिवार की पीड़ा को गहराई से समझती है। झारखंड हमेशा अपने शहीदों का ऋणी रहेगा।। हमारी सरकार शहीद के बलिदान के सम्मान में उनके परिजनों को हरसंभव मदद करती रहेगी।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने शहीद आरक्षी सुनील धान की 65 वर्षीय माता श्रीमती फगनी उराइन, 29 वर्षीय पत्नी श्रीमती गंदरी धान एवं दो पुत्र प्रियांश धान (5 वर्ष) तथा अनिकेत धान (3 वर्ष) सहित अन्य परिजनों ने संवाद कर पारिवारिक स्थिति जायजा लिया । मुख्यमंत्री ने परिजनों से कहा कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करें। उन्होंने शहीद आरक्षी सुनील धान की पत्नी से कहा कि राज्य सरकार के प्रावधान के तहत आप चाहें तो अनुकंपा पर सरकारी नौकरी कर सकती हैं ।

मौके पर मुख्यमंत्री ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि शहीद के परिजनों को मिलने वाले सभी प्रकार का लाभ उन्हें शीघ्र प्रदान किए जाए।

पेंशन सहित अन्य लाभ से परिजनों को जोड़ें। मुख्यमंत्री को अधिकारियों ने अवगत कराया कि पेंशन राशि दिए जाने से संबंधित प्रक्रिया पूरी कर ली गई है।

ज्ञातव्य है कि 12 अप्रैल 2025 को चाईबासा जिला अंतर्गत छोटानागरा थाना क्षेत्र के रातामाटी गांव के घने जंगल में नक्सलियों के विरुद्ध विशेष छापामारी अभियान के दौरान आई.ई.डी. विस्फोट की चपेट में आने से झारखंड जगुआर के एजी० 11 में प्रतिनियुक्त आरक्षी 361 सुनील धान गंभीर रूप से जख्मी हो गए, उन्हें बेहतर चिकित्सा के लिए एयरलिफ्ट कर रांची भेजा गया जहां इलाज के क्रम में 12 अप्रैल 2025 को वे वीरगति को प्राप्त हुए।

मौके पर प्रधान सचिव गृह विभाग श्रीमती वंदना दादेल, डीआईजी झारखंड जगुआर इंद्रजीत महथा, सीनियर डीएसपी झारखंड जगुआर सुनील कुमार रजवार, उप महाप्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक रांची अंचल मनोज कुमार, मुख्य प्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक विकास कुमार पांडे सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023